ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

ज्येष्ठ-आषाढ़ संवत् नानकशाही ५५७ जून 2025 वर्ष १८ अंक १०

होइ बिरकतु बनारसी रहिंदा रामानंदु गुसाईं।

अंम्रितु वेले उठि कै जांदा गंगा न्हावण ताईं।

अगो ही दे जाइ कै लंमा पिआ कबीर तिथाईं।

पैरी टुंबि उठालिआ 'बोलहु राम' सिख समझाई।

जिउ लोहा पारसु छुहे चंदन वासु निंमु महकाई।

पसू परेतहु देव करि पूरे सतिगुर दी वडिआई।

अचरज नो अचरजु मिलै विसमादै विसमादु मिलाई।

झरणा झरदा निझरहु गुरमुखि बाणी अघड़ घड़ाई।

राम कबीरै भेदु न भाई ॥ १५॥

(भाई गुरदास जी, वार १०)

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

ज्येष्ठ–आषाढ़, संवत् नानकशाही 557
वर्ष 18 अंक 10 जून 2025

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
भक्त कबीर जी का जीवन-दर्शन 7
–डॉ. भागीरथीदास
भक्त कबीर जी की बाणी में संदेश व उपदेश 15
–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन
भक्त कबीर जी की बाणी में बाहरी आडंबरों का खंडन 18
–डॉ. मधु बाला
भक्त कबीर जी जीवन-साखियां 22
–महंत गोविन्द दास
भक्त कबीर जी : सामाजिक रूढ़िवादी विचारों एवं पूर्वाग्रहों के उन्मूलक 27
–डॉ. हरीश दास
धर्मांधता के सख्त विरोधी: भक्त कबीर जी 32
–डॉ. शैलेशकुमार डी. वनकर
समाज के पुनरुद्धारक: भक्त कबीर जी 35
–डॉ. जगजीत कौर (दिवंगत)
जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी॥ 41
–सतविंदर सिंघ फूलपुर
सामाजिक चेतना के पुरोधा : भक्त कबीर जी 47
–डॉ. दादूराम शर्मा
भक्त कबीर जी की न्यायपूर्ण समाज की अवधारणा 50
–डॉ सत्येन्द्र पाल सिंघ
सामाजिक उन्नति के अग्रदूत : भक्त कबीर जी 58
–डॉ कशमीर सिंघ नूर
मनुष्य के आत्मिक उत्थान में भक्त कबीर जी का योगदान 62
–डॉ. मनजीत कौर
कबीर पंथियों की वर्तमान सामाजिक स्थिति 67
–डॉ. अभिषेक कुमार
हिंदी साहित्य में उपलब्ध भक्त कबीर जी संबंधी कतिपय प्रमुख आधार-ग्रंथ 72
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
ख़बरनामा 78

गुरबाणी विचार

आसाड़ु भला सूरजु गगनि तपै ॥
धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥
अगनि रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सो किरतु न हारे ॥
रथु फिरै छाइआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे ॥
अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥
नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥८॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०८)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी महाराज तुखारी राग में 'बारह माहा' की इस पावन पउड़ी में आषाढ़ मास के प्राकृतिक वातावरण के चित्रण के माध्यम से प्रभु–नाम से बिछड़ी जीव–स्त्री की दुखदायक स्थिति का वर्णन करते हुए उसे प्रभु-मिलाप की मंज़िल का रास्ता बख़्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि आषाढ़ मास ऐसा समय होता है जब आसमान पर सूर्य अत्यधिक ऊष्मा वितरित करता हुआ तपता है, तब पृथ्वी को दुख सहन् करना पड़ता है। धरती की नमी सूख जाती है और सब तरफ मानो अग्नि ही अग्नि जल रही होती है। गुरु जी फरमान करते हैं कि जब धरती पर अग्नि धधकती है तो उससे वनस्पति का रस सूख जाता है। ऊष्मा की चपेट में आकर प्रत्येक जीव मृतप्राय स्थिति में होता है। फिर भी सूर्य अपना तपने का, ऊष्मा प्रदान करने का कर्म छोड़ता नहीं है। जब सूर्य रूपी रथ चलता है तब दुर्बल जीव छाया का सहारा ढूंढते हैं।

इसी प्रकार जो जीव-स्त्री अवगुणों का बोझ लिए घूमती फिरती है उसे मानसिक ऊष्मा को सहन् करना पड़ता है, चूंकि जीवन–यात्रा में वो जीव–स्त्री अपने सिर पर अवगुणों का बोझ उठाए तृष्णा व घृणा की अग्नि में जल रही होती है। दूसरी ओर मानसिक शीतलता तथा आत्मिक आनंद उस जीव–स्त्री को प्राप्त होता है जो सदैव प्रभु की याद को हृदय में संभाले हुए जीवन–निर्वाह कर रही होती है। जिस जीव–स्त्री को प्रभु ने नाम-सुमिरन वाला मन प्रदान किया होता है उसका जीना और मरना परमात्मा के साथ निभ जाता है अथवा उसका सदा प्रभु के संग नाता जुड़ा रहता है और वो आषाढ़ माह की सूर्य की ऊष्मा के समान तृष्णा आदि अवगुणों की तपिश से बची रहती है।

संपादकीय

मानवता के आलोक-स्तंभ : भक्त कबीर जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी दर्ज है, उनमें भक्त कबीर जी का महत्वपूर्ण स्थान है। भक्त जी का जन्म १३९८ ई. में काशी की धरती पर हुआ। यह वो समय था जब सारा संसार जात-पांत, वर्ण-विभाजन, असमानता की जकड़ में था। चारों ओर कर्मकांडों का बोलबाला था। धर्म केवल कुछ विशेष लोगों के हाथों की कठपुतली बना हुआ था। इतना ही नहीं, साधारण व्यक्ति को तो धार्मिक ग्रंथों का पठन करने और सुनने तक की अनुमति नहीं थी।

भक्त कबीर जी मध्य काल में उभर रही भक्ति लहर के प्रमुख और सत्य-ज्ञान को प्रचारित करने वाले महान संत थे। वास्तव में उक्त समय भक्ति लहर की शुरूआत होने के दो मुख्य कारण सामने आते हैं— पहला, हिंदू धर्म में वर्ण-विभाजन के कारण उत्पन्न हुई घृणित मानसिकता एवं कर्मकांडों का बोलबाला तथा दूसरा, इसलाम के धर्म-सिद्धांतों में आई गिरावट। इसी पृष्ठभूमि में भक्त रामानंद जी के समय से इस लहर की शुरूआत हुई मानी जाती है।

भक्त कबीर जी ने मध्यकालीन भक्ति आंदोलन को अपनी विचारधारा से न केवल एक नई दिशा प्रदान की, बल्कि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज भी बुलंद की। उन्होंने स्वयं को धार्मिक कहने वाले धर्म के ढोंगी ठेकेदारों की तीखी आलोचना की। भक्त जी ने धर्म, समाज, नस्ल, जात-पांत के नाम पर पैदा की जा रही अमानवीय, असामाजिक गतिविधियों का डटकर विरोध किया और समस्त मानव वर्ग को एक समान होने का एहसास कराया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त कबीर जी की बाणी का शबद *"अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥ एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥"* क्रांतिकारी लहर का द्योतक है, जो पूरी दुनिया के लोगों को एक परमात्मा की संतान होने का दम भरता है।

भक्त जी की बाणी में काव्य-शैली उत्तम दर्जे की है। उन्होंने अनेक रूपक, अलंकार, बिंब और प्रतीकों का प्रयोग किया है। उनकी बाणी में व्यंग्य, अलोचना का भाव है और समस्त बाणी पूर्वाग्रहों पर कटाक्ष करती है। उनकी बाणी की भाषा सरल और स्पष्ट है। भक्त कबीर जी की भाषा

को सधुक्कड़ी, खिचड़ी आदि का नाम भी दिया जाता है।

भक्त कबीर जी की बाणी के केंद्रीय भाव की बात करें तो इसमें जहाँ भक्ति का शांत रस व्याप्त है, साथ ही साथ संघर्षी मानव और योद्धा बनने की प्रेरणा भी मिलती है। *"गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ॥ खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ॥"* भक्त कबीर जी समाज और सत्ता के अभिमानी लोगों के विरुद्ध 'गगन दमामा' बजा देते हैं और निरंतर योद्धा बन कर निर्धनों के हक में संघर्ष की बात कर देते हैं। *"सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत॥ पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु॥"* उनका दृष्टिकोण है कि वे 'पुरजा-पुरजा' होकर मरने के लिए तैयार रहते हैं और मैदान रूपी खेत को छोड़ने की कभी प्रेरणा नहीं करते। उनकी दृष्टि में योद्धा वही है जो दीन की रक्षा करता है और धर्म-पथ से कभी विचलित नहीं होता। सिक्ख जगत में शहादतों के आधार में भक्त कबीर जी की बाणी का विशेष योगदान है।

भारत में भक्त कबीर जी के अनुयायियों की बड़ी संख्या है, जिन्हें 'कबीरपंथी' कहते हैं, जो पूरे समाज में फैले हुए हैं। यह भक्त कबीर जी की देन है कि उन्होंने समस्त मानव जाति को एक सूत्र में पिरोने की बात कही है और मानव-समानता की विचारधारा में अपनी भूमिका निभाई है। 'कबीरपथियों' में भक्त कबीर जी को गुरु, सद्गुरु, संत आदि नाम से याद किया जाता है, जबकि सिक्ख पंथ में उन्हें गुणात्मक विशेषण द्वारा 'भक्त' उद्घोषित किया जाता है।

हम 'गुरमत ज्ञान' का यह विशेषांक भक्त कबीर जी के जीवन, बाणी और विचारधारा को समर्पित कर रहे हैं। इस विशेषांक में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों का हम आभार व्यक्त करते हैं, जिनके उल्लेखनीय योगदान द्वारा यह गुलदस्ता रूपी विशेषांक स्मरणीय बन जाएगा, इस बात की हमें पूर्ण आशा है। उम्मीद करते हैं कि पंजाब और पंजाब से बाहर बैठे पाठक वर्ग को इस विशेषांक के माध्यम से भक्त कबीर जी की बाणी, विचारधारा और जीवन-प्रसंग के प्रति भरपूर ज्ञान प्राप्त होगा।

भक्त कबीर जी का जीवन-दर्शन

*–डॉ. भागीरथी दास**

भारतवर्ष महापुरुषों का देश है। समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने यहाँ पर जन्म लेकर मानवता को एक नई दिशा दी है। उन महापुरुषों में भक्त कबीर जी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। भक्त कबीर जी एक ऐतिहासिक महापुरुष हैं। उनके जीवन के विविध आयाम हैं, इसलिए हम उनके जीवन के विषय में किसी निश्चित मत का अभाव पाते हैं। उनके जीवन के साथ अनेक किंवदंती जुड़ी हुई हैं। इसका कारण है कि स्वयं भक्त कबीर जी ने स्वयं अपने जीवन के विषय में कुछ ज्यादा नहीं कहा है। उनके विषय में हमारे पास जो कुछ भी है, उसके आधार पर हम उनके जीवन-दर्शन का खाका खींचते हैं :

१. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त कबीर जी की बाणी।

२. भक्त कबीर जी के समसामयिक संतों— भक्त सैण जी, भक्त पीपा जी, भक्त धन्ना जी, भक्त रविदास जी की बाणी तथा फुटकर उल्लेख हैं।

३. भक्त कबीर जी के बाद होने वाले संत— दादू जी, दरिया, रज्जब गरीबदास आदि की रचनाएं।

४. कबीरपंथी रचनाएं— बीजक, कबीर— कसौटी, कबीर-परिचय, अमर सुख निधान आदि।

५. कुछ ऐसे ग्रंथ, जिनमें संतों एवं भक्तों के चरित्र का वर्णन है— नाभादास कृत भक्तमाल, अनंतदास कृत भक्त कबीर जी की परिचयी, प्रिया दास कृत भक्तमाल की रसबोधिनी टीका तथा राघोदास कृत भक्तमाल हैं।

६. कुछ इतिहास-ग्रंथ हैं, जिनमें भक्त कबीर जी का जिक्र है— अबुफज़ल की आईन-ए-अकबरी, मोहसीन फानी कृत दाबिस्तान-ए-मज़ाहिब।

७. उपर्युक्त ग्रंथों से प्राप्त साक्ष्य के आधार पर भक्त कबीर जी के जीवन-वृत्त का एक खाका तैयार कर सकते हैं।

भक्त कबीर जी की जन्म-तिथि को लेकर अनेक मत हैं, परन्तु इसका निर्धारण कबीर पंथ में प्रचलित निम्नलिखित छंद पर किया जाता है :

बचौदह सौ पचपन साल गये, चंद्रवार एक ठाठ ठये।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरणमासी तिथि प्रगट भये।
घन गरजे दामिनि दमके, बूंदें बरसें झर लाग गये।
लहरताल में कमल खिलें, तहाँ कबीर भानु प्रगट भये॥

(कबीर चरित्रबोध, पृष्ठ ६)

इससे यह स्पष्ट होता है कि ज्येष्ठ पूर्णिमा, संवत् १४५५ को भक्त कबीर जी का प्राकट्य हुआ।

**सिद्धपीठ कबीर चौरा मठ मूलगादी, काशी (वाराणसी, उत्तर प्रदेश) फोन : ९९३६६-१३२६६*

भक्त कबीर जी के जन्म-स्थान को लेकर भी अनेक मत प्रचलित हैं, परन्तु इन मतों का मंथन करने के बाद जो तथ्य निकलकर सामने आता है, वो है काशी और काशी का लहरतारा ताल। भक्त कबीर जी ने इस विषय में स्वयं कहा है :

तू बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना॥
तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८२)

सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ॥
मरती बार मगहरि उठि आइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२६)

'सिवपुरी' का मतलब 'काशी' है। इससे यह तय है कि भक्त कबीर जी का प्राकट्य काशी में हुआ था। जिस लहरतारा ताल में (शिशु) भक्त कबीर जी के पाये जाने की बात है, वर्तमान में आज भी उसका स्वरूप विद्यमान है। लहरतारा में भव्य स्मारक बना हुआ है, जो उनके जन्म-स्थान की प्रमाणिकता को सिद्ध करता है।

भक्त कबीर जी के माता–पिता के सम्बन्ध में अनेक विचारधाराएं प्रचलित हैं। एक मत यह है कि वे विधवा ब्राह्मणी के पुत्र थे। इसके लिए कई अलौकिक कहानियों का सहारा लिया जाता है। कुछ अन्य लोग, जिनमें राम कुमार वर्मा भी शामिल हैं, का मानना है कि भक्त कबीर जी के पिता एक बड़े गोसाईं थे, जिन पर उनकी बहुत आस्था थी। इस मत की पुष्टि के लिए इस पद का सहारा लिया जाता है :

पिता हमारो वड गोसाई॥
तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७६)

वास्तव में इस पद में भक्त कबीर जी जिस पिता की बात कर रहे हैं, वह परमपिता परमात्मा है। इसका सम्बन्ध लौकिक पिता के साथ नहीं है।

कबीरपंथी यह स्वीकार करते हैं कि भक्त कबीर जी काशी के निकट लहरतारा ताल में एक अलौकिक ज्योति के रूप में अवतीर्ण हुए थे। वे किसी और के सुपुत्र नहीं, अपितु उक्त तेज ही शिशु के रूप में सर्वप्रथम नीरू तथा नीमा नामक जुलाहा दम्पति को मिले थे। आज भी नीरू तथा नीमा की समाधि कबीर चौरा मठ, मूलगादी के एक परिसर में स्थित है।

अत: अब तक जो सर्वमान्य तथ्य है, वो यह है कि भक्त कबीर जी नीरू तथा नीमा के पाल्य पुत्र हैं, जिन्हें लहरतारा से लाकर पालन-पोषण किया गया था।

जाति तथा व्यवसाय : भक्त कबीर जी को किसी जाति –वर्ग में बाँधना उनके साथ अन्याय होगा। उन्होंने जाति-बंधन तथा जाति-आधारित कर्म की निरर्थकता को व्यक्त किया है। उन्होंने हिंदू-मुसलमान द्वारा परमात्मा के निवास के प्रति पैदा किए गए भ्रम का खंडन किया है :

अलहु एकु मसीति बसतु है
अवरु मुलखु किसु केरा॥
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा॥. . .
दखन देसि हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा॥
दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर

मुकामा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी का पालन-पोषण जिस परिवार में हो रहा था वह जुलाहा था। इस बात की गवाही भक्त कबीर जी की बाणी में दर्ज है :

कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल॥
कबीर रमईआ कंठि मिलु चूकहि सरब जंजाल॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६८)

हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे॥
तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८२)

जाति जुलाहा मति का धीरु॥
सहजि सहजि गुण रमै कबीरु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२८)

भक्त कबीर जी के लिए यह सब मायने नहीं रखता था। भक्त कबीर जी मूलत: श्रमसाधक संत थे। कपड़ा बुनने को आपने आजीविका का साधन बनाया। भक्त कबीर जी कपड़ा बुनकर बाजार ले जाकर बेच देते थे।

परिवार : भक्त कबीर जी के पारिवारिक जीवन के विषय में अनेक मत प्रचलित हैं। कबीरपंथ की परम्परा में ऐसे अनेक साहित्य हैं, जिसमें उन्हें एक सन्यासी माना गया है। जनश्रुति में प्रचलित है कि उनका विवाह हुआ था— पत्नी लोई ,पुत्र कमाल तथा पुत्री कमाली थी। पत्नी मानने का आधार भक्त कबीर जी की बाणी में आए हुए 'लोई' शब्द से भी लिया जाता है :

सुनि अंधली लोई बेपीरि॥
इन्ह मुंडीअन भजि सरनि कबीर॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७१)

इस पद में आया हुआ 'लोई' शब्द 'लोगों' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ही एक पद ऐसा भी मिलता है जिससे यह मान लिया जाता है कि उनकी दो पत्नियां थीं, जो कि गलत है :

पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी॥
अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी॥१॥
भली सरी मुई मेरी पहिली बरी॥
जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी॥१॥रहाउ॥
कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ॥
लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८३)

इस पद का आध्यात्मिक अर्थ है। पहली तथा दूसरी स्त्री क्रमश: माया तथा भक्ति है। यदि भक्त कबीर जी की कोई पत्नी थी तो, उसके मरने का आनन्द मनाना भक्त कबीर जी जैसे संत को शोभा नहीं देता। अत: पहली 'पत्नी' का अर्थ 'माया की लग्न' मानना उचित होगा। माया के मरने पर ही संत आनन्द मनाते हैं। दूसरी 'पत्नी' का अर्थ 'प्रभु की लग्न' मानना श्रेष्ठ होगा।

गुरु : भक्त कबीर जी के गुरु के विषय में तीन मत प्रचलित हैं— पहला शेखतकी, दूसरा पीताम्बर पीर तथा तीसरा भक्त रामानंद जी। शेखतकी एवं पीताम्बर पीर को गुरु मानने का कोई ठोस आधार

प्राप्त नहीं है, अत: भक्त रामानंद जी को ही उनका गुरु मानना उचित एवं प्रमाणिक है। कबीरपंथी लोग भी भक्त कबीर जी के गुरु के रूप में भक्त रामानंद जी को ही स्वीकार करते हैं।

भक्त नामानंद जी को भक्त कबीर जी का गुरु कहने वाले पहले व्यक्ति भक्त कवि व्यास जी हैं, जिनका जन्म संवत् १५६७ है।

'भक्तमाला' के लेखक नाभादास जी ने भी भक्त रामानंद को ही भक्त कबीर जी का गुरु स्वीकार किया है।

यात्रा : भक्त कबीर जी ने अपने जीवन-काल में तीन प्रमुख यात्रायें की थीं। इन यात्राओं का प्रमाणिक विवेचन गुरचरण सिंघ ज्ञानी ने किया है। उन्होंने भक्त कबीर जी के यात्रा-वृत्तांत का एक नक्शा बनाया है, जिसे आज उनकी यात्रा के प्रमाणिक विवरण के रूप में स्वीकार किया जाता है।

भक्त कबीर जी की पहली यात्रा १४९६ ई. से १५०० ई. के मध्य थी। यह यात्रा चार वर्ष की थी। दूसरी यात्रा दक्षिण की ओर थी। यह यात्रा १५०१ ई. से १५०५ ई. के मध्य थी। तीसरी यात्रा १५०६ से १५०८ ई. के मध्य थी। इस यात्रा में वे ईरान, तुर्की, सीरिया, येरूशलम तक गए।

प्राय: सभी संतों ने यात्राएं की हैं। यात्रा, ज्ञान के प्रसार का माध्यम होती है।

निर्वाण : भक्त कबीर जी अपने अंतिम समय में काशी छोड़कर मगहर चले गए थे। उनका मगहर जाना उस व्यवस्था का विरोध था जो यह घोषित करता था कि काशी में मरने पर मुक्ति होती है। उन्होंने कहा :

जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी॥
हम निरधन जिउ इहु धनु पाइआ मरते फूटि गुमानी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६९)

संवत् १५७५ में माघ सुदी एकादशी के दिन भक्त कबीर जी का देहावसान हुआ। मगहर में उनके अनुयायियों ने उनकी स्मृति में एक तरफ मज़ार बनाया तो दूसरी तरफ समाधि। आज भी उनकी स्मृति में बना हुआ स्मारक मौजूद है। आज भी माघ सुदी एकादशी को ही उनका निर्वाण दिवस मनाया जाता है।

मगहर में भक्त कबीर जी की याद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब द्वारा एक भव्य गुरुद्वारा साहिब का निर्माण किया गया है।

दर्शन : भक्त कबीर जी का दर्शन स्पष्ट है। वह उनकी आत्मा-साधना से उपजा है। वे हमें सचेत करते हुए कहते हैं :

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार॥
जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३५)

आत्म-साधना से उपजा हुआ ज्ञान एकत्व का बोध कराता है।

भक्त कबीर जी के दर्शन की एक विशेषता यह है कि वह सैद्धान्तिक होने के साथ ही साथ व्यवहारिक जीवन-दर्शन भी है। वे व्यवहार में प्रचलित प्रतिमानों के माध्यम से दर्शन की स्थापना

करते हैं। उनका दर्शन सरल, सहज एवं बोधग्राह्य है। संसार तथा इसमें व्याप्त माया-मोह के विषय में वे कहते हैं :

जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं॥
साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं॥१॥
बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह॥
जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह॥१॥ रहाउ॥
नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि॥
काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि॥२॥
करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ॥
कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८२)

गुरु के ज्ञान द्वारा समझ पैदा होती है जिससे जीव माया के प्रभाव से बच जाता है :

देखौ भाई ग्यान की आई आंधी॥
सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३१)

भक्त कबीर जी अपने चिंतन को ब्रह्म-विचार कहते हैं। वे जिस ब्रह्म (परमात्मा) की बात कहते हैं, वह सर्वत्र एवं सब घटों में समाया हुआ है। ज्ञानी लोग इस बात को बाखूबी समझते हैं :

गरभ वास महि कुलु नही जाती॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

अल्पज्ञ लोग उस ब्रह्म को बाहर खोजते हैं। अपने स्वरूप से परे उसका कोई अलग स्वरूप नहीं है। उसे जानने का माध्यम साधना है। साधना के द्वारा जो अनुभूति होती है, वही उसका स्वरूप है। तर्क केवल सापेक्ष चीजों को जानने का साधन हो सकता है। ब्रह्म निरपेक्ष है, इसलिए वह केवल अनुभव का विषय है। अनुभव से यह सिद्ध होता है कि वह सभी में समान रूप से व्याप्त है :

सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा॥
कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८३)

भक्त कबीर जी जिस परमतत्व का कथन कर रहे हैं वह उनका 'निराकार राम' है और निर्गुण है। वे कहते हैं :

कबीर राम कहन महि भेदु है ता महि एकु बिचार॥
सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी का 'राम' सभी घटों में व्याप्त होने के बाद भी निर्गुण है। यद्यपि उसके विषय में कुछ कहना सम्भव नहीं है, तथापि जो कुछ हम कहते हैं वह हमारी सीमित बुद्धि का प्रकटन-मात्र है। हमारे कहने से उसके स्वरूप पर कोई फर्क नहीं पड़ता। मानव बुद्धि उसे अपने तरीके से प्रकट करने का प्रयास करती है।

भक्त कबीर जी के सम्पूर्ण चिंतन का मूल उद्देश्य जीव एवं आत्मा की एकता को स्थापित करना है।

आत्म-तत्व के विचार से दृष्टि व्यापक हो जाती है और भेद मिट जाता है। जीव एवं आत्मा में कोई भेद नहीं है। दोनों एक ही तत्व हैं। जो शुद्ध चैतन्य रूप है वह आत्मा है और वही कर्तापन का भाव

आने से जीव की संज्ञा ग्रहण कर लेता है। सब एक ही हैं, केवल उपाधि-भेद के कारण अलग-अलग प्रतीत होते हैं। भक्त कबीर जी ने जब इस भेद को जाना तो वे पुकार उठे :

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७५)

शरीर रूपी इस कुम्भ में आत्म-तत्व को आबद्ध करने वाला कौन है? वह चेतन-सत्ता (परमात्मा) है। कर्म को भी चेतन-सत्ता ही अस्तित्व में लाती है। भक्त कबीर जी फरमान करते हैं कि जगत में जो कुछ हो रहा है वह स्वाभाविकत: परमात्मा की रज़ा में हो रहा है :

पंच ततु मिलि काइआ कीन्ही ततु कहा ते कीनु रे॥
करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे॥२॥
हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे॥
कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७०)

वस्तुत: आत्मा न तो मनुष्य है न देव। उसका कोई माता-पिता एवं पुत्र आदि नहीं है। न तो वह गृही है न उदासी, न वह राजा है न भिखारी। वह परमात्मा का अंश है और यह उसी प्रकार अमिट है जैसे परमात्मा का अटल वजूद है।

एक ही मिट्टी के सब भांडे हैं। सभी के अंदर परमात्मा व्याप्त है। यह अनुभूति का विषय है। सबके अंदर उस एक ज्योति का दर्शन होने के बाद सारा भेद मिट जाता है। बाहर-भीतर एक हो जाता है। जीवात्म-भाव नष्ट होकर आत्म-भाव में स्थिर हो जाता है। भक्त कबीर जी का फरमान है :

अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी॥
राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६९)

जगत् का अनुभव हमें होता है। यह व्यवहारिक रूप से सत् जान पड़ता है, क्योंकि हमारा सारा कार्य-व्यवहार इसी के अंदर होता है। भक्त कबीर जी ने जगत को असत् माना है। असत् इसलिए कि यह परिवर्तनशील है। जो परिवर्तनशील है, वह सत् नहीं हो सकता। भक्त कबीर जी जगत की वैधता की बात पक्षी के जीवन के समान बता रहे हैं :

रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु॥
बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३७)

संसार भी कुछ ऐसा ही है। व्यवहार रूप से यह सत् भासित होता है, परंतु परमार्थ रूप से असत् हो जाता है।

भक्त कबीर जी दुख-निवृत्ति को मुक्ति मानते हैं। जीव अज्ञानतावश आवागमन का दुख भोगता है। जगत् में माया-मोह आदि बंधनों से साधना द्वारा निर्बन्ध होने से अमरत्व रूपी मुक्ति प्राप्त होती है। दुख-संताप तब तक नहीं छूटते जब तक मन एवं हृदय की अज्ञान-ग्रंथियाँ नहीं छूट जाती। भव-बन्धन का छूट जाना ही मुक्ति है। मन का विकार से रहित होना भव-बन्धनों से मुक्ति के लिए आवश्यक है। भक्त कबीर जी कहते हैं :

रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ॥

चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

विकारों के त्याग से मन शान्त हो जाता है और इस अवस्था में साधक सद्व्यवहार में तल्लीन एवं शुद्ध सात्विक होकर हृदय से निर्वाण पद को प्राप्त करता है। इस अवस्था में आत्मा अपने नित्य मुक्त स्वभाव में प्रतिष्ठित हो जाती है। परमात्मा में एकाकार हो जाना ही मुक्ति है।

भक्त कबीर जी के दर्शन में जीवन-मुक्ति की अवधारणा है। भक्त कबीर जी कहते हैं कि जीवन-मुक्त प्राणी भ्रम एवं संदेहों से रहित होकर, निर्वैर, निष्काम, निर्विषय एवं नि:संग हो जाता है। जीवन-मुक्त होना ही मुक्ति की वास्तविक अवस्था है। जो इस जीवन में मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकते वे मरने के बाद मुक्ति कैसे पायेगें? मुक्ति के लिए प्रचलित नाना प्रकार के ढंग-तरीकों का वे अपने अंदाज में खंडन करते हुए मार्गदर्शन करते हैं :

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु॥१॥
किआ नागे किआ बाधे चाम॥
जब नही चीनसि आतम राम॥१॥ रहाउ॥
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई॥
मुकती भेड न गईआ काई॥२॥
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई॥
खुसरै किउ न परम गति पाई॥३॥
कहु कबीर सुनहु नर भाई॥
राम नाम बिनु किनि गति पाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

यह अटल सच्चाई है कि जब तक शरीर है, तभी तक मुक्त होने की संभावना है। मरने के बाद जो मुक्ति की बात करते हैं वे झूठे हैं।

भक्त कबीर जी जीवन-मुक्ति को बताने के लिए जीवन-मरण का विचार देते हैं। यह अवस्था हमें जीवन के रहते ही मरने का तरीका बताती है। भक्त कबीर जी कहते हैं :

कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ॥
ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५५५)

'जीवित-मृतक प्राणी' सभी प्रकार के प्रपंचों से रहित होकर अपने सभी मनोविकारों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

भक्त कबीर जी मुक्ति के साधन के रूप में ज्ञान, भक्ति एवं कर्म, तीनों को स्वीकार करते हैं। ज्ञान, अज्ञान को दूर कर मुक्ति का अनुभव कराता है। फिर कर्म-मार्ग का द्वार खुलता है। अतएव मन में किसी स्थान विशेष आदि को लेकर भ्रम उत्पन्न नहीं होता।

आत्म-ज्ञान हमारी भटकन को दूर करने में सहायक है। भटकाव का मूल कारण हमारा चंचल मन है। मन की चंचलता के कारण नाना प्रकार की कुप्रवृत्तियां हमारे अंदर आ जाती हैं। उन कुप्रवृत्तियों को ज्ञान के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। ज्ञान अंकुश का काम करता है :

कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुंचरु मय मंतु॥

अंकसु ग्यानु रतनु है खेवटु बिरला संतु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७६)

यह शरीर केले के वन के समान है, जिसमें मदमस्त हाथी के रूप में मन है। उसे रोकने के लिए अंकुश के रूप में ज्ञान है। अज्ञान का अंजन या चश्मा लगाकर सभी इस संसार से मुक्ति पाना चाहते हैं, परंतु मुक्ति का परवाना उन्हें ही प्राप्त होता है, जिन्होंने ज्ञान का अंजन या चश्मा लगाया है। ज्ञान का अंजन लगाने से विषय-वासना से रहित होकर मन शांत हो जाता है :

अंजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु॥
गिआन अंजनु जिह पाइआ ते लोइन परवानु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०३)

ज्ञान का साधन गुरु है। जिसके सिर पर गुरु का ज्ञान है वह मुक्ति का अधिकारी हो जाता है। भवसागर मन का बंधन है और गुरु इस गांठ को खोल देते हैं। फिर मन निर्मल हो जाता है और सर्वत्र हरि नज़र आने लगता है :

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६७)

भक्त कबीर जी भक्ति को मुक्ति का साधन मानते हैं। भक्ति मुक्ति की सीढ़ी है। इस पर वही चढ़ सकता है जो वास्तव में भक्त हो। भक्त होने की कड़ी कसौटी है। जाति-वर्ण को खोकर, चित्त में प्रेम-दया को जो धारण कर लेगा, वही वास्तव में भक्त हो सकता है।

जिसमें किसी प्रकार का अहं नहीं, वही भक्त है। ऐसा भक्त ही भाव की भक्ति कर सकता है। भाव की भक्ति हरि के साथ गठजोड़ है। भक्ति की वह श्रेष्ठ प्रवृत्ति है जिसमें भक्त सर्वत्र परमतत्व का दर्शन करता है। फिर साध्य और साधक का अंतर समाप्त हो जाता है।

कर्म को भी भक्त कबीर जी ने मुक्ति का साधन माना है। कर्म मुक्ति का साधन तभी हो सकता है जब उसे निष्काम भाव से किया जाए। जब कर्म निष्काम हो जाता है तो वह कर्म न होकर करणीय भक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि भक्त कबीर जी का जीवन एवं दर्शन, सहज एवं सरल है। यहाँ हम व्यवहार एवं सिद्धांत का ऐक्य पाते हैं। उनका जीवन-दर्शन अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। भक्त कबीर जी का मानना है कि जब सारा विश्व एक परमतत्व से निर्मित है तो भेद की बात करना उचित नहीं। भेद मानव के द्वारा निर्मित हैं। उस परमतत्व ने हम सबकी सृष्टि एक जैसी की है, इसीलिए भक्त कबीर जी फरमान करते है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी की बाणी में संदेश व उपदेश

*–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन**

भक्त कबीर जी एक महान व क्रांतिकारी समाज सुधारक भक्त हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन काल में, समाज में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों तथा धार्मिक कर्मकाण्डों व पाखंडों के विरुद्ध मुखरता से अपनी आवाज़ बुलंद की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन १५ भक्त साहिबान की बाणी शोभायमान है, उनमें से भक्त कबीर जी का एक प्रमुख व महत्वपूर्ण स्थान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी के १७ रागों में उच्चरित शबद व असटपदियां शोभायमान हैं। इन शबदों व असटपदियों का विवरण निम्नानुसार है :—

सिरी रागु	२	रागुगउड़ी	७४
रागु आसा	३७	रागु गूजरी	२
रागु सोरठि	११	रागु धनासरी	५
रागु तिलंग	१	रागु सूही	५
रागु बिलावलु	१२	रागु गोंड	११
रागु रामकली	१२	रागु मारू	११
रागु केदारा	६	रागु भैरउ	२०
रागु बसंतु	८	रागु सारंग	३
रागु प्रभाती	५	कुल जोड़	२२५

इसके अलावा भक्त कबीर जी द्वारा उच्चरित बाणियां, जैसे कि बावन अखरी (कुल ४५ पद), थिती (कुल १८ पद), सतवार (कुल ८ पद) तथा २३७ सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान हैं। वैसे तो "सलोक भगत कबीर जीउ के" शीर्षकाधीन कुल २४३ सलोक शोभायमान हैं, परंतु इनमें से २३७ सलोक भक्त कबीर जी द्वारा उच्चारण किए गए हैं और ६ सलोक गुरु साहिबान द्वारा उच्चारण किए गए हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है :—

श्री गुरु अमरदास जी — १ (सलोक संख्या २२०)

श्री गुरु अरजन देव जी— ५ (सलोक संख्या २०९, २१०, २११, २१४ व २२१)

जहां कहीं भी विचारधारा की स्पष्टता या विचार-विस्तार की आवश्यकता लगी, वहां गुरु साहिबान द्वारा उच्चारण किए गए सलोक साथ में शोभायमान कर दिए गए हैं।

भक्त कबीर जी के अनुयायियों, जिन्हें हम सम्मान से 'क़बीरपंथी' कहते हैं, द्वारा भक्त कबीर जी की रचनाओं का संग्रह करके 'बीजक' नामक ग्रंथ तैयार किया गया है। अलग-अलग 'बीजक'

* *७६. फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना– १४१०१३, फोन: ९७७९१-२४५००*

ग्रंथों में रचनाओं की संख्या अलग-अलग मिलती है, जिससे यह पता नहीं चल पाता कि किस 'बीजक' ग्रंथ को प्रमाणिक कहा जाए। अत: प्रमाणिकता की दृष्टि से देखा जाए तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भक्त कबीर जी की बाणी प्रमाणिक बाणी है, क्योंकि भक्त कबीर जी की इस बाणी को श्री गुरु नानक देव जी ने अपने काशी (बनारस) दौरे के दौरान स्वयं एकत्रित करके संभाल लिया था।

भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी के द्वारा मानवता को बहुत सारी शिक्षाएं व संदेश दिए, जिनमें से कुछ चुनिंदा संदेश व उपदेश निम्न दिए जा रहे हैं। आशा है कि पाठकजन लाभ उठाएंगे :—

क) भक्त कबीर जी के अनुसार, परमात्मा एक है और वह निर्गुण, निराकार, अगम, अगोचर, अमर, अजर व अपरम्पार है। उसकी महिमा का व्याख्यान नहीं किया जा सकता। वह किसी बंधन में नहीं है। वह माया से निर्लेप है तथा आवागमन के चक्कर से मुक्त है। भक्त कबीर जी ने कभी भी अवतारवाद को मान्यता नहीं दी। आप कहते हैं कि मेरा 'राम' अविनाशी है और हम सब उस अविनाशी अकाल पुरख (परमात्मा) की संतान हैं।

ख) उन दिनों समाज के कुछ लोगों द्वारा समाज को धर्म, जातियों व वर्ण के आधार पर विभाजित किया हुआ था। इस वर्ण-भेद के कारण, समूचे समाज में एक दूसरे के प्रति नफ़रत की भावना बहुत प्रबल हो चुकी थी। भक्त कबीर जी सभी को समझाते हुए कहते हैं कि सभी जीवों का पालनहार एक परमात्मा है, जिसने सृष्टि की साजना करके, सभी को एक जैसा पैदा किया है। तथाकथित धार्मिक लोगों ने इस समाज को जात-पांत, छुआ-छूत, ऊंच-नीच और वर्ण-भेद की दीवारें खड़ी करके विभाजित कर दिया है। भक्त कबीर जी के अनुसार, तथाकथित जात-पांत, छुआ-छूत, ऊंच-नीच और वर्ण-भेद समाज को तोड़ने का काम करते हैं तथा हमें हमारे मार्ग से भटकाते हैं। अध्यात्म का मार्ग इन जात-पांत, छुआ-छूत, ऊंच-नीच और वर्ण-भेद से ऊपर है।

ग) भक्त कबीर जी ने सामाजिक कुरीतियों तथा धार्मिक कर्मकाण्डों व पाखंडों के विरुद्ध मुखरता से आवाज उठाई है। भक्त कबीर जी भक्ति-मार्ग को निर्मल व न्यारा बताते हुए कहा करते थे कि इस मार्ग पर किसी भी धार्मिक कर्मकाण्ड या पाखंड के लिए कोई स्थान नहीं है। भक्त कबीर जी के अनुसार, धार्मिक कर्मकाण्ड व पाखंड, भक्ति-मार्ग में सहायक नहीं होते, अपितु इस मार्ग पर पत्थर बन कर रुकावट डालने का काम करते हैं, इसलिए इन धार्मिक कुरीतियों, वहमों, भ्रमों, कर्मकाण्डों तथा पाखंडों का कोई लाभ नहीं।

भक्त कबीर जी ने यह देखा कि सभी धर्मों के लोग सत्य से कोसों दूर फोकट के धार्मिक कर्मकाण्डों, पाखंडों तथा आडंबरों में फंसे हुए हैं।

भक्त कबीर जी ने सभी को समझाया कि फोकट के धार्मिक कर्मकाण्डों, पाखंडों तथा आडंबरों का त्याग करके, सच्ची-सुच्ची किरत करके, परमात्मा की भजन-बंदगी करते हुए, अच्छे कर्म करके, अध्यात्म के मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। यूं भक्त कबीर जी ने हर प्रकार की धार्मिक कुरीतियों, कर्मकाण्डों, पाखंडों तथा आडंबरों के विरुद्ध मुखरता से अपनी आवाज़ बुलंद की। इसके साथ ही भक्त कबीर जी ने पंडितों/ पुजारियों व मौलवियों के रूप में बने बैठे धर्म के ठेकेदारों का भी विरोध किया। भक्त कबीर जी मानवता को सबसे ऊंचा धर्म मानते थे।

घ) गृहस्थ जीवन की महत्ता पर जोर देते हुए भक्त कबीर जी ने समझाया कि परमात्मा की भक्ति करने के लिए, समाज को छोड़ कर या गृहस्थ का त्याग करके, जंगलों या पर्वतों पर जाकर तपस्या करने की कोई आवश्यकता नहीं, बल्कि गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए, समाज में रह कर परमात्मा की भक्ति करनी सबसे उत्तम कार्य है।

उपरोक्त के अलावा, भक्त कबीर जी ने निम्नलिखित संदेश व उपदेश भी दिए :—

* भक्त कबीर जी ने हमें यह उपदेश दिया कि हमें सेवा, नाम-सुमिरन, नम्रता, अच्छा व्यवहार, संतोष, माता-पिता की सेवा आदि गुणों को अपनाना चाहिए तथा लालच, अहंकार, ठगी, आलस्य, निंदा, कपट आदि विषय-विकारों का त्याग करके उत्तम जीवन जीना चाहिए। भक्त कबीर जी ने साकत (पापी मनुष्य) से दूर रह कर, गुरमुखों की संगत करने की प्रेरणा भी की है।

* भक्त कबीर जी ने गरीबों, वंचितों व असहायों के अधिकारों की रक्षा के लिए, मुखरता से आवाज़ उठाने की प्रेरणा करते हुए, खालिस का मार्ग अपनाते हुए, मरने की सही राह दिखाई।

* भक्त कबीर जी ने परमात्मा पर भरोसा रखते हुए, उसकी रजा (हुक्म) में खुश रह कर, भक्ति-मार्ग पर चलते हुए, कथनी व करनी का अंतर समाप्त करके, परमात्मा की कृपा प्राप्त करने तथा आत्मविश्लेषण करने की प्रेरणा की।

* भक्त कबीर जी ने इस शरीर व संसार को नाशवान बताते हुए, संबंधियों व रिश्तेदारों तथा सांसारिक पदार्थों का मोह त्याग कर, मानस जन्म को सफल करने की प्रेरणा की।

हम सभी को भक्त कबीर जी के उपदेशों व संदेशों से शिक्षा ग्रहण करके, अपना जीवन सफल करने का प्रयत्न करना चाहिए। भक्त कबीर जी की अध्यात्मवाद की विचारधारा को पढ़ कर, विचार कर तथा अपने जीवन में अपना कर ही हम लाभान्वित हो पाएंगे।

भक्त कबीर जी की बाणी में बाहरी आडंबरों का खंडन

*–डॉ. मधु बाला**

भक्ति-काल के संतों में भक्त कबीर जी का विशेष स्थान है। भक्त कबीर जी के दर्शन का आधार अद्वैतवाद है। भक्त कबीर जी के समय से लेकर आज तक भी समाज के अधिकांश भाग में सामाजिक कुरीतियां लगभग ज्यों की त्यों हैं। यदि कहीं उनका रूप परिवर्तित भी हुआ है तो अंशमात्र है। कारण है कि समाज का निर्माण मनुष्य समुदाय से होता है। आज तक विकास की चरम सीमाओं को छू लेने वाले देशों के लोगों की मानसिकता विकसित नहीं हो सकी। कथनी और करनी का पर्याप्त अंतर आज भी इस दूरी को तय नहीं कर सका है। ऐसी स्थिति न केवल भारत में है अपितु विश्व की सभी जातियों एवं देशों में भी विद्यमान है।

भक्त कबीर जी की बाणी में अत्यंत कठोर शब्दों में कर्मकांड पर प्रहार किया गया है, क्योंकि कर्मकांड व्यक्ति को बंधन में बांधते हैं। जो व्यक्ति स्वयं ही स्वयं को बंधनों में बांध लेगा उसकी मुक्ति किस प्रकार से हो सकती है? अपने आप को भगवान का अवतार मानने वाले कुछ कर्मकांडकर्ताओं द्वारा स्वयं को सर्वज्ञ मानकर, समाज को अंधेरे में रखकर, जनता पर शासन करने का मंतव्य रहा है। भक्त कबीर जी ने जिस स्पष्टता, निर्भीकता एवं निडरता से सामाजिक कुरीतियों का खंडन किया है उससे यह सिद्ध होता है कि समाज के बंधनों को तोड़कर मात्र परमात्मा का दर्शन करने की जो उनकी चाह थी उन्होंने उसे अपने जीवन-काल में प्राप्त भी किया तथा भावी पीढ़ियों को भी इसकी प्रेरणा दी। सांसारिक माया व्यक्ति को किसी न किसी भ्रम में भ्रमित करती ही रहती है। कई कुरीतियों का जन्म बहुमत द्वारा होता है

भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी में बाहरी आडंबरों का बहुत ही निर्भीकता एवं तर्कपूर्ण ढंग से खंडन किया है। सरलातिसरल शब्दों में गूढ़ अर्थ को प्रकट करना उनकी अनुभूति की विशेषता है। व्रत रखना, उपवास करना, पशु-बलि आदि का भी उन्होंने विरोध किया है।

—माथे तिलकु हथि माला बानां॥
लोगन रामु खिलउना जानां॥. . .

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५८)

—अंनै बिना न होइ सुकालु॥

* *आई-१०९, गली नं. ५, मजीठिआ इन्कलेव, पटियाला–१४७००५, फोन : ९९१४१-९०७२४*

तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७३)

तोरउ न पाती पूजउ न देवा॥

राम भगति बिनु निहफल सेवा॥

भक्त कबीर जी के अनुसार लोग माथे पर तिलक लगा लेते हैं, हाथ में माला पकड़ लेते हैं। लोगों ने परमात्मा को एक खिलौना समझ रखा है। ऐसे लोग ढोंग करते हैं और भ्रम में रहते हैं कि ऐसे प्रदर्शन से ही प्रभु को प्रसन्न किया जा सकता है। मैं पूजा आदि के लिए पौधों के पत्ते नहीं तोड़ता, न ही देवी-देवता की पूजा करता हूं, अन्न का त्याग करने से सुकाल तो आएगा नहीं, शरीर अवश्य कमजोर हो जाएगा। अन्न का त्याग करने से प्रभु-गोपाल मिल जाएंगे, कोरी कल्पना है। प्रभु-बंदगी के अतिरिक्त मेरे लिए अन्य सभी कर्म व्यर्थ हैं।

सो मुलां जो मन सिउ लरै॥

गुर उपदेसि काल सिउ जुरै॥

काल पुरख का मरदै मानु॥

तिसु मुला कउ सदा सलामु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५९)

भक्त कबीर जी की दृष्टि में वास्तविक मुल्ला वही है जो अपने मन के साथ लड़कर उस पर विजय प्राप्त करता है, गुरु के उपदेश से मृत्यु के भय का सामना करता है। ऐसे मुल्ला को मेरा सदैव नमस्कार है।

काजी सो जु काइआ बीचारै॥

काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६०)

असली काजी वही है जो शरीर खोजता है अर्थात् शरीर में विद्यमान प्रभु-दर्शन करता है और शरीर में प्रभु-ज्योति को प्रज्वलित करता है।

कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए कांइ॥

जो किछु कीआ सो मन कीआ

मूंडा मूंडु अजांइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६९)

सिर मुंड़वा कर दिखावा करने वालों पर व्यंग्य कसते हुए भक्त कबीर जी कहते हैं कि मन को क्यों नहीं मुंड़ाते, सिर ही क्यों मुंड़ाते हो? जो अच्छा या बुरा करता है वह तो मन ही करता है। सिर तो व्यर्थ में ही मूंड़ दिया जाता है।

कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि॥

पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७३)

यह संसार मानों काठ का मकान है, जिसे चारों तरफ से (तृष्णादि की) अग्नि की लपटों ने घेर रखा है। अपनी विद्या का घमंड करने वाले लोग उस पर काबू पा लेने का दिखावा करते हुए उसमें भस्म हो जाते हैं, जबकि विनम्र जीव उस अग्नि से बचने की व्यवस्था करने में सफल हो

जाते हैं। कहने से तात्पर्य है कि ज्ञान का आडंबर करने वाले लोग अभिमान में ही जलकर मर जाते हैं, जबकि अभिमान-रहित लोग अभिमान की अग्नि से स्वयं को बचा लेते हैं ।

कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ॥
बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७३)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य! तू चित्त के संशय को दूर कर! चिंता आदि को भक्ति के प्रवाह में बहा दे! विद्या द्वारा ज्ञानवान बनकर प्रभु के चरणों में मन लगा और बंदगी कर!

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ॥१८४॥
सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ॥
कबीर जा की दिल साबति नही ता कउ कहां खुदाइ॥१८५॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी नमाज-अदायगी के विषय में कहते हैं कि हे मुल्ला! तुम मीनार पर चढ़कर (ऊंची आवाज़ में अल्लाह-अल्लाह पुकार कर) खुदा का स्मरण करते हो, खुदा बहरा नहीं है। उसे भीतर अपने मन में देखो! यदि मन में संतोष नहीं, तो हज करने का भी कोई लाभ नहीं। जिसका मन शांत नहीं है, उसे कहीं भी खुदा की प्राप्ति नहीं हो सकती।

बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा॥
राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०३)

वेद-पुरान पढ़ने-पढ़ाने से तब तक कोई लाभ नहीं यदि उसके मर्म को नहीं जाना। यह तो ऐसे है जैसे गधे की पीठ पर चंदन की लकड़ी का बोझ लदा हो और गधे को चंदन के बारे में पता ही न हो, क्योंकि वह चंदन और अन्य वस्तुओं के बोझ में अंतर करने में असमर्थ है। प्रभु-नाम जपा नहीं, प्रभु को जाना नहीं, तो आत्मिक अवस्था का बन पाना असंभव है अर्थात् भवसागर से पार उतरना कठिन है।

जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई॥
आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०३)

पशु-बलि के विषय में भक्त कबीर जी कहते हैं कि एक तरफ तो मांसाहार का विरोध किया जाता है और दूसरी तरफ पशु-बलि देते हो, ऐसे में बताओ कि धर्म का कर्म कौन-सा है। यदि पशु-बलि देने वाला मानुष श्रेष्ठ है, मुनिवर है तो कसाई को किस श्रेणी में रखा जाए अर्थात्

कसाई को बुरा क्यों कहा जाए?

जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु॥
मनु जीते जगु जीतिआ जां
ते बिखिआ ते होइ उदासु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०३)

जो व्यक्ति जटा रखते हैं, शरीर पर भसम लगाते हैं, गुफा में निवास करते हैं, क्या वे माया-मोह से उपराम हो गए हैं? मन को जीत लेने से ही संसार को जीता जा सकता है, माया से उपराम हुआ जा सकता है।

कबीर भली भई जो भउ परिआ दिसा गईं सभ भूलि॥
ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७३)*

भक्त कबीर जी का फरमान है कि जब मनुष्य के मन में यह भय उतना हो जाए कि प्रभु को भुलाकर जीवन में मात्र ठोकरें ही हैं, तब उसे प्रभु का भय सुमार्ग पर ले आता है, प्रभु के निकट ले आता है, जैसे ओला पिघलकर पुनः पानी हो जाता है और ढल कर नदी के जल में मिल जाता है।

कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ॥
सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७५)*

भक्त कबीर जी की रूहानियत का शिखर देखें! वे कहते हैं कि मैं हज के लिए काबा गया तो वहाँ खुदा मिला। मुझ पर क्रोधित हुआ कि मैंने तो तुझे गाय आदि की कुर्बानी देने के लिए नहीं बोला था। भक्त कबीर जी ने कितने मर्मस्पर्शी ढंग से पशु-बलि का विरोध किया है।

आसनु पवन दूरि करि बवरे॥
छोडि कपटु नित हरि भजु बवरे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५७)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे बावरे योगी! दिखावे के योगाभ्यास आदि का त्याग कर और निष्कपट होकर प्रभु की बंदगी किया कर!

कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०५)*

भक्त कबीर जी के अनुसार प्रभु सदा आनंद-मंगल में रहता है और सभी के साथ समान व्यवहार करता है। वो किसी की उच्च कुल-जाति की परवाह नहीं करता।

भक्त कबीर जी की जीवन-साखियां

*–महंत गोविन्द दास शास्त्री**

भारतवर्ष महापुरुषों का देश है। समय-समय पर यहाँ आकर महापुरुषों ने मनुष्यों को सही जीवन जीने की राह दी। उनका जीवन-आचरण एवं व्यवहार हमारे लिए आदर्श है। जो कुछ उन्होंने अपने जीवन में किया है उसके विवेचन से हम एक उत्तम आदर्श की स्थापना कर सकते हैं। मध्य काल में एक ऐसे ही महापुरुष का अवतरण होता है, जिन्होंने अपने निर्मल ज्ञान एवं व्यवहार से तत्कालीन समाज को अज्ञान की निद्रा से जगाया। उनका नाम है — भक्त कबीर जी। भक्त कबीर जी के जन्म के विषय में एक साखी प्रचलित है।

चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाठ ठये।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरणमासी तिथि प्रगट भये।
घन गरजे दामिनी दमके, बूंदें बरसें झर लाग गए।
लहरताल में कमल खिले, तहां कबीर भानु प्रगट भए॥ *(कबीर चरित्रबोध)*

भक्त कबीर जी का जन्म संवत् १४५५ में ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को हुआ माना गया है। वे नीरू और नीमा नामक दंपति को तालाब किनारे मिले थे। जन्म-स्थान काशी का लहरतारा क्षेत्र है। जनश्रुति के आधार पर, नीरू, नीमा का गौना कराकर नरहरपुरा स्थित अपने घर (वर्तमान कबीर चौरा) को आ रहे थे। रास्ते में नीमा को प्यास लगी तो पानी पीने तालाब के किनारे चली गयी। वहां उसने भक्त कबीर जी को एक शिशु के रूप में पाया। नीमा ने तुरंत उसे गोद में उठा लिया और अपने साथ ले जाने की जिद करने लगी। नीरू ने लोक-लाज का भय दिखाया और कहा कि लोग क्या कहेंगे, मगर नीमा नहीं मानी। अंत में दोनों में सहमति बनी और वे शिशु को घर ले आए।

एक नवब्याहता की गोद में शिशु को देखकर लोगों में हलचल मच गई। कानाफूसी होने लगी, परंतु नीरू और नीमा ने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया। कुछ दिन तक लोग बोलते रहे और बात पुरानी हो गयी। लोगों ने यह स्वीकार कर लिया कि वह नीरू-नीमा का ही शिशु है।

बच्चे का नाम रखने के लिए नीरू ने मुस्लिम धर्म-गुरुओं से संपर्क किया। धर्म-गुरुओं ने नाम रखा—'कबीर'। कबीर अल्लाह के निन्यानवे नामों में से एक है। 'कबीर' का अर्थ होता है—'महान'।

नीरू-नीमा जुलाहे थे। कपड़ा बुनने का कार्य किया करते थे। भक्त कबीर जी भी करघे पर बैठने लगे। धागों का आपस में जुड़कर कपड़े में

* पीठाधीश्वर, प्राचीन संत कबीर प्राकट्य स्थली, लहरतारा, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), फोन : ८१७७०-०००७०

बदल जाना उनको जिज्ञासा से भर देता था। बचपन से ही अध्यात्म की लग्न थी। करघे पर बैठे-बैठे कहीं गुम हो जाते। शरीर का भान नहीं रहता। जिज्ञासा ऐसी थी कि शान्त होने का नाम नहीं ले रही थी। खोज में वे नरहरपुरा से निकलकर गंगाघाट की ओर चले जाते। साधु-संतों के बीच बैठकर ज्ञान-चर्चा करने में उन्हें आनंद आता। किसी ने सुझाव दिया कि अध्यात्म के मार्ग गुरु की आवश्यकता होती है। बिना गुरु के बात नहीं बनेगी। गुरु के अलावा परमात्मा का भेद कोई नहीं बता सकता। क्या सच्चे गुरु का मिलना इतना आसान होता है। गुरु की खोज में भक्त कबीर जी हर जगह गये। वहाँ से उन्हें एक ही जवाब मिलता, जिसके कुल का पता नहीं, उसे शिष्य नहीं बनाते। 'धर्म के अखाड़ों' से उन्हें 'काफिर' कहकर भगा दिया जाता।

बहुत खोजबीन के बाद भक्त कबीर जी को भक्त रामानंद जी का पता चला। उनके बारे में जानकारी लेकर भक्त कबीर जी पंचगंगा घाट स्थित उनके मठ में पहुंच गए। वहाँ के साधुओं ने उनकी वेश-भूषा एवं नाम को सुनकर उन्हें मठ के द्वार से ही भगा दिया, परंतु भक्त कबीर जी ने ठान लिया था कि भक्त रामानंद जी को ही गुरु धारण करना है। एक दिन भक्त कबीर जी पंचगंगा घाट की सीढ़ी पर लेट गए। ब्रह्ममुहूर्त (अमृत बेला) में भक्त रामानंद जी गंगा-स्नान को निकले। जैसे ही आगे बढ़े, उनका पैर सीढ़ियों पर लेटे भक्त कबीर जी के ऊपर पड़ा। भक्त रामानंद जी बोल उठे— "राम-राम-राम कहो बच्चा!" इसे ही गुरुमंत्र मान कर भक्त कबीर जी ने घोषणा कर दी कि भक्त रामानंद जी उनके गुरु हैं। भक्त रामानंद जी को इसकी ख़बर नहीं थी। उन्होंने सुना तो नाराज़ हुए। भक्त कबीर जी को बुलाया गया। घटना की जानकारी लेने के बाद उन्होंने उन्हें गले से लगा लिया। जिसके अंदर गुरु की खोज की लग्न है वही वास्तव में शिष्य है।

भक्त कबीर जी की आध्यात्मिक चेतना उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। लोग सत्संग के लिए आने लगे। भक्त कबीर जी की झोपड़ी सत्संग-प्रेमियों से भर जाती। एक दिन भक्तों ने मिलकर तय किया कि सत्संग के लिए एक अलग जगह पर चबूतरे का निर्माण करना चाहिए। नीरू टीला की बगल में चबूतरे का निर्माण किया गया। आज भी यह चबूतरा मौजूद है। 'कबीर चबूतरा' का नाम ही आज 'कबीर चौरा' हो गया है।

भक्त कबीर जी प्रतिदिन सत्संग करते थे। सत्संग के प्रभाव से लोगों का मन पवित्र होने लगा। लोग व्यसनों से दूर होने लगे। भक्त कबीर जी की झोपड़ी से थोड़ी दूर पर एक वेश्या रहती थी। सत्संग के प्रभाव से उसके पास लोगों का आना-जाना कम होने लगा। अपने धंधे को बंद होता देख वो ईर्ष्या से भर गई। वो सत्संग को बंद कराने का प्रयास करने लगी। एक दिन उसने अपने एक प्रेमी को दुखड़ा बढ़-चढ़ा कर बताया और भक्त कबीर जी की झोपड़ी को जलाने के लिए राजी कर लिया। प्रेमी ने भक्त कबीर जी की

झोपड़ी में आग लगा दी। झोपड़ी जलने लगी। अपनी झोपड़ी को जलता देख भक्त कबीर जी प्रभु-ध्यान में मग्न हो गए। उन्होंने परमात्मा का धन्यवाद किया। भक्त कबीर जी की झोपड़ी जलती हुई देखकर वेश्या खुश होकर नाचने लगी। परंतु, प्रकृति को कुछ और भी मंजूर था। एक चिंगारी हवा में उड़कर गई और वेश्या का घर भी धू-धू कर जलने लगा। वो चिल्लाती हुई कहने लगी कि "यह क्या हो गया? मेरे घर में आग कैसे लग गई?" भक्त कबीर जी ने मुस्कराते हुए कहा—"मेरी झोपड़ी को तेरे 'यार' ने जला दिया और तेरे घर को मेरे 'यार' ने जला दिया।"

इस घटना से भक्त कबीर जी की महिमा चारों ओर फैल गई। यह खबर धीरे-धीरे काशी के राजा वीरदेव सिंह बघेल के कानों में पड़ी। राजा को भी भक्त कबीर जी का दर्शन करने की इच्छा हुई। उसने भक्त कबीर जी को अपने दरबार में आने का निमंत्रण भेजा।

भक्त कबीर जी धर्म के आडम्बरों का विरोध किया करते थे। वे ऐसे पण्डितों एवं मौलवियों, दोनों को फटकराते, जिस कारण वे इनसे नाराज रहते। वे भक्त कबीर जी को किसी न किसी तरीके से नीचा दिखाना चाहते थे, मगर वे सफल नहीं हो पा रहे थे। उन्होंने एक तरकीब निकाली। आस-पास में निमंत्रण के रूप में तुलसीदल बाँट दिया और कहा कि भक्त कबीर जी के घर भण्डारा है, सभी लोग पधारें! नियत तिथि को लोगों की अपार भीड़ आने लगी। लोगों की भीड़ को देखकर भक्त कबीर जी ने पूछा कि "यह सब क्या माजरा है?" लोगों ने कहा कि "आपके घर भण्डारा है।"

भक्त कबीर जी के घर में भण्डारा लायक खाद्य-सामग्री नहीं थी। वे श्रम-साधक संत थे। मेहनत की कमाई करते और रोज़ की कमाई रोज़ ही खर्च हो जाती थी। इतनी भीड़ के लिए भण्डारा का अनाज कहाँ से आता! बढ़ती भीड़ को देखकर भक्त कबीर जी गंगा के उस पार जाकर बैठ गए। घर में आने वाली भीड़ भक्त कबीर जी को खोजने लगी। तभी एक खास वाक्या घटित हुआ। एक सेठ कई गाड़ियों पर खाद्य-सामग्री लेकर पहुँच गया। भोजन बनने लगा। लोग खाकर तृप्त होकर जय-जयकार करने लगे। भक्त कबीर जी जहाँ बैठे थे वहाँ से गुजरने वाले लोगों ने भक्त कबीर जी से कहा, "आप यहाँ क्यों बैठे हो? जाओ, आपके घर भण्डारा चल रहा है।" भक्त कबीर जी को आश्चर्य हुआ। उन्होंने सोचा, चलकर देखें, क्या माजरा है। अपने घर आकर देखा तो सचमुच भण्डारा चल रहा था। लोग खा रहे हैं और उनकी प्रशंसा करते जा रहे हैं। यह दृश्य देखकर भक्त कबीर जी परमात्मा की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे कि यह सब आपकी ही बदौलत हुआ है।

वास्तव में सब करने वाला तो परमात्मा है। इंसान तो एक माध्यम है। यदि जीवन में समर्पण-भाव आ जाए तो फिर कोई कमी नहीं रहती।

इस भण्डारे के बाद काशी में भक्त कबीर जी का नाम प्रसिद्ध हो गया। विरोधियों की ईर्ष्या और बढ़ गई। दल बनाकर वे दिल्ली के बादशाह

सिकंदर लोदी के पास पहुंचे। उन्होंने बादशाह से शिकायत की कि "हजूर! काशी में 'कबीर' नाम का जुलाहा रहता है। वो दीन-धर्म को नहीं मानता है। वो सबको भड़काता है। वो हिंदू-मुसलमान दोनों की भर्त्सना करता हुआ कहता है :

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५४)

बादशाह को गुस्सा आया। उसने कहा कि मैं उसे सजा देने खुद आऊँगा। नियत समय पर सिकंदर लोदी काशी आया और गंगा के किनारे राजघाट पर अपना डेरा डाल दिया। दरबार सज गया। बादशाह ने सिपाहियों को भेजा कि जाकर भक्त कबीर जी को बुला लाओ। सिपाही दौड़े गए और भक्त कबीर जी से कहा कि आपको बादशाह ने बुलाया है। भक्त कबीर जी ने कहा, "तुम लोग चलो, मैं पहुंच जाऊँगा।" अपनी मस्ती में चलते हुए भक्त कबीर जी बादशाह के दरबार में उपस्थित हुए। काजी ने कहा, "बादशाह को सलाम करो!" भक्त कबीर जी ने कहा कि "मैं उसको सलाम करता हूँ जो सभी बादशाहों का बादशाह है। वो सब पर रहम करने वाला परवरदिगार मालिक मौला खुदा है।" भक्त कबीर जी की बात सुनकर काजी एवं बादशाह क्रोधित हो गए। उन्होंने आदेश दिया कि भक्त कबीर जी के हाथ-पैर जंजीर से बांध कर इन्हें गंगा की बीच धारा में फेंक दिया जाए। सिपाहियों ने वैसा ही किया। कुछ समय बाद क्या देखते हैं कि गंगा की धारा में डूबने की बजाए भक्त कबीर जी मृगछाल पर बैठे हुए किनारे पर पहुंच गए। गुरबाणी में फरमान है :

गंग गुसाइनि गहिर गंभीर॥
जंजीर बांधि करि खरे कबीर॥१॥
मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ॥
चरन कमल चितु रहिओ समाइ॥ रहाउ॥
गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर॥
म्रिगछाला पर बैठे कबीर॥२॥
कहि कंबीर कोऊ संग न साथ॥
जल थल राखन है रघुनाथ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६२)

सिकंदर लोदी और क्रोधित हो गया। उसने भक्त कबीर जी को आग में जलाने का आदेश दिया। सिपाहियों ने वैसा ही किया। इस बार भी भक्त कबीर जी बच गए। भक्त कबीर जी का फरमान है :

आपे पावकु आपे पवना॥
जारै खसमु त राखै कवना॥१॥
राम जपत तनु जरि की न जाइ॥
राम नाम चितु रहिआ समाइ॥१॥ रहाउ॥
का को जरै काहि होइ हानि॥
नट वट खेलै सारिगपानि॥२॥
कहु कबीर अखर दुइ भाखि॥
होइगा खसमु त लेइगा राखि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२९)

उन्हें भगवान पर पूर्ण भरोसा था। जिसका भगवान पर भरोसा पूर्ण है, उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। संतों के प्रताप को अज्ञानी

लोग समझ नहीं पाते। सिकंदर लोदी और उसका काजी अज्ञानी थे। बादशाहत का मद था। अपने प्रयासों में असफल होने पर सिकंदर लोदी और भी क्रोधित हो गया। इस बार उसने महावत को आदेश दिया कि भक्त कबीर जी को हाथी से कुचल दो। महावत ने हाथी को अंकुश मार-मार कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, परंतु हाथी टस से मस नहीं हुआ। हाथी उल्टा पीछे की ओर भाग गया। भक्त कबीर जी अपने आप में लीन थे। उनके दोनों हाथ बांध रखे थे :

भुजा बांधि भिला करि डारिओ॥
हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ॥
हसति भागि कै चीसा मारै॥
इआ मूरति कै हउ बलिहारै॥१॥
आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु॥
काजी बकिबो हसती तोरु॥१॥ रहाउ॥
रे महावत तुझु डारउ काटि॥
इसहि तुरावहु घालहु साटि॥
हसति न तोरै धरै धिआनु॥
वा कै रिदै बसै भगवानु॥२॥
किआ अपराधु संत है कीन्हा॥
बांधि पोट कुंचर कउ दीन्हा॥
कुंचरु पोट लै लै नमसकारै॥
बूझी नही काजी अंधिआरै॥३॥
तीनि बार पतीआ भरि लीना॥
मन कठोरु अजहू न पतीना॥
कहि कबीर हमरा गोबिंदु॥
चउथे पद महि जन की जिंदु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७०)

सिकंदर लोदी भक्त कबीर जी के प्रताप के आगे पराजित हो गया। उसने अपनी गलती की क्षमा माँगी। भक्त कबीर जी ने उसे क्षमा कर दिया। सिकंदर लोदी के नत्मस्तक हो जाने से अधिकांश विरोधी भी परास्त हो गए।

उस समय लोग कहा करते थे कि काशी मुक्ति पाने का क्षेत्र है। यहाँ मरने पर मुक्ति मिलती है। आज भी कोई लोग अपने अंतिम समय में यहां चले आते हैं। मगहर के विषय में कहा जाता था कि वहाँ मरने पर गधा का जीवन मिलता है। लोगों के भ्रम को मिटाने के लिए भक्त कबीर जी ने अपनी अंतिम यात्रा के लिए मगहर को चुना।

जो मगहर और काशी का भेद मिटा दे, वही मुक्त है। यदि लोग काशी में रहकर मुक्ति पाएंगे तो प्रभु-भक्ति का कोई मोल नहीं रह जाता। केवल मरना ही मुक्ति नहीं है। कोई स्थान किसी को मुक्ति नहीं दे सकता। व्यक्ति का ज्ञान, कर्म एवं भक्ति उसे मुक्ति दिलाते हैं। आज भी मगहर में भक्त कबीर जी की स्मृति में बनी समाधि एवं मजार तथा गुरुद्वारा साहिब मानव-एकता का संदेश दे रहे हैं।

भक्त कबीर जी : रूढ़िवादिता एवं पूर्वाग्रहों के उन्मूलक

*–डॉ. हरीश दास**

रूढ़ियों एवं पूर्वाग्रहों को ढोने वाला समाज कभी भी बौद्धिक प्रगति नहीं कर सकता। समय-अंतराल में मान्यताएं बदलती रहती हैं। देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार चिंतन करना प्रगति का आधार है। अतएव मान्यताएं लचीली होनी चाहिए। भक्त कबीर जी का समाज के प्रति कुछ ऐसा ही चिंतन था। वे रूढ़िवादी विचारों एवं पूर्वाग्रही मान्यताओं के विरुद्ध सदा लड़ते रहे। वे निष्कपट थे, निडर थे। उनमें अभिव्यक्ति का साहस था। वे सर्वप्रथम ज्ञान हासिल कर मन के शुद्धिकरण का आह्वान करते हैं :

देखौ भाई ग्यान की आई आंधी॥
सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३१)

भक्त कबीर जी के पदों में धार्मिक रूढ़िवाद और उसके विभिन्न आयामों का निदर्शन व्यापक रूप से मिलता है। उन्होंने ऐसी धार्मिक रूढ़ियों के प्रति उपेक्षा का भाव दिखाया और एक ऐसे स्वस्थ समाज की कल्पना की जिसमें धर्म का आडंबर और उसका आतंक ना हो। उन्होंने सर्वप्रथम तथाकथित साधुओं तथा सन्यासियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहा कि साधना के लिए गृह-त्याग आवश्यक नहीं है। गृह-त्याग पलायनवादी दृष्टि है। प्रदर्शन-मात्र हेतु योगी बनकर, कपड़ा रंगकर साधक बनना पाखंडवाद है। योगियों की खबर लेते हुए वे कहते हैं योगी! तुमने परमात्मा में अपना मन नहीं रंगाया। यदि उसमें अपना मन रंगा लिया होता तो इस तरह पाखंड में भटकना नहीं पड़ता। तुम तो विभिन्न प्रकार के धार्मिक ग्रंथों को तोता की तरह रट लिये हो, मगर उसके अनुसार आचरण नहीं करते। भक्त कबीर जी अपनी उदाहरण देते हुए फरमान करते हैं :

ना मै जोग धिआन चितु लाइआ॥
बिनु बैराग न छूटसि माइआ॥१॥
कैसे जीवनु होइ हमारा॥
जब न होइ राम नाम अधारा॥१॥रहाउ॥
कहु कबीर खोजउ असमान॥
राम समान न देखउ आन॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२९)

* *सहायक आचार्य, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना—०५ फोन : ९०२६०-६७८९८*

वे साधनाओं तथा तंत्रवाद के बहुत-से आयामों को सहज साधना के अनुकूल नहीं पाते थे। यही कारण है कि वे सहज साधना को बड़े स्वाभाविक रूप से स्वीकार करते हैं। वे सहज साधना की तुलना दूध बिलोने के संग करते हुए फरमान करते हैं :

हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई॥
सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७८)

इस साधना के लिए न तो भव्य मंदिर की जरूरत है और न ही मस्जिद की। परमात्मा तो मन रूपी मंदिर में है। उसे प्राप्त करने के लिए मन-मंदिर के दरवाजे को खोलने की आवश्यकता है। उसके खुलते ही आत्म साक्षात्कार हो जाता है।

भक्त कबीर जी किसी एक चिंतन-प्रणाली के खूंटे से बंध कर नहीं रहे, अपितु मानवता के विकास में जो कुछ भी प्रभु को भाता जहां से प्राप्त हुआ उसे वे अपनाते रहे। वेद-पाठ, तीर्थ-स्थान, व्रत-उद्यापन, छुआछूत, अवतार उपासना, कर्मकांड इत्यादि जो भी आडंबर था, उसका उन्होंने खुले स्वर में विरोध किया। वे कहते हैं कि जितने दार्शनिक मतवाद हैं उतने ही तरह के पाखंड हैं :

जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना॥
लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना॥१॥...
बेद पुरान सिंम्रिति सभ खोजे कहू न ऊबरना॥
कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७६)

मध्यकालीन धार्मिक रूढ़िवाद हिंदू और मुसलमान दोनों समाज में था। दोनों धार्मिक दृष्टि से पाखंडवाद का शिकार थे। दोनों में सामाजिक दृष्टि से भेदभाव था। मुस्लिम समाज में शिया-सुन्नी का द्वंद्व था, तो हिंदू समाज भी वर्ण-विभाजन के रोग से पीड़ित था। वास्तव में ऐसे लोग परमात्मा से टूटे हुए थे, जिन्हें भक्त कबीर जी ने 'साकत' नाम दिया है और कहा है :

कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि।।
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७१)

भक्त कबीर जी ने धार्मिक रूढ़िवाद की विभिन्न परतों को खोलने में विशेष रुचि दिखाई है। पुरोहितवाद के प्रति विरोध प्रकट करते हुए वे कहते हैं कि इन तथाकथित ब्राह्मणों ने ऐसा भी धंधा फैलाया है कि समाज में कोई स्थान साफ-सुथरा नहीं रह गया। भक्त कबीर जी ऐसे तथाकथित ब्राह्मणु को डांटते हुए कहते हैं :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ।।

तउ आन बाट काहे नही आइआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ।।
जहां बैसि हउ भोजनु खाउ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९५)

तत्कालीन समाज में तीर्थ-स्नान एवं व्रत का बहुत महत्व था। लोगों की गहरी आस्था इनसे जुड़ी हुई थी। लोग मानते थे कि इससे मनुष्य मोक्ष का अधिकारी होता है और उनका यह लोक और परलोक दोनों ही संवर जाता है। भक्त कबीर जी ऐसी रूढ़िवादी-पूर्वाग्रही मान्यताओं के विरोध में खड़े होते हैं और कहते हैं :

तटि तीरथि नही मनु पतीआइ॥
चार अचार रहे उरझाइ॥२॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२५)

छोउहि अंनु करहि पाखंड॥
ना सोहागनि ना ओहि रंड॥...
अंनै बिना न होइ सुकालु॥
तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७३)

ऐसी मान्यता रही है की काशी में मृत्यु प्राप्त करने पर मोक्ष प्राप्त होता है, अत: लोग जीवन के अंत में काशी जाकर मृत्यु की प्रतीक्षा करते थे। इस रूढ़िगत पूर्वाग्रह को तोड़ने के लिए भक्त कबीर जी तीखा विरोध करते हुए कहते हैं कि यदि काशी में मरने से ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है तो प्रभु के स्मरण की क्या आवश्यकता है? इस रूढ़ि को तोड़ने के लिए ही जीवन के अंतिम समय में भक्त कबीर जी मगहर चले गए। उस समय ऐसी मान्यता थी कि मगहर में मृत्यु होने पर नरक मिलता है। भक्त कबीर जी कहते हैं हे भक्तो! यह तो हमारे मन का सब भ्रम है। ईश्वर तो सर्वत्र है। फिर क्या काशी और क्या ऊसर मगहर?

—किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९२)

—जैसा मगहर तैसी कासी हम एकै करि जानी।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६९)

भक्त कबीर जी मुस्लिम रूढ़िवादिता का भी विरोध करते हैं। दूसरी ओर वे परमात्मा को तीर्थ और मूर्ति में न ढूंढ कर मनुष्य के दिल में ढूंढने की सलाह देते हैं :

अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा॥
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी ने मूर्ति-पूजा तथा रूढ़िवाद का जबरदस्त विरोध किया है। वे पत्थर की मूर्ति की पूजा करने के बजाय घर की पत्थर की चक्की की

पूजा करना बेहतर मानते हैं, जिससे दो वक्त का आटा निकाला जा सकता है। वे कहते हैं कि पत्थर की पूजा करने से परमात्मा की प्राप्ति होती है तो मैं उससे भी विशाल पहाड़ की पूजा क्यों न करूं!

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५४)

भक्त कबीर जी धर्म के बाहरी आडंबर को निरर्थक मानते हैं। वे सहज साधना के हिमायती हैं और करनी तथा कथनी को ज्यादा महत्व देते हैं। वे कहते हैं कि कर्म अच्छे करने चाहिए जिससे लोक-परलोक सब सुधर जाता है :

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै।।
जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै।। *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५०)*

धर्म-अभिमान का विरोध करते हुए भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे ब्राह्मण! जिस जनेऊ को तुम बड़े गर्व से पहनते हो और उस पर अभिमान करते हो, वह जिस सूत से बना है, वो सूत हमारे घर पर बहुत है। ऐसी अस्थिर वस्तु पर कैसा अभिमान !

हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे।।
तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८२)

परंपरा के कारण लोग *"जिन्ह मनि होरु मुखि होरु"* वाले व्यक्ति को भी गुरु मान बैठते हैं और उस पर अंधविश्वास कर लेते हैं। पूर्वाग्रह के कारण ऐसे व्यक्ति पर लोग अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार रहते हैं। भक्त कबीर जी ऐसे लोगों को ठगों की श्रेणी में रखते हैं :

गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग॥
गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग॥
ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७६)

धर्म के ठेकेदारों के विषय में भक्त कबीर जी की विशेष दृष्टि है। ऐसे लोगों के प्रति वे किसी प्रकार की कोई सहानुभूति नहीं बरतते, बल्कि बड़ी ही कठोरता के साथ उनके इस पाखंडी और प्रपंची चरित्र का खंडन करते हैं ।

मन का अनियंत्रित होना और ऐसे में माला फेरते हुए जाप-अभ्यास का प्रदर्शन करना धार्मिक रूढ़िवाद का एक बड़ा बाह्याचार है । मन कहीं और, किंतु माला फेरकर यह दिखाने का प्रयास किया जाता है कि धर्मोपासना हो रही है। भक्त कबीर जी इसे महापाखंड मानते हैं और कहते हैं कि फेरना तो मन को चाहिए अर्थात् मन को अनियंत्रित माहौल से निकालकर नियंत्रित करना चाहिए :

माथे तिलकु हथि माला बानां॥

लोगन रामु खिलउना जानां॥
तोरउ न पाती पूजउ न देवा॥
राम भगति बिनु निहफल सेवा॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५८)

मृत्यु के बाद श्राद्ध करने की रूढ़ि भारतीय समाज में प्राचीन काल से चली आ रही है। ऐसा माना जाता है कि पिंडदान और श्राद्ध-कर्म करने से पूर्वजों को परलोक में तृप्ति मिलती है। इस प्रकार मनुष्य अपना भी लोक-परलोक सुरक्षित कर लेता है। भक्त कबीर जी इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि जीवित रहते कोई माता-पिता की सेवा नहीं करता। मरने के बाद उन्हें स्नेह देते हैं और जीवित रहने पर उन्हें परेशान करते हैं। मृत्यु के बाद श्राद्ध कर उनका लोक-परलोक संवारने का उपक्रम करते हैं। भक्त कबीर जी कहते हैं कि मैं तो आश्चर्यचकित होता हूं कि उस श्राद्ध के पिंड को तो कौए खा जाते हैं, बेचारे पितरों को तो उनका पिंड-निवाला मिलता ही नहीं :

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही॥
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही॥
मो कउ कुसलु बतावहु कोई॥
कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३२)*

भक्त कबीर जी का एक विशेष पद है, जिसमें उन्होंने धार्मिक रूढ़िवाद के विभिन्न रूपों का समेकित खंडन किया है :

रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै॥
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै॥
काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै॥
खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८३)*

मध्य काल का अधिसंख्यक समाज रूढ़िवादी मान्यताओं एवं पूर्वाग्रह पर आश्रित था। इस कारण समाज में विविध प्रकार की कुरीतियां, शोषण, अंधविश्वास, धर्मभीरुता, आडंबर एवं परस्पर भेदभाव चरम पर था। भक्त कबीर जी इन बुराइयों के विरुद्ध खड़े हुए और ताउम्र ऐसे विचारों के समाज से उन्मूलन के लिए लड़ते रहे तथा कहते रहे :

अमलु सिरानो लेखा देना॥
आए कठिन दूत जम लेना॥
किआ तै खटिआ कहा गवाइआ॥
चलहु सिताब दीबानि बुलाइआ॥१॥...
कहु कबीर तेई नर भूले॥
खसमु बिसारि माटी संगि रूले॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७९२)

धर्मांधता के सख्त विरोधी : भक्त कबीर जी

*–डॉ. शैलेश कुमार डी. वनकर**

साहित्य के इतिहास में भक्त कबीर जी का नाम विशेष आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। भक्त कबीर जी भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख संत कवि रहे हैं। भक्त कबीर जी स्वभाव से अक्कड़, फक्कड़ और मस्तमौला थे। अपने इसी स्वभाव के चलते उन्होंने जहां कहीं पर ऐब, फरेब, धोखा, लूट और चालाकी देखी उसका उन्होंने खुलकर विरोध किया। इसके लिए उनको किसी का जरा भी डर नहीं था। इतना ही नहीं, कोई क्या कहेगा, उसकी भी उनको परवाह नहीं थी। सत्य के सहारे चलकर, अत्याचार का विरोध करने का एक विशेष आनंद होता है। यही आनंद भक्त कबीर जी के चेहरे पर हमेशा झलकता रहता था। ऐसे में उनको भला किसी का क्या डर होगा! भक्त कबीर जी को न किसी राजा–महाराजा या शहजादा का डर था और न किसी धर्माचार्य का, क्योंकि वे स्वयं सत्य के पथ के राही थे। यही कारण रहा है की भक्त कबीर जी ने जहां पर भी अन्याय या अत्याचार देखा, उसका उन्होंने खुलकर विरोध किया। अपनी बात लोगों के समक्ष रखने में वे कभी नहीं हिचकिचाए, क्योंकि उनकी बात सत्य और साक्ष्य के आधार पर थी।

भक्त कबीर जी ने अपनी वाणी (बाणी) में तत्कालीन समय के शोषित, पीड़ित, दुखी एवं राह-भटके लोगों की संवेदना को उजागर करने का भरसक प्रयास किया है। यही तो दलित चेतना है।

भक्त कबीर जी का जो जीवन-काल था, भारत के इतिहास में यही समय सबसे ज्यादा क्रांति का युग माना गया है। समाज में प्रमुख दो धर्म थे— हिन्दू और मुसलमान। शासक के रूप में मुगल थे। वे प्रजा पर समय-समय पर अमानुषी अत्याचार करते रहते थे। इतना ही नहीं, डंके की चोट पर वे धर्म-परिवर्तन भी कराते रहते थे। हिंदुओं के मंदिरों पर सबसे ज्यादा प्रहार इसी समय किए जा रहे थे। मोहम्मद गजनवी ने गुजरात के सोमनाथ मंदिर को १७ बार लूटा था और खंडित भी किया था। दूसरी ओर देखा जाए तो हिन्दुओं की पराजय का सबसे बड़ा कारण

**एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद (गुजरात), दूरभाष : ९६६२०-७७२३५*
Mail id: dr.vskumar75@gmail.com

उनका वर्ण-विभाजन था। हिंदू समाज में चार प्रमुख वर्ण प्रचलित थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। समाज में ब्राह्मण पढ़ने-पढ़ाने का और मंदिरों में पूजा-अर्चना तथा मंदिरों की रखवाली करने का काम किया करते थे। क्षत्रियों को राज्य की रक्षा करना एवं राज्य चलाने का काम प्रदान किया गया था। वैश्य व्यापार-वाणिज्य का व्यवसाय किया करते थे। शूद्र वर्ग ऊपर के सभी वर्गों की सेवा करने में ही अपना जीवन सार्थक समझता था। इतना ही नहीं, धर्म के ठेकेदारों ने उसे पूर्व जन्म का पाप समझकर यही थमा दिया था।

खैर, समाज में दोनों धर्मों— हिंदू व मुसलमान के लोगों में धर्माचार्यों का बोलबाला था। मुसलमानों में मुल्ला और काजी का दबदबा था। उन्हें अल्लाह के संदेश-संवाहक समझा जाता था। मुस्लिम समाज के लोग राह-भटके हुए थे। हिन्दू धर्म में भी धर्माचार्यों और पंडों का बोलबाला था। स्वर्ग-नरक और पाप-पुण्य के नाम पर वे लोगों को अच्छी तरह से बेवकूफ बनाते थे। राह-भटके लोगों को कैसे स्वर्ग-नरक और पाप-पुण्य का डर दिखाकर लूटना है, वे बड़ी अच्छी तरह से जानते थे। कहा जाता है कि लोगों को लूटने की मनोवैज्ञानिक कला में वे बड़े निपुण थे। कुल मिलाकर समाज में सही मायनों में अगर कोई दुखी था तो वो था— आम नागरिक। इसे सुनने और समझने वाला कोई नहीं था। राजनेता व धर्मनेता, सभी लोग जितना हो सके उतना आम नागरिक का शोषण करने में जुटे हुए थे । ऐसे माहौल में भक्त कबीर जी द्वारा दुखी, पीड़ित, शोषित, राह-भटके लोगों की पीड़ा की जो अभिव्यक्ति की गई है वो उनकी बाणी में लोक-चेतना बनकर उभरी है। स्वतंत्र भारत में धर्मंधता की शिकार लोगों के आज भी कुछेक अंश देखे जा सकते हैं। भक्त कबीर जी के समय में यह विधान चरम पर था। जो रक्षक थे, वही भक्षक थे।

भक्त कबीर जी ने तत्कालीन धर्मांध लोगों का जीवन-चित्रण इस प्रकार किया है :

पंडित जन माते पढ़ि पुरान ॥
जोगी माते जोग धिआन ॥
संनिआसी माते अहंमेव ॥
तपसी माते तप कै भेव ॥१ ॥
सभ मद माते कोऊ न जाग ॥
संग ही चोर घरु मुसन लाग ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९३)

भक्त कबीर जी का किसी से कोई बैर नहीं था। भक्त कबीर जी ने समाज में जहां पर भी अत्याचार और जुल्म होता देखा उसका उन्होंने खुलकर विरोध किया। भक्त कबीर जी जाति-बंधन के घोर विरोधी थे, इसलिए उन्हें जहाँ

मौका मिलता वे इसका विरोध करते रहते थे और डंके की चोट पर किया करते थे। भक्त कबीर जी स्वयं यह मानते थे कि शोषितों के शोषण की मूल जड़ जाति-व्यवस्था ही है। वैज्ञानिक सोच के तहत वे राह-भटके लोगों को समझाते हुए कहते हैं :

गरभ वास महि कुलु नही जाती॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए॥...
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि तत्कालीन समाज में जिस प्रजा का शोषण किया जाता था, वह प्रजा तथाकथित निम्न जाति वर्ग की ही थी और उन दिनों हमारा देश संविधान के आधार पर नहीं, वर्ण-विभाजन की व्यवस्था के आधार पर चलता था। शोषण की सारी जड़ें तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था और जाति-प्रथा में विद्यमान थीं। भक्त कबीर जी इस व्यवथता की जंजीरों को तोड़ते हुए फरमान करते हैं :

उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी॥
सुंन सहज महि बुनत हमारी॥१॥
हमरा झगरा रहा न कोऊ॥
पंडित मुलां छाडे दोऊ॥...
पंडित मुलां जो लिखि दीआ॥
छाडि चले हम कछू न लीआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५८)

भक्त कबीर जी जाति-बंधन से परे आध्यात्मिकता के रंग में रंगे हुए थे। तत्कालीन तथाकथित धर्मागुरुओं को चेताते हुए वे कहते हैं :

सो मुलां जो मन सिउ लरै॥
गुर उपदेसि काल सिउ जुरै॥
काल पुरख का मरदै मानु॥
तिसु मुला कउ सदा सलामु॥...
काजी सो जु काइआ बीचारै॥
काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै॥...
जोगी गोरखु गोरखु करै॥
हिंदू राम नामु उचरै॥
मुसलमान का एकु खुदाइ॥
कबीर का सुआमी रहिआ समाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५९)

भक्त कबीर जी मध्य काल के महान लोक-चेतक बनकर उभरे हैं। उनका जीवन-वृत समाजोत्थान का द्योतक है और धर्मंधता का सख्त विरोधी।

समाज के पुनरुद्धारक : भक्त कबीर जी

*–डॉ. जगजीत कौर (दिवंगत)**

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन ने समूचे भारत की धर्म-साधना-पद्धति में क्रांति उत्पन्न की। यह क्रांति कट्टर ब्राह्मणवाद के विरोध में थी। ब्राह्मणवाद में कट्टरता थी, कर्मकांड की प्रधानता थी। इसमें जातिगत अहंवाद और उच्च वर्ग की श्रेष्ठता एवं तथाकथित निम्नवर्गीय जनमानस के प्रति घृणा, उपेक्षा, प्रताड़ना, अवहेलना एवं लांछना थी। इस निम्नवर्गीय उपेक्षा, भावना ने ही भक्ति आंदोलन की जड़ें मज़बूत कीं। इनके विरोध में ही ऐसा प्रभु-भक्त-वर्ग उठ खड़ा हुआ जिसने पुरोहितवाद की कर्मकांडी साधना, मानव-मानव के बीच वर्ग-भेद, वर्ण-भेद और जाति-भेद को मिटाने का प्रयास करते हुए मानव-मानव के बीच परस्पर प्रेम, सद्भावना एवं एकता का बीजारोपण किया। पंजाब प्रदेश में सामाजिक अन्याय का विरोध जगत-गुरु, पारब्रह्म स्वरूप श्री गुरु नानक साहिब ने किया। उन्होंने अकाल पुरख परम पिता परमात्मा के एकमात्र सत्य स्वरूप की प्रतिष्ठा की, हीन भाव से ग्रसित तथाकथित दलित मानव में आत्म-बल व आत्मविश्वास संचारित किया, कर्मकांडी विधि-विधान के स्थान पर निर्मल चित्त-बुद्धि से प्रेम-स्वरूप परमात्मा की भक्ति प्रेम, विश्वास और सच्चे मन से प्रभु-चरणों से जुड़कर करने का उपदेश दिया, वहम, भ्रम और पाखंड व बाहरी आडंबरों से मुक्त मानव को निश्छल प्रेम सहित प्रभु के साथ जुड़ने का मार्ग दिखाया।

उत्तरी भारत में ऐसा ही भक्त कबीर जी ने किया। भक्त कबीर जी ने ब्राह्मणवादी पाखंडों, आडंबरों का त्याग कर शुद्ध आचरण से निर्गुण प्रभु की उपासना का शंखनाद किया। अपनी उदासियों के दौरान जब श्री गुरु नानक देव जी लगभग २२ वर्ष भारत व भारत के बाहर जहां-जहां प्रचार-प्रसार करते हुए मानवता को सद्मार्ग पर लाते रहे, वहीं उन क्षेत्रों में कार्यरत प्रमुख भक्तों, जो उनकी अपनी विचारधारा वाले थे, के उपदेश, बाणी रूप में एकत्रित करते रहे, पोथी रूप में संभालते रहे और गुरुता प्रदान करते समय वह पोथी द्वितीय गुरुदेव जी को सौंप दी। श्री गुरु अंगद देव जी से तृतीय गुरु श्री गुरु अमरदास जी, फिर चतुर्थ गुरु श्री गुरु रामदास जी और फिर पंचम गुरुदेव श्री गुरु अरजन देव जी के पास बाणी पहुंची, जिसे उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन करते समय गुरु साहिबान की पावन बाणी के साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित

किया। भक्त कबीर जी की बाणी सभी १५ भक्तों की संकलित बाणी में सबसे अधिक मात्रा में है।

जहां तक भक्त कबीर जी के जीवन-वृत्तांत का प्रश्न है, उनके अपने बाणी-साक्ष्य के आधार पर उनका जन्म बनारस (काशी) में हुआ था। प्रसिद्ध इतिहासकार मैकालिफ के अनुसार भक्त कबीर जी का जन्म ज्येष्ठ पूर्णिमा, संवत् १४५५ (सन् १३९८) को काशी में हुआ। जीवन के अंतिम वर्षों में वे मगहर जा बसे थे, जहां उनका देहावसान माघ सुदी ११, संवत् १५७५ (नवंबर, सन् १५१८) को हुआ। एक किंवदंती के अनुसार उनकी माता ने जन्म के समय ही नवजन्मे शिशु को एक तालाब के किनारे छोड़ दिया था, जहां से नीरू और नीमा नामक मुसलमान जुलाहे ने इन्हें उठा लिया। नि:संतान होने के कारण इनका पालन–पोषण उन्होंने 'कबीर' नाम देकर अति प्रेम से किया। भक्त कबीर जी स्वयं को नीच कुला जुलाहा मानते हैं :

— ओछी मति मेरी जाति जुलाहा॥
हरि का नामु लहिओ मै लाहा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५२४)

—कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु॥
बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६४)

समय की प्रथा के अनुसार गुरु धारण करना जरूरी था । भक्त कबीर जी में बाल्य-काल से भक्ति-भावना उग्र रूप में थी । गुरु के बिना ज्ञान नहीं, ऐसा मानते हुए वे गुरु धारण करना चाहते थे।

उस समय भक्त स्वामी रामानंद जी को वे गुरु धारण करना चाहते थे, किंतु जात-पांत का भेदभाव उग्र होने के कारण भक्त रामानंद जी तथाकथित नीच कुला जुलाहे को शिष्य नहीं बना सकते थे। भक्त कबीर जी को एक तरकीब सूझी। भक्त रामानंद जी प्रतिदिन प्रात: गंगा-स्नान को जाया करते थे। भक्त कबीर जी उनके रास्ते में लेट गए। जैसे ही भक्त रामानंद जी के पैर की ठोकर भक्त कबीर जी को लगी, उन्होंने कहा, "उठो प्यारे, राम-राम बोलो!" भक्त कबीर जी झट से उठे और उसी क्षण से राम-नाम (प्रभु-नाम) को जीवन का आधार बना लिया और भक्त रामानंद जी को धर्म-गुरु स्वीकार कर लिया। ताना-बाना बुनते हुए भी केवल राम-नाम को ही हृदय में बसाए रखा। हरि-नाम का सुमिरन करते हुए ब्रह्म तत्व में इस प्रकार चित्त-वृत्ति को तल्लीन कर लिया और तल्लीनता की उस अवस्था को जा पहुंचे कि स्वयं प्रभुमय हो गए :

अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी॥
राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६९)

निर्गुण-निराकार प्रभु की आराधना करते हुए भक्त कबीर जी ने परमात्मा के एक ही परम स्वरूप का परिचय दिया। सभी मानव उसी परम सत्ता से ही उद्भूत हैं। सभी में उसी एक परम सत्ता की ज्योति विराजमान है। ऐसे में मानव-मानव में

द्वंद्व कैसा? छोटे-बड़े का भेदभाव कैसा? परमात्मा के रूप-स्वरूप को लेकर आपस में झगड़े कैसे ? सभी धर्म समान हैं। न हिंदू बड़ा, न तुर्क बड़ा। सभी का इष्ट एक ही है। क्यों न सभी एक साथ प्रेम-भाव से रहें। भक्त कबीर जी ने फरमाया :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥१॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)*

ब्राह्मणवादी लोग पत्थर में भगवान को देखते हैं। भक्त कबीर जी ने इसका खंडन किया। परमात्मा तो जीव की अंतरात्मा में विराजमान है, पत्थर में नहीं। आपने फरमाया :

—ना पाथरु बोलै न किछु देइ॥
फोकट करम निहफल है सेव॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६०)
— पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ॥
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ॥१॥
भूली मालनी है एउ॥
सतिगुरु जागता है देउ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७९)

मुल्ला-मौलवी को समझाया :

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७४)

पंडित-पुरोहित को समझाया कि वेद-पुराण-शास्त्र-अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त विद्वता का तुम अहंकार करते हो उसका क्या लाभ है यदि तुमने अंतर्मन से ऊंच-नीच के भेदभाव को दूर नहीं किया। तुम लोग अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित करने में ही लगे रहे। तुमने स्वयं को साधारण-जन से श्रेष्ठ माना। परमात्मा, जो सबमें रमा है, सच्चे मन से उससे प्यार नहीं किया, उसके मूल तत्व, भेद, गतिविधि को नहीं समझा। ऐसा पांडित्य, विद्वता, अध्ययन तो ऐसा है जैसे कि गधे की पीठ पर चंदन का भार लाद दिया गया हो :

बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा॥
राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०२)

ब्राह्मण सूत का जनेऊ पहन-पहना कर स्वयं को बहुत श्रेष्ठ मानता है। भक्त कबीर जी ने कटाक्ष करते हुए कहा कि वह सूत, जिसे पहन कर तुम गर्व महसूस करते हो, मेरे घर पर जुलाहा-कर्म करने के कारण जगह-जगह फैला पड़ा है :

हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे॥
तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८२)

ब्राह्मण अपनी तथाकथित उच्च जाति पर घमंड

करता है, परंतु किसी विशेष जाति में जन्म लेने मात्र से कोई श्रेष्ठ नहीं हो जाता । महत्त्व तो मानसिक चिंतन का है । शूद्र हो या अन्य निम्न जाति का, जो भी ब्रह्म का चिंतन-मनन, तत्व-ज्ञान का विचार करता है, सदाचारक जीवन-यापन करता है, उसे ही ब्राह्मण कहा जा सकता है :

कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

यही नहीं, काजी-मुसलमान को भी समझाया कि केवल कुरान-कतेब धार्मिक ग्रंथ पढ़ लेने मात्र से सत्य-ज्ञान-परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती । मानव को प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। परमात्मा एक है, जो समूची मानवता का साझा स्वरूप है। भक्त कबीर जी फरमान करते हैं :

काजी तै कवन कतेब बखानी ॥
पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७७)

वस्त्रहीन, नग्न हो जंगलों में फिरते रहने से, घर-गृहस्थी का त्याग कर मारे-मारे फिरते रहने से प्रभु की प्राप्ति नहीं होती। ऐसे तो जंगलों में फिरते रहने वाले जंगली जानवर भेड़ आदि सभी मुक्त होते :

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ।।
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥
जब नही चीनसि आतम राम ॥१ ॥ रहाउ ॥
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥
मुकती भेड न गईआ काई ॥२ ॥
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥
खुसरै किउ न परम गति पाई ॥३ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

श्री गुरु नानक पातशाह ने अपने समय में जैसा देखा था और कहा था कि काज़ी, ब्राह्मण और योगी "तीने ओजाड़े का बंधु" हैं और उन्हें सुधरने की हिदायत दी थी। भक्त कबीर जी ने भी तीनों को सचेत किया और समझाया कि :

हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥
कह करै मुलां कह करै सेख ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५८)

तीनों को समझाया कि लोभ, लालच, लालसा के वशीभूत होकर धन कमाने के साधन बना तत्त्व-ज्ञान को बेच रहे हो, जबकि स्वयं तो तुम अंधे हो । अंधा व्यक्ति अन्य जनमानस को क्या रास्ता दिखा सकता है :

मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥
माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०३)

इस प्रकार जातिवाद का खंडन, कर्मकांड का खंडन, फोकट धार्मिक अनुष्ठान, समाज में ऊंच-नीच का भेदभाव, जाति-अभिमान, तथाकथित निम्न जाति के लोगों का शोषण, अमानवीय

व्यवहार इन सबका विरोध करते हुए भक्त कबीर जी ने स्वस्थ सामाजिक चिंतन को दिशा प्रदान की। इस दृष्टि से उन्हें महान समाज-सुधारक कहा जा सकता है। भक्त कबीर जी के अनुसार समाज में कटुता, सामाजिक विषमता इसलिए फैली हुई है, क्योंकि मनुष्य दिशा-भ्रमित है। वह दुविधा में फंसा हुआ है। यदि वह गुरु की शरण में आ जाये, गुरु से ज्ञान प्राप्त करे, तो गुरु-शबद से जुड़ कर उसके अज्ञान में मुंदे हुए नेत्र खुल सकते हैं, इसी लिए भक्त कबीर जी ने गुरु-शब्द को महत्त्व दिया। गुरु ही ऐसा सामर्थ्य रखता है जिसके शब्द-बाण जिज्ञासु के हृदय में से अज्ञानता का नाश कर सकते हैं। भक्त कबीर जी बताते हैं कि गुरु-शब्द-ज्ञान से मनुष्य में परिवर्तन आ जाता है। उसके दुर्गुण छूट जाते हैं :

कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान॥
पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान॥ १९३॥
कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु॥
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु॥ १९४॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७४)

गुरु-प्रदत्त ज्ञान से जब अंतर में, चित्त-वृत्ति में उथल-पुथल होती है तो उसी से ही दुविधा, तृष्णा, दुर्बुद्धि, मोह, ममता आदि विकारों का नाश हो जाता है। तब प्रेम की वर्षा होती है, ज्ञान का सूर्योदय होता है, तभी मानव अपने सत्य स्वरूप को, निज स्वरूप को पहचान पाता है। एक सुंदर रूपक के द्वारा भक्त कबीर जी ने इस तथ्य को उजागर किया है :

देखौ भाई ग्यान की आई आंधी॥
सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी॥ १॥ रहाउ॥
दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा॥
तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा॥१॥
आंधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनां॥
कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा
उदै भानु जब चीना॥ २॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३१-३२)

मानव-शरीर का रूपक झोंपड़ी से बांधते हुए भक्त कबीर जी बताते हैं कि जब गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान की आंधी प्रवाहित होती है, भ्रम की टाटी (दीवारें) टूट जाती है, मोह-बंधन टूट जाते हैं। दुविधा के स्तंभ, मोह की बल्ली टूट जाती है । तृष्णा की छान फूस आदि से बनी छत नीचे गिर जाती है। झोंपड़ी में रखे दुर्बुद्धि के बर्तन आदि फूट जाते हैं अर्थात् भ्रम-मोह के बंधन, द्वैत-भाव, तृष्णा, दुर्बुद्धि सबका नाश हो जाता है। तब ज्ञान-आंधी के बाद हृदय से प्रभु-प्रेम की वर्षा होती है, जिसमें प्रभु के दास प्रेम-जल में सराबोर हो जाते हैं। वर्षा के थम जाने पर हृदय-आकाश साफ-सुथरा, स्वच्छ-निर्मल हो जाता है और तब ज्ञान का सूर्योदय होता है, जिसके प्रकाश में जिज्ञासु स्वस्वरूप को

पहचान पाता है। गुरु की शरण में आना, पूर्ण समर्पित हो ज्ञान की प्राप्ति करना आवश्यक है। गुरु की प्राप्ति सतसंगति से होती है, इसलिए भक्त कबीर जी साधु-जनों, महापुरुषों की संगत करने की प्रेरणा देते हैं :

कबीर इहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाइ॥
कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६५)

भक्त कबीर जी प्रभु से जुड़े जीवों की संगत करने की सलाह देते हैं, प्रभु से टूटे हुए मनमुखों की नहीं :

कबीर संगति करीऐ साध की
अंति करै निरबाहु॥
साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६९)

सतसंगति में प्रभु-नाम-सुमिरन की प्रेरणा मिलती है। नाम सुमिरन को ही भक्त कबीर जी जीवन का आधार मानते हैं। शरीर तो नाशवान है। इसके सुख-साधनों में जुटे रहना सिर पर विकारों का बोझ बढ़ाना है :

कबीर सुोई मुखु धंनि है जा मुखि कहीऐ रामु॥
देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७०)

सिर पर जितना अधिक विकारों का बोझ होगा उतना ही अधिक भवजल में डूबने का अंदेशा रहेगा। हल्के रहेंगे तो पारउतारा होगा :

कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हजार॥
हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६६)

भक्त कबीर जी शुद्ध मन से नाम-सुमिरन करने की प्रेरणा देते हैं। काशी-वास, गंगा के निकट निवास, नरक, स्वर्ग, मोक्ष आदि तथ्यों का खंडन करते हैं :

— कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु॥
बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६७)

— कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि॥
चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७०)

मोह-निद्रा का त्याग कर चरण-कमल संग जुड़ कर उस अनंत शक्ति से मिलने का उद्यम करें, जिससे कर्मवश बिछुड़ गए हैं :

कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु॥
जा के संग ते बीछरा ता ही के संगि लागु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७१)

जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी॥

–सतविंदर सिंघ फूलपुर*

भक्त कबीर जी के वचन **"जैसा मगहरु तैसी कासी"** उनके जीवन की बहुत ही रोचक और शिक्षा-भरपूर साखी की याद को ताज़ा कराता है। यह साखी बिपरवाद की सदियों पुरानी अंधविश्वासी और कर्मकांडी रीति का खंडन कर धर्म के उज्जवल जीवन- युक्ति वाले आदर्श को प्रकट करती है। इस साखी के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करने से पहले हम भक्त कबीर जी के जीवन और उनकी विचारधारा के बारे में संक्षिप्त रूप से जानने की कोशिश करेंगे।

जन्म : भक्त कबीर जी मध्यकालीन भक्ति लहर के भक्त साहिबान में विशेष स्थान रखते हैं। आप जी का जन्म ज्येष्ठ सुदी १५, संवत् १४५५ मुताबिक १३९८ ई. में काशी (बनारस, वाराणसी) में हुआ। आप जी की परवरिश मुसलमान जुलाहा-नीरू और उसकी पत्नी नीमा ने अपनी संतान समझ कर की और भक्त जी को बढ़िया संस्कार दिए। काशी हिंदू मत का धार्मिक स्थान और शिक्षा का महान केंद्र होने के कारण भक्त कबीर जी को विद्वानों के साथ विचार-चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। रौशनदिमाग़ होने के कारण उन्होंने ब्राह्मणी मत की सदियों पुरानी कर्मकांडी, अंधविश्वासीय रस्मों, बहुदेव-पूजा, जात-पांत आदि को तर्कसंगत ढंग से रद्द कर उज्जवल जीवन-जाच प्रदान करने वाली आध्यात्मिक बाणी की रचना की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मान : श्री गुरु ग्रंथ साहिब मानवीय जीवन को आलोकित करने वाले रूहानी ज्ञान का भंडार हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के समय उच्च आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त पंद्रह भक्त साहिबान की गुरमति आशयानुसार बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज की, उनमें सबसे अधिक बाणी भक्त कबीर जी की है।

विचारधारा : भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी में एक परमात्मा की भक्ति करने, मानवता में आपसी भ्रातृ-भाव जागृत पैदा करने, जात-पांत, छुआ-छूत तथा अन्य समकालीन धार्मिक पाखंडों का खंडन करने पर बल दिया है। भक्त कबीर जी बाणी के माध्यम से अपनी बात दलील के साथ करते हैं।

तथाकथ्य धार्मिक नेताओं का विरोध : धर्म

* *संपादक, गुरमति प्रकाश एवं गुरमत ज्ञान। फोन : ९९१४४-१९८४८*

मानव को जीवन-जाच सिखाता है, जिसके द्वारा मानव उच्च जीवन-मूल्यों को अपने जीवन में धारण कर प्रभु की भक्ति करते हुए अपने जीवन को संवारता है। भक्त कबीर जी के समय धर्म-कर्म को ब्राह्मण वर्ग ने अपना निजी अधिकार समझा हुआ था। स्वयं आध्यात्मिकता और सामाजिक जीवन-मूल्यों से विहीन होने के कारण इस वर्ग ने धर्म-कर्म को केवल लोगों का शोषण करने का साधन बना लिया था। भक्त कबीर जी ने इस वर्ग के विरुद्ध आवाज़ उठाई और कहा कि "ऐ लोगो! ये कोई धार्मिक नेता नहीं हैं। ये तो धर्म के भेस में छिपे हुए बड़े ठग हैं, जो शाखाओं सहित वृक्ष को खा जाने वाले हैं। इन अभिमानियों द्वारा किसी का सही मार्गदर्शन करना तो दूर की बात, ये तो लोगों को भ्रम-जाल में फंसा कर लूट रहे हैं :

गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥
गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥
ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥१ ॥
ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥
डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७६)

जात-पांत का खंडन : भक्त कबीर जी के समय ब्राह्मण जमात द्वारा समाज को जात-पांत में बाँटा हुआ था। मुख्य रूप से चार वर्ण थे— ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। ब्राह्मण वर्ग अपने आप को सर्वश्रेष्ठ समझता था और शूद्रों के साथ बहुत ही घटिया व्यवहार किया जाता था। शूद्रों को मंदिरों में जाने और भक्ति करने की सख़्त मनाही थी। भक्त कबीर जी ने इस सामाजिक–धार्मिक भेदभाव का पुरज़ोर खंडन किया। भक्त कबीर जी ने ब्राह्मण से कहा कि तू बाकी तीनों श्रेणियों— क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र से अपने आप को श्रेष्ठ मानता है, मैं तेरी इस विचारधारा के साथ सहमत नहीं। यदि तू सर्वश्रेष्ठ है तो इस सर्वश्रेष्ठता का कोई कारण तो बता! प्रसूति की जिस प्रक्रिया के द्वारा बाकी तीन श्रेणियों के लोग पैदा होते हैं, तू भी तो उसी प्रकिया द्वारा पैदा हुआ है। फिर बाकी तेरे से निम्न कैसे हो गए और तू सर्वश्रेष्ठ कैसे हो गया? यदि तू हमें शूद्र समझता है, निम्न समझता है और अपने आप को ऊँचा मानता है तो तू यह बता कि जब हमारी रगों में लहू बह रहा है तो तेरी रगों में कौन-सा दूध बह रहा है, जिस कारण तू बाकियों की अपेक्षा श्रेष्ठ है? भक्त कबीर जी कहते हैं कि समाज को जात-पांत में बाँट कर देश–समाज को कमज़ोर करने वाला, समाज में धार्मिक भेदभाव पैदा करने वाला ब्राह्मण नहीं हो सकता। असली ब्राह्मण वो है जो ब्रह्म (भगवान) की विचार करे, समाज को अच्छी दिशा प्रदान करे :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥

तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥७॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

अवतारवाद का खंडन : धार्मिक पुरुषों द्वारा बताए गए परमात्मा के स्वरूप का धर्म के पैरोकारों के व्यावहारिक जीवन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। विभिन्न धर्मों के अध्ययन से पता चलता है कि अवतार–पूजा या बहुदेव-पूजा मानवीय आस्था को कमज़ोर करने और समाज में भेदभाव पैदा करने का कारण बनती है, क्योंकि अपने इष्ट की सर्व-श्रेष्ठता का झगड़ा मानव एकता को ख़त्म कर देश और समाज को कमज़ोर करने का कारण बनता है। इसके विपरीत एकेश्वरवाद का सिद्धांत मानवता में *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* वाला भाईचारा स्थापित करने में सहायक होता है, जिससे आदर्श देश और समाज की सृजना होती है। भक्त कबीर जी अवतारवाद का खंडन करते हुए समझाते हैं कि परमात्मा एक है। वह जन्म-मरण से रहित है। उसका कोई माँ-बाप नहीं है :

—संकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरंजन जा को रे ॥
कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु
जा कै माई न बापो रे ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३९)

—कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९२)

मूर्ति-पूजा का खंडन : धर्मों का मकसद मानव-जीवन में आध्यात्मिकता और बौद्धिकता को आलोकित करना है, ताकि आदर्श मानव और आदर्श समाज की रचना की जा सके। जिस धर्म की बुनियाद अंधविश्वास पर टिकी हो, वह मानवीय जीवन को आलोकित करने के योग्य नहीं हो सकता। मूर्ति-पूजा जड़ (अचेत) पूजा होने के कारण मानव के आध्यात्मिक और मानसिक विकास में बाधा का कारण बनती है। शब्द इस बाधा को तोड़ कर चेतना के प्रस्फुटन का साधन बनता है। भक्त कबीर जी के समय काशी मूर्ति-पूजा का गढ़ था। भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी के माध्यम से मूर्ति-पूजा का जोरदार खंडन किया। आप जी ने दलील सहित कहा कि जिस पत्थर (मूर्ति) की पूजा के लिए मालिन फूल-पत्तियां तोड़ रही है वह पत्थर तो निर्जीव है और फूल-पत्तियाँ सजीव हैं, इसलिए सजीव पत्तियाँ तोड़ कर निर्जीव मूर्ति की पूजा करना कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं। दूसरी दलील यह है कि मूर्ति को बनाते समय मूर्ति-सर्जक ने इसके ऊपर पैर रख कर इसे बनाया है।

यदि मूर्ति सचमुच कुछ करने लायक या किसी का कुछ संवारने या बिगाड़ने लायक होती तो पहले तो वह मूर्ति-सर्जक को ही खा जाती। भक्त कबीर जी ने समझाया कि परमात्मा सदचेतन, सर्वव्यापक है, इसलिए मूर्ति-पूजा छोड़ कर परमात्मा का नाम-सुमिरन करना चाहिए :

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥१ ॥
भूली मालनी है एउ ॥
सतिगुरु जागता है देउ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७९)

मानव एकता के समर्थक : इस संसार में धर्मों का मुख्य उद्देश्य मानव-भिन्नतायों को ख़त्म कर मानवीय एकता और भ्रातृ-भाव का प्रचार करना रहा है। भक्त कबीर जी के काल में भारत के तथाकथ्य धार्मिक नेताओं ने मानव को ऊँच-नीच के विभाजन में डाल कर समाज का संतुलन बिगाड़ रखा था। भक्त कबीर जी ने उपदेश किया कि हे भाई! सभी मानव एक ही परमात्मा की रचना हैं। सभी में एक ही परमात्मा की ज्योति विद्यमान है, इसलिए कोई बुरा या भला नहीं :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥१ ॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु
पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

साधसंगत की महिमा : भक्त कबीर जी के काल में, अपने वर्तमान को संभालने की बजाय भविष्य को संवारने पर ज्यादा ज़ोर दिया जाता था। इस उद्देश्य के लिए नरक का भय और स्वर्ग का लालच देकर तथाकथ्य धार्मिक श्रेणी, लोगों का शोषण करती थी। आध्यात्मिक विकास और आदर्श समाज की बुनियाद— साधसंगत की महानता की तरफ किसी का ध्यान नहीं था। भक्त कबीर जी ने कहा कि जिस बैकुंठ (स्वर्ग) की आशा में आप अपना वर्तमान गंवा रहे हो वह बैकुंठ वास्तव में साधसंगत करने में ही है :

जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥
तब लगु नाही चरन निवास ॥२ ॥
खाई कोटु न परल पगारा ॥
ना जानउ बैकुंठ दुआरा ॥३ ॥
कहि कमीर अब कहीऐ काहि ॥
साधसंगति बैकुंठै आहि ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६१)

"जैसा मगहरु तैसी कासी" की विचित्र गाथा : 'काशी' उत्तर प्रदेश का एक प्राचीन नगर है, जो गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है। 'हरिवंश पुराण' के अनुसार, इसे भरतवंशी राजा काश ने बसाया था,

जिस कारण इसका नाम 'काशी' पड़ा। कुछ विद्वान एक कबीले का नाम भी 'काशी' बताते हैं, जिस कबीले ने इसे आबाद किया। 'वारणि' और 'असी' नामक दो नदियों के मध्य बसा होने के कारण इसे 'वाराणसी' भी कहा जाता है और इसी का बदला रूप 'बनारस' है। वैदिक काल में यह नगरी सनातन धर्म का गढ़ थी। इस नगरी को 'मुक्ति-प्रदाता नगरी' भी कहा जाता था।

भक्त कबीर जी ने इसी नगरी से मानवता को सर्व-सांझीवालता (समता) का उपदेश दिया। इस नगरी के प्रति हिंदू धर्म में एक विश्वास प्रचलित था कि 'मुक्ति-प्रदाता नगरी' होने के कारण अंतिम समय में यहाँ प्राण त्यागने वाला मनुष्य सीधा स्वर्ग को जाता है अर्थात् उसे मुक्ति मिल जाती है।

जो काशी के बाशिन्दे थे, उन्होंने तो काशी में ही प्राण त्यागने होते थे, परन्तु जो दूरस्थ क्षेत्रों के निवासी थे, उनकी मुक्ति के लिए ब्राह्मण वर्ग ने एक विशेष प्रबंध किया हुआ था। वह प्रबंध था— करवत (करपत्र) अर्थात् मुक्ति वाला आरा। दूर-दूर से लोग इस आरे से अपना सिर कटवा कर मुक्ति हासिल करने के लिए काशी आते थे। पुजारी लोग उनका सारा धन-माल लेकर बदले में उसके सिर पर आरा चला देते थे— "ले भाई! तू तो अब मुक्त ही मुक्त है!"

इस विचार का श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी ने भी अपनी बाणी में खंडन किया है। गुरु साहिबान के वचन हैं कि यदि कोई मानव मनोकामना के अधीन तीर्थों पर जाकर मुक्ति की ख़ातिर आरे के साथ अपना शरीर कटवा ले फिर भी उसके मन की मैल नहीं मिट सकती और वह परमात्मा का दर प्राप्त नहीं कर सकता। वास्तव में शब्द के लड़ लग कर ही पारउतारा होगा :

—अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ॥. . .

नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६२)

—मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए॥

मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६४२)

मगहर : उत्तर प्रदेश में ही काशी से लगभग २०० किलोमीटर की दूरी पर बसा एक नगर है मगहर, जो मौजूदा समय में ज़िला संत कबीर नगर में स्थित है। हिंदू मान्यता के अनुसार, जहाँ काशी में मरने वाला मानव सीधा स्वर्ग को जाता है, वहाँ मगहर में मरने वाला गधे का जन्म लेता है।

भक्त कबीर जी ने इस भ्रममूलक विचार का अपनी बाणी में खंडन करते हुए समझाया कि पारउतारा तो सच्ची प्रेमा-भक्ति के द्वारा ही संभव हो सकता है। इसका किसी विशेष स्थान के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। सच्ची भक्ति करने वाला चाहे

मगहर में प्राण त्यागे, वो भी परमात्मा का संग प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत अपूर्ण व मिथ्या भक्ति वाला चाहे काशी में ही प्राण क्यों न त्यागे, उसका पारउतारा नहीं हो सकता। इसी विचार को व्यावहारिक रूप में प्रकट करने के लिए भक्त कबीर जी अपने अंतिम समय में काशी से मगहर आ गए थे और मगहर में ही वे ब्रह्मलीन हुए। भक्त कबीर जी के वचन हैं :

सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ॥
मरती बार मगहरि उठि आइआ॥२॥
बहुतु बरस तपु कीआ कासी॥
मरनु भइआ मगहर की बासी॥३॥
कासी मगहर सम बीचारी॥
ओछी भगति कैसे उतरसि पारी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२६)

भक्त कबीर जी ने अंधविश्वासियों और कर्मकांडियों को बावरे कहा है। भक्त जी के अनुसार, प्रभु के साथ मिलाप की अवस्था तो मन की शुद्धता पर निर्भर करती है। कठोर मन वाला, जिसके अंदर सत्य, संतोष, दया, नेकी, परोपकार नहीं, वो चाहे काशी में ही क्यों न प्राण त्यागे, उसे परमात्मा की शरण हासिल नहीं हो सकती। इसके विपरीत उक्त सभी गुणों का मालिक परमात्मा का भक्त चाहे हड़ंबे (मगहर) में ही क्यों न प्राण त्यागे, तो भी उसका पार उतारा हो जाता है :

अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां॥
लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना॥१॥...
मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई॥
हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई॥३॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८४)

भक्त कबीर जी का इस सम्बंध में और भी फरमान है :

हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा॥
जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा॥१॥रहाउ॥
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई॥
किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९२)

तात्पर्य—लोगों के अनुसार चाहे मैं पागल ही सही, क्योंकि लोग कहते हैं कि मैं काशी छोड़ कर मगहर आ गया हूं, मगर यदि काशी की महानता के कारण ही मुक्ति मिलती हो तो इसमें परमात्मा का क्या उपकार समझा जाये? भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे लोगो! सुनो! कोई मनुष्य किसी भ्रम में न रह जाये कि काशी में मुक्ति मिलती है और मगहर में नहीं मिलती। अगर परमात्मा का नाम हृदय में हो तो फिर काशी क्या और मगहर क्या, दोनों जगह रह कर प्रभु में लीन हुआ जा सकता है।

सामाजिक चेतना के पुरोधा : भक्त कबीर जी

–डॉ. दादूराम शर्मा*

जब शक्ति और सत्ता के मद में चूर मुगल इसलाम के नाम पर धर्म का भयावह और विकृत रूप प्रस्तुत कर रहे थे और हिंदू समाज जन्मगत व जातिगत श्रेष्ठता के मिथ्या अहंकार में चूर होकर अपने ही समाज के तथाकथित निम्न वर्ग के लोगों को अछूत कहकर ठुकरा रहा था, प्रताड़ित कर रहा था, धर्म के नाम पर कर्मकांड का, आडंबरों और मिथ्याचारों का बोलबाला था, तभी समग्र समाज को यथार्थ दृष्टि व सही दिशा देने वाले परम निर्भीक संत भक्त कबीर जी का प्रादुर्भाव हुआ।

भक्त कबीर जी का तत्व-ज्ञान दीर्घकालीन सत्संग और व्यक्तिगत साधना का सहज प्रतिफलन है। उनकी दृष्टि में धर्म वाग्विलास का नहीं, आचरण का विषय है। परमात्मा का साक्षात्कार करके ही मुक्ति मिल सकती है। भक्त कबीर जी के अनुसार सत्संग से प्राप्त ज्ञान को पहले आचरण और व्यवहार की कसौटी पर कसा जाये, फिर औरों से कहा जाये। 'जैसी कथनी वैसी करनी' या 'जैसी करनी वैसी कथनी' ही उनका अभिमत था ।

हमारे देश में जितनी भी क्रांतियां हुईं, युगांतरकारी परिवर्तन हुए, इन सबके मूल में धर्म ही रहा है और इस धर्म के संशोधक, प्रवर्त्तक, संचालक तथा उपदेशक रहे हैं— महापुरुष, गुरु, संत आदि। उन्होंने सदैव हमारे समाज को रूढ़ियों, अंधविश्वासों, धर्माडंबरों और थोथे कर्मकांडों से मुक्त करके नवचेतना और नवीन जीवन-दृष्टि देकर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाया है, भेदभाव की जड़ें काटकर लोगों को भाईचारे के बंधन में बांधा है। श्री गुरु नानक देव जी और भक्त कबीर जी ऐसे ही युगपुरुष हुए हैं ।

सामाजिक चेतना के पुरोधा भक्त कबीर जी के व्यक्तित्व के निम्नांकित बिंदु द्रष्टव्य हैं :-

१. श्रमजीवी साधु : भक्त कबीर जी भिक्षा मांगकर जीवन निर्वाह करने वाले नहीं थे। वे कपड़ा बुनकर अपनी जीविका चलाते थे। उन्होंने जहां-तहां अपने को 'जुलाहा' कहकर अपने व्यवसाय का स्वाभिमान के साथ उल्लेख

* महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.) – ४८०६६१, फोन : ८८७८९-८०४६७

किया है ।

२. गृहस्थी संत : भक्त कबीर जी घर-बार छोड़कर सन्यासी नहीं हुए अपितु आजीवन अपनी पत्नी, अपने परिवार के साथ रहे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व के पारस स्पर्श से अपने परिवार को भी भक्ति-रंग में रंग दिया। जिसे प्रभु-नाम रूपी चिंतामणि मिल गई हो वह संसार की तुच्छ, नश्वर वस्तुओं का संग्रह नहीं किया करता।

३. महान् समाज-सुधारक : तत्कालीन समाज में जातिगत एवं वर्णगत भेदभाव अपनी चरम सीमा पर था, छुआछूत महामारी की तरह फैल रहा था। उन्होंने अपने उपदेशों की कभी कड़वी तो कभी मीठी दवा पिलाकर समाज को स्वस्थ करने का स्तुत्य प्रयास किया। अपनी बाणी में उन्होंने धन, यौवन आदि की नश्वरता और कुलाभिमान आदि की असारता बता-बताकर हमें निरंतर सावधान किया है । धर्मांधता के मतवाले हाथी को उन्होंने अपनी संत-वाणी के अंकुश से नियमित किया था।

४. ऊंच-नीच का भेद और अस्पृश्यता पर करारी चोट : सभी मनुष्य जब एक ही परमात्मा द्वारा बनाए गये हैं तब उनमें जातिगत, वर्णगत या वर्गगत भेदभाव कैसा ? ये भेदभाव तो मानव-निर्मित हैं। उनकी दृष्टि में सर्वोत्तम वही है, वही पवित्र है, जिसके मुख में प्रभु का नाम हो :

कबीर सोई मुखु धंनि है
जा मुखि कहीऐ रामु ॥
देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७०)

भक्त कबीर जी द्वारा छुआछूत के विरुद्ध चलाए गए देशव्यापी प्रबल धार्मिक आंदोलन का ही परिणाम था कि तथाकथित स्वर्ण समाज तथा निम्न वर्ग के मध्य की दूरी कम हो सकी थी।

५. सर्वधर्म समभाव अथवा सांप्रदायिक एकता के प्रथम पुरोधा : भक्त कबीर जी अस्पृश्यता-निवारक ही नहीं, सांप्रदायिक एकता के आंदोलन के भी प्रथम पुरोधा थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी की बाणी को सम्मिलित करके स्मरणीय सिक्ख गुरु साहिबान ने उनके प्रति अपनी अशेष श्रद्धा प्रकट की है ।

भक्त कबीर जी के अनुसार परमात्मा एक है। उसके नाम अनेक हैं, किंतु उनमें तत्त्वत: कोई भेद नहीं है । सर्वव्यापक, विराट परमात्मा को किसी धर्म-स्थान के संकीर्ण घेरे में सीमित

नहीं किया जा सकता। धर्म के आधार पर मानव-मानव में भेद करना अनुचित है क्योंकि सभी का सृष्टा परमात्मा ही है और सबके भीतर आत्मा के रूप में उसी की ज्योति विद्यमान है। धर्म के नाम पर अत्यधिक कट्टर और धर्मोन्मादी लोगों को फटकारने वाले और तथा धर्म का सच्चा मर्म समझाने वाले भक्त कबीर जी का विश्व में स्थान अद्वितीय है :

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु॥

जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७२)

६. भक्त कबीर जी की विनम्रता : पाखंडियों पर वज्र बनकर टूटने वाले परम आस्तिक भक्त कबीर जी की विनम्रता तो देखते ही बनती है :

—कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ॥

जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६४)

—कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ॥

गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६८)

—कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा॥

तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७५)

७. भक्त कबीर जी के 'राम' : भक्त कबीर जी के 'राम' दशरथ-पुत्र नहीं, निर्गुण-निराकार ब्रह्म हैं, प्रभु हैं, इसलिए वे अवतारवाद को भी स्वीकार नहीं करते। वे निर्गुण प्रभु-राम का जप करने का ही उपदेश देते हैं। प्रभु कभी उन्हें संरक्षक पिता के रूप में दिखाई देते हैं, कभी अत्यंत क्षमाशील तो कभी ममतामयी माता बन जाते हैं। कभी वे स्वयं को उस गुलाम के रूप में देखते हैं जिसके सब कुछ पर मालिक (परमात्मा) का एकाधिकार होता है।

भक्त कबीर जी ने समाज को चिंतन-मनन की स्वस्थ दृष्टि दी, छुआछूत को चुनौती दी और सांप्रदायिक विद्वेष को मिटाकर भाईचारा स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया । भक्त कबीर जी की बाणी स्वस्थ-विवेकशील जीवन की कुंजी है, आदर्श समाज की आधारशिला है। सामाजिक चेतना जगाने वाले भक्त कबीर जी की सशक्त बाणी कालजयी और अमर है।

भक्त कबीर जी की न्यायपूर्ण समाज की अवधारणा

–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सृष्टि की रचना, मानव समाज की संरचना, यथार्थ और आदर्श व्यवस्था के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। श्री गुरु नानक साहिब ने परमात्मा को एकमात्र सत्य कहा, जो सृष्टि के आरंभ से भी पूर्व का है। युगों-युगों से वही सत्य है। वह वर्तमान का सत्य है और अनंत काल तक वही सत्य रहने वाला है। उसकी रची सृष्टि में भी सत्य है। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि संसार सत्य के लिये ही रचा गया है— "इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु॥" संसार सत्य का घर इसलिये है क्योंकि स्वयं परमात्मा उसके कण-कण में बसा हुआ है। संसार में सत्य है, मगर सत्य का ज्ञान उसी को है जिसके मन में सत्य स्वरूप परमात्मा के लिये प्रीति है— *"सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु॥"* परमात्मा संसार में सर्वत्र विद्यमान है, किन्तु मनुष्य को उसके दर्शन नहीं हो रहे, क्योंकि मनुष्य के मन में परमात्मा के लिये भावना ही नहीं है। संसार में सत्य है, मगर प्रकट नहीं है, क्योंकि संसार परमात्मा से टूटा हुआ है, इसीलिये सभी जगह झूठ, अन्याय, धोखा और दुख ही दुख है— *"कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥"* भक्त कबीर जी का जन्म श्री गुरु नानक साहिब से पूर्व हुआ था। श्री गुरु नानक साहिब जैसी ही चिंता भक्त कबीर जी को भी थी कि समाज सत्य से दूर हो गया है।

ऐसो अचरजु देखिओ कबीर॥
दधि कै भोलै बिरोलै नीरु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२६)

संसार में अज्ञानता, भ्रम, झूठ ऐसे प्रभावकारी हो गया कि लोग पानी को दही मान कर मथते जा रहे थे। झूठ को सत्य मान लिया गया था, जिससे समाज का स्वरूप ही बिगड़ गया। समाज गहरे तक बंटा हुआ था जिससे परस्पर विवाद, वैमनस्य, विरोध और टकराहट की परिस्थितियां बन गई थीं। भक्त कबीर जी का जन्म काशी में हुआ था, जो धर्म और आध्यात्म का केंद्र था। उन्होंने काशी में रह कर इस टकराव को निकट से देखा और महसूस किया। भक्त कबीर जी परमात्मा में रमे हुए थे और संसार के सत्य को देख पा रहे थे। सत्य का ज्ञान होने के कारण ही लोगों का झूठ उन्हें पूरी तरह से विक्षुब्ध करता था। उन्होंने समाज को तोड़ने वाले इस विवाद पर ही सवाल खड़ा कर दिया।

*ई–१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९

हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई॥
दिल महि सोचि बिचारि कवादे
भिसत दोजक किनि पाई॥१॥
काजी तै कवन कतेब बखानी॥
पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी॥१॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७७)

भक्त कबीर जी ने धर्म के विवाद खड़े कर समाज को तोड़ने वालों से कहा कि सभी अपने मन में विचार करें कि हिंदू और मुसलमान कहां से आये हैं, किसने बनाये हैं अर्थात् परमात्मा ने नहीं बनाये हैं। परमात्मा ने तो इंसान बना कर भेजे हैं। अपने को हिंदू और मुसलमान तो मनुष्य ने स्वयं ही बनाया है अर्थात् इसका उसे कोई अधिकार नहीं है। अपने विवादों और टकराव का जन्मदाता वह स्वयं है। नर्क और स्वर्ग की बातें होती हैं। किसे स्वर्ग और किसे नर्क मिलेगा, यह अपने मन में विचार करने की बात है, क्योंकि सभी के मन में दुर्भावना है। यदि मन में दुर्भावना हो तो स्वर्ग कैसे मिल सकता है? भक्त कबीर जी के साहस को नमन करना पड़ेगा कि उन्होंने काजी से सीधा प्रश्न कर लिया कि उसने कौन-सा ग्रंथ पढ़ लिया है जिसमें मानवता को छोड़ कर धर्म-भेद की बात की गई है तथा जिसमें लिखा है कि मन में दुर्भावना हो तो फिर भी स्वर्ग मिल जायेगा। उन्होंने कहा कि ऐसा ज्ञान निरर्थक है। बड़ा ज्ञान धारण करने वाले भी संसार से ऐसे ही विदा हो गये जैसे अज्ञानी लोग गये। किसी को पता ही नहीं चला कि कौन कहां गया। क्या लाभ ऐसे भेद, बंटवारे और ज्ञान का? इसलाम धर्म में मुसलमान होने का प्रमाण सुन्नत को माना जाता है। भक्त कबीर जी ने इस प्रमाण को भी भ्रम बताया।

सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई॥
जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई॥२॥
सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ॥
अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७७)

भक्त कबीर जी ने जहां अध्यात्म के मर्म को आत्मसात किया था वहीं वे आश्चर्यजनक तर्कशक्ति के स्वामी भी थे। उन्होंने कहा कि यदि किसी मुस्लिम ने स्त्री के प्रेमवश सुन्नत कराई है तो मैं इसमें विश्वास नहीं करता। भक्त कबीर जी ने एकदम निरुत्तर कर देने वाला तर्क किया कि यदि परमात्मा को किसी को मुसलमान ही बनाना था तो वह सुन्नत करके ही भेजता अर्थात् परमात्मा ने किसी को हिंदू या मुसलमान बना कर नहीं भेजा। उन्होंने कहा कि यदि सुन्नत करने से ही कोई मुसलमान बनता है तो स्त्री का क्या? स्त्री की सुन्नत तो होती नहीं तो क्या वह हिंदू ही रहती है? स्त्री को अर्धांगिनी माना जाता है। वह पुरुष को छोड़ कर तो नहीं चली जाती! यह हिंदू और मुसलमान के बीच भेद उत्पन्न करने वाले आधार पर सबसे

कठोर प्रहार है जो इस भेद और विवाद की निरर्थकता सिद्ध करने वाला था। यह ऐसा काल था जब ब्राह्मण हिन्दू धर्म का शीर्ष और प्रतीक माना जाता था। इससे अन्य जातियों का प्रताड़न होता था। एक बड़ी विभाजक दीवार अन्याय का कारण बनी हुई थी जिससे सामाजिक व्यवहार प्रभावित हो रहा था। भक्त कबीर जी ने इस व्यवस्था पर भी करारी चोट की।

गरभ वास महि कुलु नही जाती॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती॥१॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी ने वर्ग, जाति के अभिमान को संबोधित करते हुए कहा कि जब मनुष्य माँ के गर्भ में होता है उस समय उसकी न कोई जाति होती है, न कुल। सभी का जन्म परमात्मा से हुआ है। जब सभी का जन्मदाता परमात्मा है तो यह जाति और कुल कहां से उत्पन्न हो गया? वह कैसे ब्राह्मण और अन्य कैसे शूद्र हो गया? भक्त कबीर जी ने ऐसे अभिमान को मिथ्या बताते हुए कहा कि ऐसे अहंकार में पड़ कर अपना जीवन निरर्थक न गंवा दें। ऐसे जाति–कुल के अहंकार का कोई लाभ नहीं है। भक्त कबीर जी के मन में चिंता उस वर्ग की दीन-हीन दशा की थी जिसे निम्न कह कर उसके सामाजिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। उस वर्ग के लोग अमानवीय जीवन जीने को विवश थे। उच्च जातियां उन्हें अपने बराबर बैठने, अपने कुओं से पानी लेने जैसे अधिकारों से वंचित रखती थीं। वे उनकी छाया भी अपने ऊपर पड़ने नहीं देते थे। भक्त कबीर जी ने समाज में श्रेष्ठ और निकृष्ट के ऐसे विचार को मूलत: ही रद्द कर दिया, जो तत्कालीन परिस्थितियों में, वो भी काशी जैसे नगर में रहते हुए करना एक नितांत क्रांतिकारी कदम था।

तुम कत ब्राहमण हम कत सूद॥
हम कत लोहू तुम कत दूध॥३॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै॥४॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी ने अपने को उच्च मानने वालों से सीधा सवाल किया कि वे कैसे उच्च ब्राह्मण हो गये और हम कैसे निम्न शूद्र हो गये अर्थात् परमात्मा ने तो ऐसी कोई व्यवस्था बनाई नहीं है। उसने तो सभी को समान बनाया है। सभी की नसों में एक जैसा खून बह रहा है। यदि परमात्मा ने कोई भेद किया होता तो हमारे शरीर की नसों में खून भरा होता और तुम्हारी उच्चता को चिन्हित करने के लिये तुम्हारी नसों में खून के स्थान पर वो दूध भर देता। दूध को हिन्दू समाज में अति पवित्र माना जाता है। विभिन्न धार्मिक संस्कारों में दूध का भी उपयोग किया जाता था। भक्त कबीर जी ने सारे भ्रम तोड़ते हुए कहा कि श्रेष्ठ वह है जिसे परमात्मा की महिमा का ज्ञान हो गया है और जिसने

परमात्मा को मन में धारण कर लिया है। इससे स्पष्ट है कि भक्त कबीर जी एक गुणात्मक समाज की दृष्टि रखते थे। उनके लिये चिंतन और कर्म महत्वपूर्ण था।

जाति जुलाहा मति का धीरु॥
सहजि सहजि गुण रमै कबीरु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२८)

भक्त कबीर जी जुलाहे थे। करघे पर हाथ से कपड़ा बुनने वाले को जुलाहा कहा जाता है जो निम्न कही जाने वाली जातियों में शामिल माना जाता है। उन्होंने कथित निम्न जातियों की बात करते हुए अपनी जाति का प्रयोग किया और कहा कि जाति भले ही कोई हो, मनुष्य में सहज, संतोष, संयम जैसे गुण उसे श्रेष्ठ बना देते हैं। वह गुणों को धारण कर परमात्मा की शरण प्राप्त कर लेता है। उसका जीवन परम आनंद से भर जाता है— *"सहज कलालनि जउ मिलि आई॥ आनंदि माते अनदिनु जाई॥"* जब जीवन में आनंद ही नहीं है तो जाति, कुल का अहंकार अधिक दुखदाई हो जाता है। भक्त कबीर जी कपड़ा बुनते-बुनते ऐसी श्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त हो गये थे कि लोग उनके अनुयाई बनने लगे, उनमें श्रद्धा रखने लगे। जाति गौण हो गई, गुण प्रधान हो गये, जिससे उनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई। इससे उच्च होने के अहंकार में डूबे ब्राह्मणों को गहरा मानसिक धक्का लगा। भक्त कबीर जी का चिंतन धर्म, जाति, वर्ण से ऊपर उठ कर मानव-मात्र की चिंता का था, ताकि निर्बाध सामाजिक व्यवस्था का सृजन हो सके। उन्होंने हिन्दुओं की ही तरह मुसलमानों को भी गुण धारण करने के लिये प्रेरित किया ताकि पूरा मानव समाज लाभान्वित हो सके। भक्त कबीर जी ने अपने लिये तो कह दिया कि उन्हें हज करने के लिये काबा जाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उन्हें तो घर-गृहस्थी-समाज की सुंदरता में ही काबा दिखाई देता है। उन्होंने मुसलमानों को अंतर की पवित्रता धारण करने के लिये प्रेरित किया।

रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई॥
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई॥२॥
निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै॥
पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै॥३॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८०)

भक्त कबीर जी ने कहा कि रोजा रखने, नियमित पांच वक्त की नमाज पढ़ने, कलमा पढ़ने-मात्र से स्वर्ग नहीं मिल जाता अर्थात् गति नहीं होती। इसके लिये मन की पवित्रता आवश्यक है। मन में सत्य है, परमात्मा के लिये भावना है तो मन में एक नहीं सत्तर काबा हैं और सत्तर बार हज के बराबर पुण्य मिल जायेगा। परमात्मा के आगे शीश झुकाना तब सफल है जब बुद्धि और चेतना में न्याय हो, सर्वकल्याण की कामना हो। जो कलमा वह पढ़ रहा है उसे आत्मसात भी करे। नमाज मुसल्ला या जानमाज बिछा कर उस पर खड़े होकर पढ़ी जाती है। भक्त कबीर जी ने कहा कि मुसल्ला

के नीचे पांचों विकार दबा कर उस पर नमाज पढ़ी जाये अर्थात् विकारों पर नियंत्रण के साथ पढ़ी गई नमाज फलदायी है। इसे भक्त कबीर जी ने एक तरह से आदर्श और सच्चे मुसलमान के गुणों के रूप में देखा। कोई भी धर्म हो, समाज में गुणों के अभाव के कारण विघटन था। सभी अपने धर्म की डफली बजा रहे थे और दूसरे के धर्म को हीन बता रहे थे। भक्त कबीर जी ने कहा कि गुणों को धारण किये बिना उद्धार संभव नहीं है।

खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी॥

आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८०)

मनुष्य परमात्मा की सत्ता को पहचाने, उसकी अधीनता को स्वीकार करे और मन में भरे हुए विकारों का नाश कर निर्लिप्त हो जाये। इसके साथ ही वह सभी को अपने जैसा ही जाने। अन्य के दुख को अपना दुख समझे। जैसी कामना वह अपने लिये करता है वैसी ही अन्य के लिये भी करे। सभी में वह एक ज्योति ही देखे— *"माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना॥"* सभी में एक ही ज्योति देखना परमात्मा की सत्ता के दर्शन करने के समान तो है ही, समाज के संयोजन का एक प्रमुख तत्व भी है। यह स्वर्ग पा लेने जैसा है। भक्त कबीर जी ने इसे व्यापक दृष्टि प्रदान की।

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥१॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

परमात्मा ने एक अपूर्व ज्योति प्रकट की और उस ज्योति से सारे जीव उत्पन्न कर दिये। कोई किसी भी धर्म, वर्ण, जाति का है, सभी की उत्पत्ति का स्रोत एक ही है और एक समान प्रकाश सभी में प्रकाशित हो रहा है। न रचना का कोई भेद है, न ऊर्जा का कोई अंतर है। सभी का स्वामी भी एक ही है, इसलिये कोई भेद किया ही नहीं जा सकता, किसी को श्रेष्ठ, किसी को निकृष्ट कहा ही नहीं जा सकता। भक्त कबीर जी ने कहा कि सृष्टि-रचना की शक्ति केवल परमात्मा में निहित है और परमात्मा स्वयं अपनी प्रत्येक रचना में विद्यमान है। ऐसी व्यवस्था सर्वत्र संचालित हो रही है। सर्वत्र समानता और एकता का भाव व्याप्त है। मनुष्य को इसमें कोई भ्रम नहीं करना चाहिये कि दो मनुष्यों में कोई भिन्नता अथवा असमानता है। भक्त कबीर जी ने कहा कि मनुष्यों के रूप भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किन्तु उनकी समानता वैसी ही है जैसे कुम्हार एक ही मिट्टी से अलग-अलग बर्तन तैयार कर लेता है। मिट्टी एक ही है बर्तन अलग-अलग हैं। इससे न तो मनुष्यों की स्थिति भिन्न-भिन्न हो जाती है, न परमात्मा की कोई ऐसी इच्छा प्रकट होती है। यदि सभी मनुष्य इस दृष्टि को धारण कर लें तो

समाज में कोई विखंडन न रहे। किन्तु, न तो मनुष्य के भ्रम टूटते हैं, न विकार शांत होते हैं। संसार में धर्म है, ज्ञान है। उसे झूठा नहीं कहा जा सकता। समस्या तो यह है कि सत्य की विचार करने वाले नहीं हैं। विचार के अभाव में झूठ, अन्याय और शोषण का बोलबाला हो गया है— *"बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै॥ जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै॥"* भक्त कबीर जी ने यहां कथनी और करनी के अंतर को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य यह कहता तो है कि सभी में परमात्मा का वास है किन्तु फिर भी किसी निर्धन, असहाय पर अन्याय करते हुए अपनी बात भूल जाता है, क्योंकि तब स्वार्थ आगे आ जाते हैं। यहां मुर्गी मारने को किसी असहाय, निर्बल के अहित के प्रतीक रूप में प्रयोग किया गया है। जैसे मुर्गी कसाई के आगे विवश है, वैसे निर्बल किसी शक्तिशाली के आगे विवश होता है। मानव समाज का यह आम परिदृश्य है जिसे भक्त कबीर जी ने पटवारी का उदाहरण देकर सुंदर ढंग से वर्णित किया है :

नउ डाडी दस मुंसफ धावहि रईअति बसन न देही॥
डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिसटाला लेही॥२॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७९३)

यद्यपि उपरोक्त बाणी का पूरा संदर्भ विकारों और इंद्रियों से संबन्धित है किन्तु इसमें कृषि विषयक सामाजिक सच्चाई को प्रतीक बनाना अपने आप में महत्वपूर्ण है कि उस समय साधारण मनुष्य के लिये कैसी परिस्थितियां रही होंगी। मनुष्य के पास जमीन तो नौ गज है, किन्तु कानून उस पर दस लागू किये जा रहे हैं। इससे उसका जीवन अस्थिर हो गया है। वह सदैव भयभीत और चिंतित रहता है। पटवारी ऐसा है कि बेईमानी करते हुए उसका हक भी मार रहा है, ऊपर से घूस भी अधिक मांग रहा है। समाज में ऐसी स्थितियां थीं कि न्याय की कोई आस ही नहीं थी। न्याय करने वाले ही अन्यायी हो गये थे। भक्त कबीर जी को स्वयं इस परिस्थिति से गुजरना पड़ा था। उनका जीवन संकट में पड़ा, उन्हें काशी छोड़ कर जाने के लिये विवश किया गया। भक्त कबीर जी ने सब कुछ सहा, किन्तु अपने चिंतन और दर्शन पर दृढ़ रहे। समाज दृढ़ संकल्प और स्पष्ट सोच से चलता है। ऐसे लोग अपवाद स्वरूप होते हैं जो हर क़ीमत पर अपने विचारों के साथ दृढ़ता से खड़े रहते हैं। एक समय आता है जब समाज उन विचारों का आदर करने और ग्रहण करने को विवश हो जाता है। भक्त कबीर जी ऐसे ही महापुरुषों में एक थे। ऐसे महापुरुषों के विचार देश, काल से परे होते हैं और सार्वभौमिक, सर्वकालिक महत्व रखते हैं। यही कारण है कि भक्त कबीर जी आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। यह भी कहा जा सकता है कि वे आज पहले से अधिक प्रासंगिक हैं, क्योंकि आज समाज का अवमूल्यन अधिक है, विवाद, विरोध अधिक हैं। मनुष्य अपने अहंकार में उचित-

अनुचित सब भूल गया है। उसके अहंकार ने सर्वाधिक विकृतियां उत्पन्न की हैं। भक्त कबीर जी ने उसके अहंकार की भावना पर प्रबल प्रहार किया।

जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई॥
काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई॥१॥
काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ॥
जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५४)*

भक्त कबीर जी ने कहा कि आज अहंकार में भर कर दिन-रात घूमने वाला मनुष्य उन दस महीनों को कैसे भूल गया जब वह माता के गर्भ में उलटा लटका हुआ था। आज वह कैसे अपने ऊपर अहंकार कर सकता है! मनुष्य को यह कठोर सत्य जान लेना चाहिये कि उसका जीवन कच्ची मिट्टी की गागर की तरह है जिस पर प्रति पल पानी गिर रहा है और वह गागर गलती जा रही है। एक दिन जब गागर फूट जायेगी अर्थात् तन से प्राण निकल जायेंगे तब इस तन को अग्नि में जला कर भस्म कर दिया जायेगा अथवा दफनाया गया तो कीड़े खा जायेंगे। ऐसे जीवन, ऐसे तन का क्या अहंकार करना! अहंकार करने का कोई आधार ही नहीं है। विकार मनुष्य का जीवन निरर्थक कर रहे हैं।

काम क्रोध त्रिसना के लीने गति नही एकै जानी॥
फूटी आखै कछू न सूझै बूडि मूए बिनु पानी॥१॥
चलत कत टेढे टेढे टेढे॥
असति चरम बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११२३)

विकारों में लिप्त मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य को जान ही नहीं पाता है। वह अज्ञान के अंधकार में ही भटकता रहता है और अति दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से जीवन को निरर्थक बना लेता है। अहंकार उसके जीवन को भ्रष्ट कर देता है। उसे यह ज्ञान नहीं कि जिस तन पर इतना अभिमान कर रहा है वह कुछ और नहीं, त्वचा में लिपटा हुआ हड्डियों का समूह है, जिसमें दुर्गंध भरी हुई है। कोई कितना भी शक्तिशाली हो, थोड़े समय के लिये ही अपनी चला पाता है और सब कुछ यहीं छोड़ कर संसार से विदा हो जाता है— *"चारि दिन अपनी नउबति चले बजाइ॥ इतनकु खटीआ गठीआ मटीआ संगि न कछु लै जाइ॥"* इस सत्य का बोध ही समाज में अनुकूल परिस्थितियां सृजित कर सकता है।

धर्म, जाति, कुल, शक्ति, विकारों के अतिरिक्त समाज में बड़ी खाई धनी और निर्धन की है जिसने बड़ी विषमतायें पैदा की हैं। भक्त कबीर जी ने कहा कि निर्धन और धनवान के सामाजिक व्यवहार में जमीन-आसमान का अंतर है। कोई निर्धन जब धनवान के पास जाता है तो उसे धनवान का अभिमानी व्यवहार सहन करना पड़ता है। निर्धन अपनी बात कहने के लाख यत्न करता है किन्तु

धनी व्यक्ति कोई ध्यान नहीं देता, निर्धन की बात गंभीरता से नहीं लेता। इसके विपरीत जब कोई धनवान किसी निर्धन के पास जाता है तो निर्धन उसका पूर्ण सत्कार करता है। भक्त कबीर जी ने कहा कि निर्धन हो अथवा धनवान, दोनों एक ही पिता की संतान हैं और इस दृष्टि से भाई-भाई हैं। यह तो परमात्मा का निर्णय है कि किसी को धनी, किसी को निर्धन बना दिया है, किन्तु इससे समानता नहीं मिटती। इसके बाद भक्त कबीर जी ने धनी-निर्धन की नई परिभाषा की।

कहि कबीर निरधनु है सोई॥
जा के हिरदै नामु न होई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५९)

यदि मनुष्य को यह समझ आ जाये कि सच्चा धन परमात्मा का नाम है, धनवान वह है जिसके मन में परमात्मा की भक्ति और समर्पण बस रहा है, तो समाज बड़े बिखराव से बच सकता है, धन के लिये किया जाने वाला पाप कम हो सकता है, समाज में सदाचार को आदर मिल सकता है। भक्त कबीर जी ने कहा कि परस्पर वैर-विरोध, घृणा, तिरस्कार, अहंकार का त्याग करने से ही सुख प्राप्त हो सकता है, परमात्मा की कृपा प्राप्त हो सकती है।

कबीर तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु॥
छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ बादु बिबादु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७६)

परस्पर विरोध, विवाद से ऊपर उठने वाले को परमात्मा की शरण प्राप्त होती है और मन में निर्लिप्तता का भाव पैदा होता है। इसमें गुरु उसका मार्गदर्शक बनता है और उसे कभी विचलित नहीं होने देता। मनुष्य इसे अपना स्वभाव बना ले तो सर्वदा सुख होगा— "कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास फलंत॥" ऐसा मनुष्य अपना भी भला करता है और उसके कार्यों से समाज का भी हित होता है।

कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत॥
पंखी चले दिसावरी बिरखा सुफल फलंत॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७६)

जो मनुष्य परमात्मा की शरण में है उसे गुणों की प्राप्ति होती है। वह अपने गुणों से परोपकार, भलाई के कार्य करता है। ऐसा जीवन ही सार्थक है। जीवन जीने की यही परिभाषा है। ऐसे गुणी मनुष्य समय आने पर संसार से विदा हो जाते हैं किन्तु उनके किये गये पावन कार्यों से समाज सदैव लाभान्वित होता रहता है। ऐसे ही महापुरुष समाज को आधार और स्थायित्व प्रदान करते हैं।

सामाजिक उन्नति के अग्रदूत : भक्त कबीर जी

–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी दर्ज है, उनमें भक्त कबीर जी की बाणी सबसे ज्यादा है। उनका एक ग्रंथ 'कबीर बीजक ग्रंथ' कबीरपंथियों में बहुत प्रसिद्ध है।' भक्त कबीर जी की काव्य-दृष्टि, विचारधारा का अध्ययन-अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि वे बाणीकार तो थे ही, साथ ही वे महान् समाज-सुधारक, क्रांतिकारी, युग-प्रवर्तक भी थे। वे अन्याय, आडम्बर, छुआछूत, अत्याचार, शोषण, ब्राह्मणवाद के विरुद्ध लड़ने एवं जूझने का साहस व जज्बा रखते थे। भक्त कबीर जी ने झिड़की भरे अंदाज़ में धर्मांधता की आलोचना करते हुए फ़रमाया है :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ॥२॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद॥
हम कत लोहू तुम कत दूध॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

इससे पता चलता है कि भक्त कबीर जी अपनी बाणी द्वारा समाज में फैली छुआछूत, जात-पांत, ऊँच-नीच, भेदभाव जैसी बुराइयों को दूर कर एक उत्कृष्ट व आदर्श, श्रेष्ठ समाज का सृजन करना चाहते थे। उस वक्त हमारा समाज उपरोक्त वर्णित बुराइयों में बहुत बुरी तरह से जकड़ा हुआ था और बड़े दु:ख व खेद की बात है कि अब भी तथाकथित आधुनिक, सुशिक्षित और सभ्य भारतीय समाज इन बुराइयों से पूरी तरह से मुक्त नहीं हो पाया है। कट्टरता और असहिष्णुता लगातार बढ़ रही है। समाज में भाईचारा, सौहार्द्र, प्रेम और सद्भावना को बरकरार रखना भी भक्त कबीर जी का परम व पवित्र उद्देश्य रहा है।

यूं तो हिंदी साहित्य के इतिहास में भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी की खड़ी बोली का प्रथम रचनाकार माना जाता है। परंतु, हमारा मत है कि प्रभु-भक्त कवियों ने भक्ति-काल में ही खड़ी बोली के बीज बो दिए थे और इस बोली को 'लोकबोली', 'जनमानस की भाषा' होने का गौरव प्राप्त है। भक्त कबीर जी ने भी अपनी बाणी में खड़ी बोली के अनेक शब्दों का अति सुंदर उपयोग किया है। उनकी भाषा-शैली में ऐसे अनेक ठेठ व आम शब्दों की भरमार है कि उनकी काव्य-भाषा को 'ठेठ भाषा', 'सुधक्कड़ी भाषा', 'खिचड़ी

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०*

भाषा' तक कहा गया। भले ही भक्त कबीर जी की पत्नी का नाम 'लोई' था, किंतु उन्होंने हिंदी की खड़ी बोली के असंख्य शब्दों को ऐसा ठेठ (शुद्ध) रूप प्रदान किया कि उन शब्दों का तद्भव रूप तत्सम रूप से कहीं अधिक प्रसिद्ध हो गया, जब वे कहते हैं कि "सुनो री लोई", तब इसका तात्पर्य है कि "सुनो री ओ लोकाई" अर्थात् "ऐ लोगो! सुनो, मैं क्या कहता हूं!"

यह सबको मालूम है कि १२वीं-१३वीं शती का भारतीय समाज धर्मांधता, पुजारीवाद, छुआछूत, भेदभाव और कर्मकांडों में बुरी तरह से जकड़ा हुआ था। उस समय शोषितों को न तो प्रभु-भक्ति करने की, न वेदों-ग्रंथों का पाठ करने की और न ही मंदिरों में जाने की तथाकथित ऊंची जाति वाले लोग अनुमति देते थे। ऐसे समय में भक्ति लहर का पैदा होना भारतीय समाज के लिए एक क्रांतिकारी परिवर्तन सिद्ध हुआ। इस भक्ति-लहर के नायक महापुरुषों में भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी और भक्त नामदेव जी द्वारा दिए गए योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

भक्त कबीर जी का जन्म काशी (बनारस, वाराणसी) में हुआ था। उनकी जन्म-तिथि के बारे में बेशक विद्वानों में मतभेद हैं, परंतु महान् सिक्ख विद्वान भाई काह्न सिंघ नाभा द्वारा रचित 'महान कोश' में उनका जन्म ज्येष्ठ सुदी १५, संवत् १४५५ (सन् १३९८ ई.) को एक विधवा ब्राह्मणी की कोख से हुआ बताया गया है। 'महान कोश' के अनुसार भक्त कबीर जी की माता ने बनारस शहर के पास 'लहर तलाउ' के किनारे एक नव-जन्मे बालक को रख दिया, जिसे अली (नीरू) नामक जुलाहा अपने घर ले आया और उसकी पत्नी नीमा ने उसका लालन-पालन अपना पुत्र समझकर किया।

भक्त कबीर जी के धार्मिक गुरु भक्त रामानंद जी थे। भक्त रामानंद जी अपने आस-पास के धार्मिक घटनाक्रम को मद्देनजर रखते हुए तथाकथित नीची जाति वालों को 'गुरुमंत्र' (दीक्षा) नहीं देते थे। भक्त कबीर जी ने उनसे दीक्षा लेने का रास्ता निकाल लिया और प्रभात के समय उनके रास्ते में लेट गए। भक्त रामानंद जी गंगा नदी में स्नान करने हेतु जा रहे थे। अपने ध्यान में चले जा रहे थे तभी अंधेरे में उनका पांव भक्त कबीर जी से टकरा गया। 'राम कहो भाई!' कहकर उन्होंने भक्त कबीर जी को उठाया। इस प्रकार भक्त कबीर जी ने उन्हें अपना धार्मिक गुरु मान लिया। उनके शिष्य बन गए। इस संबंध में भाई गुरदास जी इस तरह फ़रमान करते हैं :

होइ बिरकतु बनारसी रहिंदा रामानंदु गुसाईं।
अंम्रितु वेले उठि कै जांदा गंगा न्हावण ताईं।
अगो ही दे जाइ कै लंमा पिआ कबीर तिथाईं।
पैरी टुंबि उठालिआ 'बोलहु राम' सिख समझाई।
(वार १०:१५)

भक्त कबीर जी का विवाह माई लोई जी के साथ हुआ था और उनके घर में पुत्र कमाल व पुत्री कमाली का जन्म हुआ था। भक्त कबीर जी अपना पुश्तैनी व्यवसाय कपड़ा बुनना करते हुए सदैव प्रभु-भक्ति में लीन रहते थे। अन्य बाणीकारों की भांति उन्होंने भी श्रम के महत्त्व को दरसाया, इसे और गौरव प्रदान किया।

भक्त कबीर जी के जीवन, बाणी और शिक्षाओं का फ़लक बहुत विस्तृत है। जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में भक्त कबीर जी लोगों का नेतृत्व करते नज़र आते हैं। उनके अनुसार परमात्मा सर्वशक्तिमान है और सब जगह विद्यमान है। उनका कथन है कि यदि प्रभु मसजिद में रहता है, तो अन्य जगहों पर कौन मौजूद है? मूर्तिपूजकों की भी अजीब मान्यता है कि भगवान् केवल मूर्तियों में रहता है। उनका फ़रमान है :

अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा।।
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी ने सब मनुष्यों को समान समझने का संदेश देते हुए फ़रमान किया है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

उन्होंने मुक्ति के विषय में प्रचलित सभी कर्म-कांडों, भ्रमों का खंडन किया है और मत व्यक्त किया है कि प्रभु के नाम के सुमिरन के बिना किसी को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। वे इस संबंध में फ़रमान करते हैं :

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु।।१।।
किआ नागे किआ बाधे चाम॥
जब नही चीनसि आतम राम॥१।। रहाउ।।
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई॥
मुकती भेड न गईआ काई॥२।।
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई॥
खुसरै किउ न परम गति पाई॥३।।
कहु कबीर सुनहु नर भाई॥
राम नाम बिनु किनि गति पाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

हमारे सभी बाणीकारों ने परम सत्य पर पहरा देने का उपदेश दिया है। परम सत्य के लिए कुर्बान हो जाने की प्रेरणा देते हुए भक्त कबीर जी ने फ़रमान किया है :

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ॥
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ॥१।।
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०५)

भक्त कबीर जी का दृढ़ विश्वास है कि जीत हमेशा परम सत्य व नेकी की होती है। बदी,

विनाश का कारण बनती है :

इकु लखु पूत सवा लखु नाती॥
तिह रावन घर दीआ न बाती॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८१)

प्रभु को पाने का मार्ग बताते हुए वे फरमान करते हैं :

चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ॥. . .
भोले भाइ मिले रघुराइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

स्वयं को परमात्मा को समर्पित करते हुए वे नम्रतापूर्वक बताते हैं :

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा॥
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७५)

उनका एक और फ़रमान है कि परमात्मा तो कण-कण में बसा हुआ है :

लोगा भरमि न भूलहु भाई॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५०)

प्रसिद्ध हिंदी विद्वान डॉ. सुनील कुमार का मानना है कि वीरगाथा-काल के बाद हिंदी साहित्य के इतिहास का द्वितीय चरण भक्ति-काल नाम से जाना जाता है। भक्ति-काल को सामान्यत: दो वर्गों में विभक्त किया गया है— निर्गुणधारा एवं सगुणधारा। पुन: इन दोनों धाराओं की दो-दो शाखाएं हैं। निर्गुणधारा के अंतर्गत 'ज्ञानाश्रयी शाखा' व 'प्रेमाश्रयी शाखा' है। ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों को 'संत' 'भक्त' आदि कहा जाता है। इस शाखा के प्रतिनिधि संत-कवि हैं— भक्त कबीर जी।

अपनी बाणी में भक्त कबीर जी ने व्यंग्य, कटाक्ष और उपालम्भ अलंकार का अति सुंदर उपयोग किया है। भक्त कबीर जी ने भारतीय समाज को रूढ़ियों, कुरीतियों, अनेक तरह की बुराइयों से मुक्त करने के लिए वैचारिक क्रांति के साथ-साथ सामाजिक क्रांति का सहारा लिया है। खुद को शोषित, पीड़ित, निरीह और असहाय समझने वाले लोगों में उन्होंने जोश एवं साहस भरा है, उनमें चेतना पैदा की है। उनकी बाणी ने भारतीय समाज तथा जनमानस के विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का काम किया है। उनके लगभग सभी कथनों ने लोकोक्तियों व मुहावरों का रूप धारण कर लिया है। उनकी विचारधारा का आदर-सम्मान लोकमानस के हृदय में हमेशा बरकरार रहेगा।

मनुष्य के आत्मिक उत्थान में भक्त कबीर जी का योगदान

–डॉ. मनजीत कौर*

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७४९)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है कि ईश्वर के प्यारे जन, संसार में लोगों की भलाई हेतु ही आते हैं। वे लोगों को विकारयुक्त जीवन से निजात दिलाते हुए भक्ति के साथ जोड़ कर ईश्वर से जोड़ देते हैं।

अत: स्पष्ट है कि संसार में किसी भी पीर-पैगम्बर, गुरु, भक्त अथवा संत का आगमन किसी विशेष प्रयोजन के लिए होता है और ईश्वर की ओर से ही उन्हें कोई खास उत्तरदायित्व सौंपा गया होता है, जिसे वे हर हाल में पूर्ण कर मानव-कल्याण हेतु अपना जीवन समर्पित कर देते हैं।

भारत की समसामयिक परिस्थितियों में भक्त कबीर जी का आगमन होता है। सत्य के अन्वेषी भक्त कबीर जी ने समकालीन समस्त क्षेत्रों में जो क्रांति की धारा प्रवाहित की उससे प्रभावित हुए लोग भक्त कबीर जी को महान क्रांतिकारी, समाज-सुधारक तथा धर्म-सुधारक कहने लगे। दिग्भ्रमित लोगों को भक्त कबीर जी ने "पेड़ छाडि सब डाली लागे" कहकर उन्हें सत्य-पथ पर अग्रसर किया तथा सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों का उन्मूलन भी जिस अंदाज से किया उसमें भी एक तेज स्पष्ट रूप से लक्षित होता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, भक्त कबीर जी की अखण्ड आत्मनिष्ठा में एक क्षण के लिए भी दुर्बलता दिखाई नहीं देती। वे वीर साधक थे और वीरता अखण्ड आत्मविश्वास को आश्रय करके ही पनपती है। भक्त कबीर जी के लिए साधना एक विकट संग्राम-स्थली थी, जहाँ कोई विरला शूर ही टिक सकता है।

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा के शब्दों में, भक्त कबीर जी निष्काम कर्मयोग के प्रचेता पुरुष थे। वे अपने युग के जननेता थे। उनका जीवन तत्कालीन युग के लिए एक आदर्श दर्पण था। वे अपनी साधना के धनी, विश्वासों के राजा और अनुभूतियों के साहूकार थे। वे कभी झिझके नहीं, कभी झुके नहीं, कभी अटके नहीं, कभी

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

भटके नहीं।

भक्त कबीर जी के चिन्तनानुसार मनुष्य के आत्मिक उत्थान हेतु प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं :—

ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध : मनुष्य के आत्मिक विकास हेतु सर्वप्रथम सर्वशक्तिवान, सर्वकला समर्थ ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध होना नितांत अनिवार्य है। भक्त कबीर जी ईश्वर की कण-कण में विराजमानता का विश्वास दृढ़ करवाते हुए, हिंदुओं और मुसलमानों को समझाते हुए प्रश्न करते हैं कि अगर खुदा केवल काबा में निवास करता है तो शेष दुनिया किसके आसरे है? इसी तरह हिंदू धर्म के अनुसार ईश्वर का निवास केवल मूर्ति में ही माना गया है। भक्त कबीर जी की दृष्टि और गहन चिन्तन के अनुसार दोनों धर्मों के लोग भ्रमित हैं और मूल तत्व को नहीं पहचान पा रहे हैं। इस संदर्भ में भक्त कबीर जी का फरमान है :

अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा॥

हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

आत्मिक उत्थान हेतु ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध और विश्वास होना अनिवार्य है।

अहं-त्याग : अहं (हउमै, अभिमान, घमंड) को गुरबाणी में दीर्घ रोग माना गया है और अहं के वशीभूत हुआ मनुष्प मेरी-मेरी में इस कद्र गलतान हो जाता है जिसके फलस्वरूप उसका जन्म-फलित वाला एक भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। जब गुरु-कृपा से इसकी मैं-मेरी मिटती है तभी ईश्वर इसके समस्त कार्य सिद्ध करता है। इस संदर्भ में भक्त कबीर जी का संदेश है :

जब लगु मेरी मेरी करै॥

तब लगु काजु एकु नही सरै॥

जब मेरी मेरी मिटि जाइ॥

तब प्रभ काजु सवारहि आइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६०)

आत्मिक उत्थान हेतु मनुष्य को किसी भी प्राप्ति का अभिमान नहीं करना चाहिए, क्योंकि अभी जीवन रूपी नाव संसार समुद्र में ही है न जाने किस क्षण क्या हो जाए। इस संदर्भ में अति सुन्दर संदेश है भक्त कबीर जी का :

कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ॥

अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६६)

बेशक भक्त कबीर जी यह भी मानते हैं कि अहं का त्याग करना बड़ी कठिन साधना है, मगर जिसने अहं का त्याग कर लिया, वह तो समझो ईश्वर के तुल्य हो गया :

कबीर माइआ तजी त किआ

भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ॥
मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७२)

आत्ममंथन : आत्मिक उत्थान हेतु आत्ममंथन अति आवश्यक है। इन्सानी फितरत है कि वह सदैव दूसरों के अवगुण देखता है, दूसरों की आलोचना करता है, मगर अपने गिरेबान में झाँक कर नहीं देखता। जिस दिन से मनुष्य अपने अवगुणों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करेगा तब से वह गुणों का ग्राहक बन कर जीवन को सफल बनाने की ओर अग्रसर होगा। भक्त कबीर जी तो उन्हें ही अपना मित्र मानते हैं जो स्वयं को बुरा और अन्य सबको भला करके मानते हों :

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६४)

संगति का विशेष प्रभाव : लोकप्रचलित कहावत है— "जैसी संगत, वैसी रंगत।" अत: आत्मिक विकास हेतु अच्छी संगति का होना भी नितांत आवश्यक है। अच्छी और बुरी संगति के प्रभाव को भक्त कबीर जी ने बड़े सुन्दर उदाहरण द्वारा समझाया है :

कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि॥
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६९)

अर्थात् जिस प्रकार केले के पेड़ के निकट खड़ी बेरी जब हवा के कारण झूलती है तो अपने कांटों द्वारा निकटवर्ती केले के पेड़ के पत्तों को चीर देती है। यही प्रभाव बुरी संगति का पड़ता है।

भक्त कबीर जी संत-जनों की संगति करने हेतु प्रेरित करते हैं जो कि अंत समय तक साथ निभाती है और दुर्जन की संगति का त्याग करने की प्रेरणा देती है, क्योंकि दुर्जन की संगति आत्मिक मृत्यु का कारण बनती है। इस संदर्भ में भक्त कबीर जी की प्रेरणामयी बाणी है :

कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु॥
साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६९)

वस्तुत: मनमुख की संगति का त्याग करने तथा गुरुमुख की संगति करने में ही मनुष्य के आत्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त होता है।

जात-पांत के रोग से निजात पाना : जातिवाद एक ऐसा विष है जो समाज की असल प्रगति में बाधक है और आत्मिक उत्थान हेतु घातक है। जातिगत अभिमान जैसे भयावह रोग के उन्मूलन हेतु भक्त कबीर जी ने सख्त शब्दों का प्रयोग करते हुए सर्वप्रथम ब्राह्मण, जो कि स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझता था, उसे आड़े हाथों लिया और

स्पष्ट रूप से कहा कि अगर तू अन्य जाति वाले से श्रेष्ठ है तो इस संसार में आने का मार्ग भी तेरा भिन्न होना चाहिए था। वर्ण-व्यवस्था पर करारी चोट करते हुए भक्त कबीर जी की व्यंग्यात्मक शैली का शानदार उदाहरण देखिए :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

यही नहीं, भक्त कबीर जी ने सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति एक ही नूर से हुई बताते हुए सवाल किया कि जब ईश्वर (अल्लाह) ने सबको अपनी परम ज्योति से उत्पन्न किया है तो बताओ उनमें से कौन भला (अच्छा) है और कौन बुरा? :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

आडम्बरों और कर्मकाण्डों का खण्डन : गुरबाणी में कर्मकाण्डों की तुलना बंजर भूमि के साथ की गई है। जैसे बंजर भूमि में बोए गए उत्तम किस्म के बीज और उस पर की गई सम्पूर्ण मशक्कत व्यर्थ चली जाती है, ठीक इसी प्रकार रूढ़ियों और कर्मकाण्डों में मनुष्य का बेशकीमती जीवन बर्बाद हो जाता है और आत्मिक उत्थान का सुअवसर हाथों से निकल जाता है।

भक्त कबीर जी के चिन्तनानुसार, मनुष्य धार्मिक कर्मकाण्ड करते-करते अहंकारी हो जाता है। कई लोग भगवान को पत्थरों में ढूंढते हैं, लेकिन भगवान को तो भोले-भाव से, भक्ति करके, सहजता से पाया जा सकता है :

करम करत बधे अहंमेव॥
मिलि पाथर की करही सेव॥३॥
कहु कबीर भगति करि पाइआ॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५४)

आत्मिक उत्थान हेतु अनुभव का प्रकाश भी अनिवार्य है। चेतन्य मन और जागृत बुद्धि द्वारा ही सही-गलत की परख सम्भव है। इस संदर्भ में भक्त कबीर जी ने सटीक उदाहरण देकर समझाया है :

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥
किआ नागे किआ बाधे चाम॥
जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई॥
मुकती भेड न गईआ काई॥२॥

बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई॥
खुसरै किउ न परम गति पाई॥ ३॥
कहु कबीर सुनहु नर भाई॥
राम नाम बिनु किनि गति पाई॥ ४॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी तो यहाँ तक समझाते हैं कि मौलवी को मस्जिद की मीनार पर चढ़ कर बांग देने की जरूरत नहीं, क्योंकि खुदा तो हृदय में बसता है और वह बहरा नहीं है :

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७४)

अपरिग्रह (अनासक्ति) : धन-सम्पदा जीवन-यापन की आवश्यकता है, इसमें कोई संदेह नहीं, मगर मात्र धन-संचय की धारणा बनाकर उचित-अनुचित का विचार त्याग देना धर्म के विरुद्ध है और साथ ही मानवीय उत्थान में बड़ी बाधा। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा अतिथि सत्कार हेतु जो अरूरी है, उतना तो अपने सांई (मालिक) से मांगना जायज है। इस संदर्भ में भक्त कबीर जी नि:संकोच याचना करते हैं :

भूखे भगति न कीजै॥
यह माला अपनी लीजै॥...
दुइ सेर मांगउ चूना॥
पाउ घीउ संगि लूना॥
अध सेरु मांगउ दाले॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले॥...
कहि कबीर मनु मानिआ॥
मनु मानिआ तउ हरि जानिआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५६)

निंदा से परहेज : मनुष्य के आत्मिक उत्थान हेतु आत्म-प्रशंसा तथा पर निंदा का त्याग नितांत आवश्यक है। इन्सानी फितरत है कि मनुष्य स्वयं की प्रशंसा तथा दूसरों की बुराई सुनने को तत्पर रहता है। भक्त कबीर जी ने इस संदर्भ में समझाने हेतु कमाल का उदाहरण पेश किया है :

निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ॥
निंदा जन कउ खरी पिआरी॥
निंदा बापु निंदा महतारी॥ ...
रिदै सुध जउ निंदा होइ॥
हमरे कपरे निंदकु धोइ॥...
निंदा हमरी प्रेम पिआरु॥
निंदा हमरा करै उधारु॥
जन कबीर कउ निंदा सारु॥
निंदकु डूबा हम उतरे पारि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३९)

कबीरपंथियों की वर्तमान सामाजिक स्थिति

–डॉ. अभिषेक कुमार*

भक्त कबीर जी के जन्म से लेकर मरण तक इनके क्रिया-कलापों पर नज़र डालें तो प्रत्येक पहलू में एक बड़ी सीख एवं प्रेरणा मिलती है। उन्होंने पाखंड, द्वेष एवं अज्ञानता को लेकर अपने बेबाक तर्कों से मानवतावाद के जो संदेश दिए हैं उसकी व्याख्या के लिए पूरी धरती के क्षेत्रफल भर का कागज़ एवं समुद्र के पानी भर की स्याही भी कम पड़ेगी। इस मृत्युलोक में जन्मा कोई पुरुष अपनी करनी से महापुरुष में तब्दील हो जाता है तब उसके बताए रास्ते, सिद्धांत एवं ज्ञान से जिज्ञासु जनसमुदाय परिप्लावित होकर एक विचारधारा बना लेते हैं, जिसे 'पंथ' भी कह सकते हैं।

भक्त कबीर जी के चौथे शिष्य धर्मदास ने कबीरपंथ की 'धर्मदासी' अथवा 'छत्तीसगढ़ी' शाखा की स्थापना की थी, जो वर्तमान समय में आधुनिक भारत के निर्माण में सबसे मज़बूत कबीरपंथी शाखा में से एक है। यह भी माना जाता है कि भक्त कबीर जी के शिष्य धर्मदास ने उनके निधन के कई वर्षों बाद इस पंथ की शुरूआत की थी। भक्त कबीर जी को अपनी खिलाफत से कोई डर नहीं था। वे लोक-कल्याण, मानव-जगत के उत्थान एवं परमात्मा-मिलन से संबंधित तर्कों को इतना बेबाकी से रखते थे कि उसकी काट किसी के पास नहीं होती थी। वर्तमान काल में भी उनकी बाणी का तेज कम नहीं हुआ है।

देश में कबीरपंथ की दो प्रमुख शाखाएं देखने को मिलती हैं। पहली शाखा का केंद्र 'कबीरचौरा' (काशी) है, जहाँ भक्त कबीर जी का प्राकट्य हुआ था। इसकी एक उप शाखा उत्तर प्रदेश के संत कबीरनगर जिले के मगहर में है, जहाँ भक्त कबीर जी ने देह त्यागी थी। वर्तमान में यहां के गद्दीनशीन महंत आचार्य विचारदास जी हैं। भक्त कबीर जी समाधि-स्थली मगहर के नाम से लगभग ५०० बीघा जमीन है। यहां बाल आश्रम संचालित होते हैं तथा मगहरधाम में हजारों दर्शनार्थी प्रतिदिन भारत सहित दुनिया के विभिन्न भागों से आते हैं। अति प्रसन्नता की बात है सिक्ख पंथ की सर्वोच्च धार्मिक संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा मगहर में भक्त कबीर जी के नाम पर एक भव्य गुरुद्वारा का निर्माण किया गया है। इस भव्य

* *मुख्य प्रबंध निदेशक, दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र, आजमगढ़, (उत्तर प्रदेश)–२७६३०३, फोन :९४७२३-५१६९३ www.dpkavishek.in*

गुरुधाम के अस्तित्व में आ जाने से भक्त कबीर जी की महिमा में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।

मगहर में राज्य सरकार और केंद्र सरकार ने अभूतपूर्व कार्य किया है और भक्त कबीर जी के विचारों पर शोध हेतु 'कबीर शोध अकादमी' का स्थापन किया गया है। दूसरा बड़ा केंद्र छत्तीसगढ़ राज्य के तहत आता है, जिसकी स्थापना धर्मदास ने की थी। इनकी भी कई शाखाओं और उपशाखाओं के बारे में जानकारी मिलती है। समयोपरांत छत्तीसगढ़ी शाखा भी कई शाखाओं में विभक्त हुई, जिसमें कबीरचौरा जगदीशपुरी, हरकेसर मठ, कबीर-निर्णय-मंदिर, लक्ष्मीपुर मठ आदि का वर्णन मिलता है।

काशी में कबीरचौरा शाखा का भक्त कबीर जी के शिष्य सुरतगोपाल ने स्थापन किया था और यह शाखा सबसे प्राचीन मानी जाती है। हालाँकि कुछ लोगों का इस पर मत स्पष्ट नहीं है। इसकी उप शाखाएँ उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले के मगहर, काशी के लहरतारा और गया के कबीरबाग में अवस्थित हैं।

गुजरात आदि प्रदेशों में प्रचलित कबीरपंथ के प्रवर्त्तक भक्त कबीर जी के शिष्य 'पद्मनाभ' तथा बिहार के पटना में 'फतुहा मठ' के प्रवर्त्तक 'तत्त्वाजीवा' अथवा 'गणेशदास' का नाम आता है। यह भी प्रकाश में आया है कि बिहार के मुजफ्फरपुर में कबीरपंथ की बिदूरपुर मठवाली शाखा की स्थापना भक्त कबीर जी के शिष्य जागूदास ने ही की थी। बिहार में छपरा जिले के धनौती में स्थापित भगताही शाखा को भक्त कबीर जी के शिष्य भागोदास ने प्रारम्भ किया था, जो तीसरी बड़ी शाखा है। यहाँ भगताही शाखा में प्रेम, भक्ति-भावना ही प्रधान है।

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज के प्रीतम नगर में स्थित 'कबीर परख संस्थान' है, जिसे श्री अभिलाश दास द्वारा स्थापित किया गया था।

काशी के कबीरचौरा में ही भक्त कबीर जी का नित्य निवास था। यहाँ वे रहकर ध्यान, भक्ति से पनपे तार्किक ज्ञान को जनसमुदाय में उपदेशित करते एवं जीविकोपार्जन से संबंधित सूत कातने एवं बेचने का कार्य भी किया करते थे। लिहाज़ा यह भक्त कबीर जी का प्रमुख धर्म-स्थान भी है। यहां एक मठ और भक्त कबीर जी का मन्दिर आज भी दृष्टिगोचर है, जिसमें उनका चित्र रखा गया है। जात-पांत, धर्म, सम्प्रदाय के आडम्बर से परे मानव सुदूर स्थानों से दर्शनार्थ यहाँ आते हैं। वार्षिक कार्यक्रमों में तो जनसैलाब उमड़ पड़ता है। इस पावन मौकों पर कबीरपंथी आचार्य महात्मागण सत्संग, प्रवचन करते हैं तथा लोक-मंगल हेतु भक्त कबीर जी के उपदेशों का प्रचार करते हैं। भारतवर्ष सहित दुनिया में कई स्थानों पर बड़े-बड़े आयोजन होते हैं।

प्रार्थना सभी धर्मों का एक श्रेष्ठ उत्तम आचरण

है ईश्वर को धन्यवाद कृतज्ञता ज़ाहिर करने का। कबीरपंथी प्रार्थना को बंदगी कहते हैं। इसका बड़ा ही अलग महत्व देखने को मिलता है। इसके लिए उपयुक्त समय निर्धारित होता है। प्रात:काल और फिर रात में भोजन के बाद बंदगी की जाती है। कबीरपंथी मानव शरीर को पंचतत्वों से बना मानते हैं, इसलिए ये पंच तत्वों से छूटने एवं विजय-प्राप्ति हेतु पाँच बार बंदगी करते हैं।

कबीरपंथ में दीक्षा की प्रथा आज भी देखने को मिलती है, जिसे 'बरू' या 'कण्ठी धारण' कहते हैं। महंत के शिष्यगण तुलसी के डण्ठल से कण्ठी माला का निर्माण करते हैं। दीक्षा-प्राप्ति हेतु एक उत्सव का आयोजन किया जाता है, जिसमें घर वाले अपने रिश्तेदारों एवं परिचितों को बुलाते हैं। मठ के महंत उस तुलसी माला को शिष्य के कण्ठ में धारण कराकर दीक्षा-संस्कार पूर्ण कराते हैं।

भक्त कबीर जी को मानने वाले लोग एवं मंत्र-दीक्षित कबीरपंथी सभी साधकगण शुद्ध सात्विक आहार लेते हैं। चूँकि 'जैसा अन्न वैसा मन', भोजन का शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रकृति की उत्पत्ति सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण से हुई है। जगत में तीन प्रकार के लोग पाए जाते हैं— सात्विक, राजसी एवं तामसी। इन तीनों को अपने-अपने स्वादानुसार भोजन भी उसी प्रकार प्रिय लगते हैं। मुख्यत: भोजन तीन प्रकार के होते हैं। पहला, जो सात्विक लोग पसंद करते हैं। वैसे खाद्य पदार्थ जो रसयुक्त, चिकने और प्रकृति-प्रदत्त होते हैं, जैसे विभिन्न प्रकार के कन्द-मूल, सब्जियां, अनाज, फल, फूल, ड्राईफ्रूट्स इत्यादि। इनके सेवन से आरोग्यता, बल, बुद्धि, विवेक तथा सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

दूसरा राजसी भोजन है, जो राजसी प्रवृत्ति के लोग पसंद करते हैं। इसमें कड़वे, अत्यधिक खट्टे, तीखे, दाहकारक, बहुत गरम, रूखे एवं मदिरा आदि भोजन करने से दु:ख, चिंता बढ़ती है एवं शरीर के अंग, प्रत्यंग, उपांग रोगग्रस्त होते हैं।

तीसरा तामसी भोजन है, जो तमोगुणी व्यक्ति को प्रिय लगता है, जिसमें वह भोजन जो अधपका, बासी, दुर्गंधयुक्त मांस, उच्छिष्ट आदि हो। इस प्रकार के भोजन से शरीर के अंत:करण एवं इंद्रियों में तमस, मनमानी, कर्मों में अप्रवृत्ति, प्रमाद, आलस्य, व्यर्थ चेष्टा, निद्रा आदि की बढ़ोतरी होती है।

शरीर में यदि रजोगुण बढ़ता है, व्यक्ति में उग्रता, जल्दबाज़ी बढ़ती है, धैर्य समाप्त हो जाता है। यही स्वभाव कई बार खुद का एवं दूसरों का अमंगल कर देता है। शरीर में तमोगुण जब बढ़ता है तो व्यक्ति के अंदर सुस्ती आती है, रवैया ढीला होता है, जिसके कारण वह तय समय पर तय कार्य नहीं कर पाता, जिसके कारण स्वयं में भी खिन्न रहता है एवं दूसरों को भी परेशान करता रहता है। रजोगुण और तमोगुण, ये दोनों सत्यानाश की ओर मनुष्य को बढ़ाते हैं। वहीं सत्वगुण बढ़ने पर

व्यक्ति अभूतपूर्व स्वकल्याण एवं जगतकल्याण की सकारात्मकता के पथ पर बढ़ता है, जहाँ जीवन में संतुलन होता है एवं बल, बुद्धि, विवेक पूरा नियंत्रण में रहता है तथा वह इंद्रियों की मनमानी पर विजय पा लेता है और ईश्वरीय शक्ति, प्रकृति संरचना को समझने के काबिल हो जाता है।

यदि कबीरपंथियों की धार्मिक और सामाजिक स्थिति पर नज़र डालें तो कबीरपंथ एक ऐसा धार्मिक और सामाजिक आंदोलन है जो भक्त कबीर जी की शिक्षाओं और उनके जीवन-दर्शन पर आधारित है। भक्त कबीर जी (१३९८-१५१८ ई.) ने अपने समय में समाज में व्याप्त अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरता और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई। उनकी शिक्षाओं ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जो जाति, धर्म आदि से ऊपर उठकर मानवता के मूल्यों को अपनाए। देश भर में फैले तमाम कबीरपंथियों ने समाज में सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया है। वे भक्त कबीर जी की शिक्षाओं को केवल धार्मिक संदर्भों में नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार के रूप में भी देखते हैं। कबीरपंथ के मठ और आश्रम शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विशेषकर, वे गरीब और पिछड़े वर्गों को सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

यदि राजनीतिक दृष्टिकोण से देखें तो कबीरपंथी राजनीति में अपनी कोई विशेष जगह नहीं बना पाए हैं। कुछ सामाजिक और राजनीतिक संगठनों ने कबीरपंथ की विचारधारा को अपनाते हुए समाज-सुधार के लिए कार्य किया है, परंतु असल में कबीरपंथियों को राजनीति के महत्वपूर्ण पदों पर आसीन करने को कोई तवज्जो नहीं दिया। कबीरपंथी जातिवाद और सांप्रदायिकता के खिलाफ आवाज उठाने वाले आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

भक्त कबीर जी की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार, उनके पद-चिन्हों पर चलने के लिए एवं आधुनिक भारत के निर्माण में योगदान के उद्देश्य से सन् १९७० में श्री भोलाराम जी भेख परंपरा में श्री आशुराम जी के परम शिष्य के रूप में तथा कबीरचौरा मठ काशी के २२वें गादिपति पीठाधीश्वर आचार्य श्री अमृत साहेब जी के द्वारा चादर अभिषेक शिष्य के रूप में महंत देवदास जी बड़ी खाटू पधारे और कबीर सत्संग शुरूआत की। अखिल भारतीय कबीर मठ, सद्गुरु कबीर आश्रम सेवा संस्थान बड़ी खाटू की छापरी डुगरी पर नींव पड़ी, जिसे राजस्थान सरकार संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम १९५८ के अंतर्गत संस्था का रजिस्ट्रेशन दिनांक १७ सितम्बर, २०१२ ई. को उप रजिस्ट्रार कार्यालय नागौर (राजस्थान) में किया गया, जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर ७८ नागौर २०१२-१३ है। इस संस्था के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. महंत श्री नानक दास हैं, जो लोकमंगल

कल्याणार्थ द्रुत गति से सेवा प्रदान करने वाले महान पुरुष हैं। बड़े ही ओजस्वी, तेजस्वी, प्रचंड प्रतिभा के प्रखर वक्ता महंत एवं भारत भूषण सम्मान से अलंकृत हैं।

भक्त कबीर जी के विचारों से ओत-प्रोत होकर यह संस्था सन् २०१२ से समाज-सेवा और पर्यावरण-रक्षा, नशामुक्ति अभियान पर लगातार बिना जाति, धर्म, भेदभाव, मानव-कल्याण के लिए नि:शुल्क सेवा-कार्य कर रही है।

पर्यावरण क्षेत्र में देश एवं विदेश में वृक्षारोपण का कार्य कर पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रोत्साहन का कार्य किया है।

विपत्ति काल में समाज के बीच गरीब, बेबस, लाचार लोगों को यह संस्थान राशन सामग्री से लेकर चिकित्सा सुविधा, शिक्षा, कपड़ों जैसी विशेष सेवाएँ नि:स्वार्थ सप्रेम भेंट करता आ रहा है। चाहे कोरोना काल हो या नोटबंदी, हर समय लोगों की मदद के लिए यह संस्थान तैयार रहा है।

इस संस्थान में नशामुक्ति अभियान, चरित्र-निर्माण के लिए विद्यालय, महाविद्यालय तथा अन्य शिक्षा-केन्द्रों पर बच्चों को नशामुक्ति एवं अन्य व्यसनों से छुटकारे का संकल्प दिलाया है।

समाज में सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता, सद्भावना समभाव के साथ-साथ नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, संगीत-कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा-कार्य करने वाले युवक-युवतियों को 'विश्व संत कबीर पुरस्कार सम्मान' से सम्मानित भी करते हैं। वर्ष २०२२ में संविधान क्लब, नई दिल्ली में 'विश्व संत कबीर अवार्ड' का आयोजन हुआ था, जिसमें पूरे देश से सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले विशिष्टजनों ने भाग लिया था, जिनको राष्ट्र स्तर के गणमान्य लोगों के हाथों यह अवार्ड दिया गया था।

शोध सूचना

गुरमत ज्ञान मई २०२५ के पृष्ठ ८ पर प्रथम पैराग्राफ में प्रकाशित पंक्तियों में 'श्री गुरु अरजन देव जी' को 'श्री गुरु अंगद देव जी' पढ़ा जाए। त्रुटि का हमें खेद है।

—संपादक।

हिंदी साहित्य में उपलब्ध भक्त कबीर जी संबंधी कतिपय प्रमुख आधार-ग्रंथ

–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल*

भक्तिकालीन संत परंपरा में भक्त कबीर जी एक अद्वितीय व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने न केवल धार्मिक चेतना को स्वर दिया, अपितु समाज-सुधार की दृष्टि से भी गहन प्रभाव डाला। भक्त कबीर जी की बाणी आज भी जनमानस को आंदोलित करती है। उनके जीवन, बाणी और दर्शन से संबंधित अनेक ग्रंथ समय-समय पर रचे गए हैं। इस आलेख में हम भक्त कबीर जी से संबंधित कतिपय प्रमुख आधार-ग्रंथों का परिचय प्राप्त करेंगे, जो हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं :—

१. बीजक : भक्त कबीर जी का दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथ : भक्त कबीर जी भारतीय भक्ति आंदोलन के एक क्रांतिकारी संत, और समाज-सुधारक माने जाते हैं। उन्होंने अपने समय की धार्मिक रूढ़ियों, आडंबरों और सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाई। भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी के माध्यम से आध्यात्मिकता को जनसामान्य के लिए सुलभ बनाया। कबीरपंथियों में उनके विचारों का संग्रह 'बीजक' ग्रंथ को माना जाता है। यह ग्रंथ उनके अनुयायियों, विशेषकर कबीरपंथियों द्वारा संरक्षित और प्रचारित किया गया। 'बीजक' भक्त कबीर जी की वैचारिक विरासत, उनकी आध्यात्मिक दृष्टि और सामाजिक चिंतन का दर्पण माना जाता है।

'बीजक' शब्द का अर्थ है— बीज या सार। यह ग्रंथ वास्तव में भक्त कबीर जी के विचारों का सार माना जाता है, जो उनके अनुभवजन्य ज्ञान, आलोचनात्मक दृष्टिकोण और धर्म तथा अध्यात्म की मूल अवधारणाओं को सामने लाता है। वस्तुत: 'बीजक' भक्त कबीर जी की निर्भीकता, स्पष्टवादिता और सूक्ष्म अंतर्दृष्टि का दस्तावेज माना जाता है।

बीजक को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा गया है :—

१. साखी (साखी अर्थात् साक्षी, यानी आंखों देखे अनुभवों पर रचे गए दोहे)

२. सबद (भक्ति, रहस्यवाद से युक्त पद)

३. रामैनी (प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया काव्य और कुछ गद्य भी)

कभी-कभी 'स्वांगी' नामक एक चौथा भाग भी माना जाता है, जिसमें प्रहसन शैली के संवाद हैं।

* १/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१

'बीजक' की भाषा सधुक्कड़ी (खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, पंजाबी तथा अनेक उत्तरी भारतीय बोलियों-भाषाओं का मिश्रण) है। भक्त कबीर जी की भाषा आम जन की भाषा थी, जिससे भक्त कबीर जी की बाणी सीधे जनमानस के साथ जुड़ सकी।

२. कबीर ग्रंथावली : बाबू श्याम सुंदर दास

'कबीर ग्रंथावली' का संकलन सर्वप्रथम बाबू श्याम सुंदर दास ने नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के तत्त्वावधान में किया था। इसमें उन्होंने विभिन्न स्रोतों से भक्त कबीर जी की रचनाओं को एकत्र कर उनका संपादन किया। यह ग्रंथावली भक्त कबीर जी के पद, सबद, साखियाँ आदि का व्यापक संकलन हैं और शुद्ध पाठ प्रस्तुत करती है।

बाबू श्याम सुंदर दास हिंदी साहित्य के अग्रणी विद्वान, संपादक और आलोचक थे। वे नागरी प्रचारिणी सभा और काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका के संग जुड़े हुए थे, जहाँ उन्होंने अनेक साहित्यिक कार्यों को संपन्न किया। उन्होंने भक्त कबीर जी के बिखरे हुए पदों, साखियों और रचनाओं को एकत्रित कर उन्हें व्यवस्थित एवं आलोचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया। 'कबीर ग्रंथावली' की यह प्रस्तुति न केवल पाठ्यक्रमों के लिए उपयोगी सिद्ध हुई, बल्कि अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनी।

बाबू श्याम सुंदर दास ने भक्त कबीर जी की बाणी को विभिन्न स्रोतों— श्री गुरु ग्रंथ साहिब, हस्तलिखित प्रतियों, मौखिक परंपराओं तथा उपलब्ध पंचवाणियों से एकत्रित किया। उनके इस कार्य में ऐतिहासिकता, भाषिक विश्लेषण और पांडुलिपि-समालोचना की कसौटी पर रचनाओं की परख की गई, जिससे ग्रंथ की विश्वसनीयता बढ़ी।

'कबीर ग्रंथावली' में मुख्यत: तीन प्रकार की रचनाएँ संकलित हैं— साखियाँ, पद और रमैनी। साखियाँ दोहे के रूप में हैं, जिनमें नैतिक, दार्शनिक और जीवन-ज्ञान संबंधी बातें कही गई हैं। पदों में भक्तिरस, रहस्यवाद और भक्त कबीर जी की संत-भावना अधिक स्पष्ट होती है। रमैनी अपेक्षाकृत लम्बी रचनाएँ होती हैं, जिनमें धार्मिक विमर्श और भक्त कबीर जी की विचारधारा की व्यापक झलक मिलती है।

बाबू श्याम सुंदर दास ने प्रत्येक रचना के साथ संदर्भ, अर्थ, भाष्य और आवश्यकतानुसार टीका भी दिया है। इससे पाठक न केवल मूल रचना को समझ पाता है, बल्कि उसके भाव और निहितार्थ तक भी पहुँचता है। वे रचनाओं की शैली, छंद, भाषिक विशेषताओं और

लोकप्रचलित रूपों पर भी टिप्पणी करते हैं।

यह ग्रंथ शोधार्थियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और साहित्यप्रेमियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसे हिंदी विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रमों में भी सम्मिलित किया गया है।

३. लोकप्रिय कबीर : आचार्य रामचंद्र शुक्ल : आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी 'लोकप्रिय कबीर' नामक संग्रह के माध्यम से भक्त कबीर जी के पदों को न केवल संकलित किया है, बल्कि उन्हें एक सुसंगठित और वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत किया है। यह संकलन भक्त कबीर जी के व्यक्तित्व, काव्य और विचारधारा को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

'लोकप्रिय कबीर' में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्त कबीर जी के ऐसे पदों को स्थान दिया है जो जनमानस में गहराई तक पैठ बनाए हुए हैं। 'लोकप्रिय कबीर' शुक्ल जी की साहित्यिक दृष्टि, आलोचनात्मक विवेक और इतिहासबोध का सटीक उदाहरण है। इस संकलन में शुक्ल जी ने भक्त कबीर जी की वाणी के पाठ-संस्करण को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है, जिससे यह संग्रह एक महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज बन गया है।

शुक्ल जी ने अपने इस ग्रंथ में इस बात को भी रेखांकित किया है कि भक्त कबीर जी की रचनाओं में दार्शनिक तत्व के साथ-साथ अद्भुत काव्यगत सौंदर्य भी है। उनके पदों में रूपक, अनुप्रास, विरोधाभास और प्रतीक योजना का सुंदर समावेश है। भक्त कबीर जी की रचनाएँ गीतात्मक और गेय होती हैं। उनमें नाद है, लय है और गूढ़ार्थ भी। शुक्ल जी ने यह दर्शाया है कि भक्त कबीर जी की रचनाओं का प्रभाव केवल उनके विचारों से ही नहीं, बल्कि उनकी प्रस्तुति की कलात्मकता से भी है।

४. कबीर : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'कबीर' हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है, जो भक्त कबीर जी के जीवन, काव्य और दर्शन का विश्लेषणात्मक एवं समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक मात्र एक जीवनी नहीं है, बल्कि दार्शनिक दृष्टिकोण से भक्त कबीर जी की बाणी, विचारधारा, और उनके युग की सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों को समझने का एक सफल प्रयास है।

'कबीर' पुस्तक का उद्देश्य भक्त कबीर जी के व्यक्तित्व और काव्य को ऐतिहासिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना है। द्विवेदी जी ने भक्त कबीर जी को केवल एक भक्त या कवि ही नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी समाज-सुधारक, तत्वचिंतक और आध्यात्मिक विचारक के रूप

में भी देखा है। वे भक्त कबीर जी को मध्यकालीन भारतीय समाज के भीतर उठी मानववादी चेतना के प्रवर्तक मानते हैं।

पुस्तक 'कबीर' में उस समय की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति का गहन विश्लेषण मिलता है। उस समय हिन्दू धर्म में जातिवाद, मूर्ति-पूजा, पाखंड और ब्राह्मणवाद की जड़ें गहरी थीं। वहीं इसलाम में भी औपचारिकता, कर्मकांड और बाह्य आडंबर फैल रहा था। ऐसे समय में भक्त कबीर जी ने दोनों धर्मों की खुलकर आलोचना की और एक ऐसे निर्गुण ब्रह्म की बात की, जो न तो मंदिर में है, न मस्जिद में, बल्कि हर जीव में व्याप्त है।

द्विवेदी जी ने भक्त कबीर जी के जीवन को प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत किया है। भक्त कबीर जी के जन्म को लेकर अनेक कथाएँ प्रचलित हैं, लेकिन लेखक ने ऐतिहासिक तथ्यों, जनश्रुतियों और लोकपरंपराओं के आधार पर यह दिखाया है कि भक्त कबीर जी का व्यक्तित्व निर्भीक, तर्कशील और अत्यंत मानवीय था। वे समाज के स्थापित रूढ़िगत ढाँचों को तोड़कर एक सत्यनिष्ठ जीवन-दृष्टि की बात करते हैं।

द्विवेदी जी ने भक्त कबीर जी की भाषा को 'सधुक्कड़ी' कहा है — एक ऐसी मिश्रित भाषा जिसमें हिन्दी, ब्रज, अवधी, फारसी और अरबी शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। उनकी शैली लाक्षणिक, प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक है, जो पाठक को झकझोर देती है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्त कबीर जी को एक महान समाज-सुधारक के रूप में चित्रित किया है। वे जातिवाद, धर्मांधता, पाखंड और शोषण के प्रबल विरोधी थे।

भक्त कबीर जी के लिए 'गुरु' परम तत्व है। द्विवेदी जी ने भक्त कबीर जी की गुरु-निष्ठा को बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। 'गुरु' न केवल ज्ञानदाता है, बल्कि आत्मा को ब्रह्म से जोड़ने वाला माध्यम भी है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'कबीर' केवल भक्त कबीर जी की जीवनी नहीं, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का विश्लेषण भी है। यह पुस्तक पाठक को न केवल भक्त कबीर जी के व्यक्तित्व से परिचित कराती है, बल्कि उसे आत्ममंथन के लिए भी प्रेरित करती है। इसमें द्विवेदी जी का गहन अध्ययन, सुंदर भाषा और विचारों की स्पष्टता देखने को मिलती है। यह पुस्तक हिन्दी साहित्य, दर्शन और भारतीय संस्कृति में रुचि रखने वालों के लिए अनमोल निधि है।

५. कबीर : एक पुनर्पाठ : डॉ. नामवर सिंह

हिंदी साहित्य के आलोचना-जगत में डॉ.

नामवर सिंह एक ऐसी सशक्त उपस्थिति हैं जिन्होंने साहित्य के अनेक पक्षों का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए विचारधारात्मक विमर्श को नया आयाम प्रदान किया है। उनकी पुस्तक 'कबीर : एक पुनर्पाठ' भक्त कबीर जी की रचनाओं और उनकी विचारधारा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझने का एक प्रयास है। यह पुस्तक भक्त कबीर जी के संपूर्ण साहित्यिक और दार्शनिक व्यक्तित्व का पुनर्विचार है। डॉ. नामवर सिंह इस कृति के माध्यम से भक्त कबीर जी को पुनर्परिभाषित करते हैं — एक ऐसे विचारक और रचनाकार के रूप में, जो मध्यकालीन भारत में सामाजिक क्रांति का अग्रदूत था और जिसका प्रभाव आज भी जीवित है।

डॉ. नामवर सिंह भक्त कबीर जी को महज़ आध्यात्मिक या धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं देखते, बल्कि उन्हें सामाजिक परिवर्तन और जनचेतना का वाहक भी मानते हैं। वे भक्त कबीर जी की रचनाओं को सामाजिक अन्याय, जातिगत भेदभाव और धार्मिक वर्चस्व के विरुद्ध एक क्रांतिकारी उद्घोषणा के रूप में देखते हैं।

६. कबीर और उनका युग : धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती की पुस्तक 'कबीर और उनका युग' भक्त कबीर जी के जीवन, उनके विचारों तथा उनके समय के सामाजिक-धार्मिक परिदृश्य का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक केवल एक जीवनी नहीं, बल्कि एक युग का सांस्कृतिक और वैचारिक दस्तावेज है।

धर्मवीर भारती भक्त कबीर जी को समझने के लिए पहले उनके युग को समझने की आवश्यकता पर बल देते हैं। १५वीं शताब्दी का भारत गहरे धार्मिक और सामाजिक संकटों से जूझ रहा था। एक ओर मुस्लिम शासकों की सत्ता थी, तो दूसरी ओर हिंदू समाज जातिगत शोषण, धार्मिक पाखंड और बाह्याडंबरों में उलझा हुआ था। आम जनजीवन अंधविश्वास, कर्मकांड और रूढ़ियों से घिरा हुआ था। ऐसे समय में भक्त कबीर जी का उदय हुआ, जिन्होंने इन पाखंडों और रूढ़ियों का विरोध करते हुए सहज और मानवीय धर्म की बात की। धर्मवीर भारती इस युगीन संकट का विस्तार से वर्णन करते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि भक्त कबीर जी का चिंतन आध्यात्मिकता ओत-प्रोत और सामाजिक सुधार की आकांक्षा से भी प्रेरित था।

धर्मवीर भारती बताते हैं कि भक्त कबीर जी ने निर्गुण भक्ति की परंपरा को आगे बढ़ाया, जिसमें ईश्वर को बिना रूप-रंग के, एक सार्वभौमिक सत्ता के रूप में देखा गया। भक्त कबीर जी का 'राम' कोई अवतारी पुरुष नहीं, बल्कि एक

निराकार, व्यापक चेतना है।

धर्मवीर भारती यह दिखाते हैं कि भक्त कबीर जी का उद्देश्य किसी धर्म विशेष की निंदा करना नहीं, बल्कि धर्म के नाम पर किए जा रहे अन्याय और शोषण का विरोध था। भक्त कबीर जी का धर्म मानवीयता का धर्म था। वे आत्मा की स्वतंत्रता और सत्य की खोज को सर्वोपरि मानते थे। उनका कहना था कि ईश्वर का वास केवल मानव-हृदय में है।

धर्मवीर भारती कहते हैं कि आज का समाज भी अनेक संकटों से जूझ रहा है—धार्मिक कट्टरता, जातीय भेदभाव, नैतिक पतन और सामाजिक विषमता। ऐसे समय में भक्त कबीर जी का विचार और उनका दर्शन हमें उचित मार्ग दिखाता है। भक्त कबीर जी की निर्भीकता, उनकी सच्चाई की खोज और उनका मानवीय दृष्टिकोण आज भी उतना ही ज़रूरी है जितना उनके समय में था।

७. कबीर का काव्य और दर्शन : डॉ. रामकुमार वर्मा

डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'कबीर का काव्य और दर्शन' में भक्त कबीर जी की वाणी, उनके काव्य-सौंदर्य और दार्शनिक दृष्टिकोण का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक कबीर-साहित्य के अनुशीलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जाती है।

डॉ. वर्मा के अनुसार, भक्त कबीर जी की वाणी भारतीय संत-परंपरा में एक अनूठा स्थान रखती है। उन्होंने भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के समन्वय से एक नई काव्यधारा प्रस्तुत की। उनकी वाणी में जहाँ एक ओर ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम है, वहीं दूसरी ओर अंधविश्वास, पाखंड एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध तीखा प्रहार भी है।

निष्कर्षत: भक्त कबीर जी भारतीय साहित्य और समाज की एक जीवंत परंपरा हैं। उनके संबंध में जो ग्रंथ हिंदी में उपलब्ध हैं, वे न केवल उनके जीवन और दर्शन को समझने के लिए आवश्यक हैं, बल्कि समाज और संस्कृति के गहन अध्ययन का माध्यम भी हैं।

उपरोक्त के अलावा हिंदी साहित्य जगत् में भक्त कबीर जी के जीवन-वृत्त पर आधारित प्राप्त पुस्तकों आदि की लंबी सूची है, जिनके रचयिताओं ने भक्त कबीर जी के जीवन व दर्शन को अपनी-अपनी बुद्धिमता के आधार पर व्याख्यायित करने का प्रयास किया है।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने पहलगाम में हुए हमले के पीड़ित परिवारों के साथ संवेदना प्रकट की

श्री अमृतसर साहिब : २३ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए हमले के दौरान मारे गए लोगों के परिवारों के साथ संवेदना प्रकट की। एडवोकेट धामी ने कहा कि इस अमानवीय कृत्य ने सामाजिक जीवन-मूल्यों को हानि पहुंचाई है। उन्होंने कहा कि मानवीय सम्बंध ऐसा नहीं सिखाते, बल्कि सभी को भाईचारे और सद्भावना का मार्ग दिखाते हैं। उन्होंने पीड़ित परिवारों के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए अरदास की कि भगवान हमले के दौरान बिछड़ी रूहों को अपने चरणों में निवास और परिवारों को ईश्वरीय आदेश मानने का बल प्रदान करें।

एडवोकेट धामी ने कनाडा के संघीय चुनाव में बड़ी संख्या में पंजाबियों और खासकर सिक्खों के जीतने पर बधाई दी

श्री अमृतसर साहिब : २९ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कनाडा के संघीय चुनाव में बड़ी संख्या में पंजाबी और खासकर सिक्ख नुमायंदों की जीत पर ख़ुशी प्रकट करते हुए उन्हें बधाई दी है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम और समूचे पंजाबियों के लिए यह बड़े फख़्र वाली बात है कि इन उम्मीदवारों ने जीत हासिल कर कनाडा की राजनीति में अपनी लीडरशिप साबित करते हुए पंजाबियों का सिर ऊँचा किया है।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि यह जीत पंजाबियों की संघर्षपूर्ण मेहनत, ईमानदारी और मानवीय सेवाओं का नतीजा है। उन्होंने कहा कि विदेशों में बस रहे पंजाबी एवं खासकर सिक्ख अपनी विरासती शिक्षा, नैतिकता और इतिहास के मार्गदर्शन में न केवल अपनी भाईचारक पहचान को बरकरार रख रहे हैं, बल्कि राजनैतिक व्यवस्था में भी प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने उम्मीद जताई कि चुने गए ये सिक्ख और पंजाबी सांसद अपने धार्मिक जीवन-मूल्यों पर पहरा देते हुए कनाडा में राजनैतिक तौर पर लोगों के विश्वास का प्रतिनिधित्व करेंगे।

एडवोकेट धामी ने कनाडा के साधारण चुनाव में उभरने वाली लिबरल पार्टी और उसके नेता मार्क कारनी को भी मुबारकबाद दी। उन्होंने कहा कि विजेता उम्मीदवार सामाजिक न्याय और हर वर्ग की भलाई के लिए काम करें, हम यही आशा

एडवोकेट धामी ने कश्मीर के पुंछ में स्थित गुरुद्वारा साहिब पर हुए हमले को दुखदायी करार दिया

श्री अमृतसर साहिब : ७ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने भारत-पाकिस्तान सरहद पर पैदा हुए तनाव के बाद कश्मीर के पुंछ इलाके में गुरुद्वारा साहिब पर किये गए हमले को दुखदायी करार दिया है। इसके साथ ही उन्होंने कश्मीर में हमले के दौरान मारे गए चार सिक्खों के प्रति भी गहरी संवेदना प्रकट की है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि इस पीड़ादायक घटना ने सिक्ख जगत को गहरे ज़ख़्म दिए हैं। एडवोकेट धामी ने हमले के दौरान मृतक सिक्खों को श्रद्धाँजलि भेंट करते हुए कामना की कि भगवान बिछड़ी रूहों को अपने चरणों में निवास प्रदान करें। उन्होंने कहा कि इस दुखदायी समय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पीड़ित परिवारों के साथ सहानुभूति प्रकट करती है।

भारत-पाकिस्तान के मध्य तनावपूर्ण हालात के मद्देनज़र शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सराय और स्कूल-कॉलेज लोक-रिहायश के लिए खोले

श्री अमृतसर साहिब : १० मई : भारत-पाकिस्तान के मध्य बने तनावपूर्ण हालात के मद्देनज़र सिक्ख कौम की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सरहदी इलाकों से पलायन कर रहे लोगों के रहने के लिए जहाँ गुरुद्वारा साहिबान में सराय देने की पहलकदमी की है, वहां अब संस्था के प्रबंधाधीन स्कूल-कॉलेज भी रिहायश के लिए खोल दिए गए हैं।

इस सम्बंध में जानकारी देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि ऐसे हालात के मद्देनज़र सरहदी इलाकों के लोगों के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंधाधीन गुरुद्वारा साहिबान में रहने के लिए सराय और लंगर का प्रबंध करने का फ़ैसला किया था, जिसमें विस्तार करते हुए अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंधाधीन स्कूलों और कॉलेजों में भी रिहायश के प्रबंध किये गए हैं।

एडवोकेट धामी ने कहा कि सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हमेशा ही संकटकाल में मानवता के साथ खड़ी है और ज़रूरतमंदों की हर संभव मदद के लिए तत्पर रही है। उन्होंने कहा कि अब भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंधाधीन संस्थाओं को ज़रूरतमंदों के लिए खोलने के आदेश जारी कर दिए गए हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे ज़रूरत पड़ने पर अपने निकटवर्ती गुरुद्वारा साहिबान या स्कूल-कॉलेजों में संपर्क स्थापित करें।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिक्षण प्रबंध को कुछ नेताओं द्वारा गलत बयानबाज़ी करके बदनाम करना निंदनीय

श्री अमृतसर साहिब : ९ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिक्षण प्रबंध के प्रति राजनैतिक नेताओं— बीबी जगीर कौर, स. सुरजीत सिंघ रक्खड़ा और स. परमिंदर सिंघ ढींडसा द्वारा की जा रही गुमराहकुन बयानबाज़ी की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण, मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण, कार्यकारी समिति के सदस्य स. परमजीत सिंघ खालसा तथा भाई अमरजीत सिंघ (चावला) ने इसे संस्था के अक्स को धुंधला करने वाली राजनीति करार दिया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों व अधिकारियों ने कहा कि बेशक शिक्षा का प्रबंध करना सरकारों की ज़िम्मेदारी होती है, परंतु शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अपना फ़र्ज़ समझते हुए १०० से अधिक शिक्षण संस्थाओं का प्रबंध सुचारू ढंग से चला रही है। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों द्वारा राजनैतिक लाभ के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिक्षण अदारों और प्रबंध को निशाना बनाया जा रहा है, जो सिक्ख संस्था को कमजोर करने की गहरी साजिश है।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के डायरेक्टोरेट ऑफ एजूकेशन को शिक्षण अदारों को सभ्यक ढंग के साथ चलाने के लिए २००७ में स्थापित किया गया था, जिसके नेतृत्व में समूह शिक्षण संस्थाओं में उल्लेखनीय कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि डायरेक्टोरेट ऑफ एजूकेशन के तत्कालीन डायरेक्टर डॉ. तेजिंदर कौर (धालीवाल) द्वारा अवकाश पर जाने के कारण तत्कालीन प्रधान बीबी जगीर कौर द्वारा डायरेक्टोरेट का अतिरिक्त प्रभार सचिव शिक्षा विभाग को दिया गया था। फिर डॉ. तेजिंदर कौर (धालीवाल) द्वारा त्याग-पत्र देने के बाद डायरेक्टोरेट का अतिरिक्त प्रभार प्रधान एडवोकेट धामी द्वारा सचिव शिक्षा विभाग को दिया गया, जिन्होंने दो असिस्टेंट डायरेक्टरों की सहायता से प्रिंसिपलों की सब-कमेटियाँ बना कर डायरेक्टोरेट के कार्य को कुशलतापूर्वक चलाया।

उन्होंने कहा कि सचिव शिक्षा विभाग द्वारा इस अतिरिक्त प्रभार का कोई भी अतिरिक्त वित्तीय लाभ न लेते हुए स्कूलों–कॉलजों की समस्याएँ दूर करने और ज़रूरतें पूरी करने के लिए यत्न किये गए हैं। उन्होंने कहा कि संस्थायों को कर्ज़-मुक्त करने के साथ-साथ संस्थाओं में इंफरास्ट्रक्चर देना और संस्थाओं को समयानुकूल बनाने के लिए स्कूलों-कॉलेजों में स्मार्ट क्लास रूम, आई. सी. टी. लैब्ज़, लैंगुएज़ लैब्ज़, छोटे बच्चों के लिए प्ले स्टेशन का प्रबंध करवाना आदि महत्वपूर्ण कार्य थे, जिन्हें गुरु की गोलक पर बिना बोझ डाले पूरा किया गया। इसके साथ ही विद्यार्थियों के लिए प्लेसमेंट सेल स्थापित कर रोज़गार मेलों की शुरूआत करना डायरेक्टोरेट का नया कदम था, जिसके अधीन विद्यार्थियों के लिए साक्षात्कार एवं और प्रशिक्षण का प्रबंध किया गया। मल्टीनेशनल कंपनियों के संचालकों के साथ बातचीत कर विद्यार्थियों के लिए रोजगार के रास्ते तलाशे गए। विद्यार्थियों में ज्ञानवर्धन के प्रति उत्साह पैदा करने के लिए कुइज़ प्रतियोगिता और कवीशरी प्रतियोगिता (गिआनु परचंडु प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और काव्य-ए-सिक्खी के नाम पर) आयोजित करवाई जा रही है, जिसमें विद्यार्थियों को लाखों रुपए इनाम के तौर पर दिए जा रहे हैं। विद्यार्थियों को साफ्ट स्किल्ज़ में निपुण करने के लिए निरंतर योग्य माहिरों के जरिए शिक्षित किया जा रहा है। यह उल्लेखनीय सुधार लाना ईमानदारी और तीव्र कार्यशैली का ही नमूना है।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी के नेतृत्व में संस्था ने कॉलेजों में रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों की शुरूआत की और विद्यार्थियों को उत्साहित किया गया, जिससे अब हज़ारों विद्यार्थी इस योजना से लाभ उठा रहे हैं। इसके अलावा कई अन्य नीतियों को भी वजूद में लाया गया, जिसके अधीन अध्यापकों की वर्कशाप, ओरिएन्टेशन और एफ़डीपी प्रोगराम आयोजित करवाना और शोध-कार्यों को उत्साहित करने के लिए इंटरनेशनल सेमिनार तथा कान्फ्रेंस आयोजित करवाना डायरेक्टोरेट का प्रमुख कार्य है। सिक्ख विद्यार्थियों को उच्च प्रशासनिक पदों पर पहुँचाने के लिए 'निश्चय सिविल सरविसिज' और 'निश्चय जुडिशियल अकादमी' की शुरूआत की गई। विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा के रास्ते विदेशों तक खोलने के लिए विदेशी संस्थायों के साथ समझौते किए गए। उन्होंने कहा कि पंजाब में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिक्षण अदारे जिस स्तर पर आज सिक्खी सिद्धांतों के अनुसार कार्य कर रहे हैं, उनके परिणाम से चिंतित

होकर विरोधियों द्वारा हमारी संस्थाओं को आज नहीं तो कल निशाने और लेना ही था, इसमें कोई दो राय नहीं। ये शैक्षिक अदारे दुनियावी शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को गुरु साहिबान के सिद्धांतों के साथ जोड़ने का कार्य भी निरंतर कर रहे हैं। बच्चों को गुरबाणी-कीर्तन से लेकर विज्ञान तक की शिक्षा अत्याधुनिक ढंग से दी जा रही है। उन्होंने सिक्ख संगत से अपील की कि शिक्षण प्रबंधों को बेहतर बनाने के लिए जहाँ डायरेक्टोरेट की टीम सेवा-भावना के साथ ज़िम्मेदारी निभा रही है वहाँ आप भी अपनी ज़िम्मेदारी निभाते हुए, उचित सुझाव देने की मंशा के साथ आगे आएं और संस्था को कमजोर करने की ताकतों से सचेत रहें।

सिंघ साहिब ज्ञानी मोहन सिंघ के निधन पर एडवोकेट धामी द्वारा शोक व्यक्त

श्री अमृतसर साहिब : ११ मई : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के भूतपूर्व हेड ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी मोहन सिंघ के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि सिंघ साहिब ज्ञानी मोहण सिंघ ने लंबा समय सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में सेवा निभाई। उन्होंने कहा कि ज्ञानी मोहण सिंघ सिद्धांतवादी पुरुष थे, जो हमेशा गुरु-घर को समर्पित रहे। उन्होंने अपनी निजी जायदाद भी श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब के नाम कर दी थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि ऐसी शख्सियत का निधन पूरे विश्व की संगत के लिए बड़ी हानि है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। एडवोकेट धामी ने दरवेश पुरुष सिंघ साहिब ज्ञानी मोहन सिंघ को श्रद्धा-सुमन भेंट करते हुए परिवार के साथ हमदर्दी प्रकट की।

इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण, महासचिव स. शेर सिंघ मंडवाला, मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, सचिव स. प्रताप सिंघ और श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा ने भी ज्ञानी मोहन सिंघ के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए परिवार के साथ सहानुभूति का इज़हार किया।

माता जूठी पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे ॥
आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥ १ ॥
कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥
जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥
इंद्री की जूठि उतरसि नाही ब्रहम अगनि के लूठे ॥ २ ॥
अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ॥
जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ ॥ ३ ॥
गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥
कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥ ४ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९५)

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

June 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा साहिब भक्त कबीर जी, मगहर
ज़िला संत कबीर नगर (उत्तर प्रदेश)

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-6-2025